अनबूझे सपने

अनबूझे सपने

(उपन्यास)

लेखक

उमाशंकर

भारतीय ग्रन्थ निकेतन

१३३ लाजपतराय मार्केट, दिल्ली-६

उमाशंकर, 1928-
अनबूझे सपने. दिल्ली, आरती प्रकाशन; मुख्य वितरक :
भारतीय ग्रन्थ निकेतन, दिल्ली, १९६७.

२२१ पृ. १९ सेंमी.

१. आख्या.

891.433 0152,3N28 भा. ग्रं. नि. १५

प्रकाशक : © आरती प्रकाशन
कृष्णनगर
दिल्ली
आवरण शिल्पी : पाल बन्धु
प्रथम संस्करण : १९६७
मूल्य : ५·५०
मुद्रक : राष्ट्रभारती प्रेस,
कूचा चेलान, दिल्ली-६

Anbuje Sapane by Umashankar (Novel) Rs 5.50

आदरणीय भाई श्री रामानन्द 'दोषी' को

सप्रेम—

कुछ शब्द

'आरम्भ' और 'अन्त'—इन दो का मनुष्य के जीवन मे विशेष स्थान है, नही, अद्वितीय स्थान है। उँगलियो पर गिने जाने वाले ऐसे थोड़े भाग्यशाली है जिनका 'आरम्भ' उल्लासपूर्ण सुखो मे पल्लवित होता है और 'अन्त' संसार की समस्त चिंताओं से मुक्त, शान्ति मे समाप्ति का आनन्द लूटता है। इस उपन्यास के नायक और नायिका भी उन्ही सौभाग्यशालियो में दो है। इनका भी 'आरम्भ' और 'अन्त' इसी प्रकार का है।

किन्तु पाठकों से निवेदन है कि वे इनके 'मध्य' का अवलोकन अवश्य करे। सच पूछिए तो मजा उसी में है। उसी मे मृगतृष्णा जैसा सम्मोहन है और मानवी चरित्र का वास्तविक दिग्दर्शन भी। मुझे विश्वास है आपको यह सब कुछ पसन्द आएगा और मेरे कथासार के प्रति विशेष रूप से सोचने के लिए विवश करेगा।

आशा है आप अपनी विवशता से अवगत कराकर मेरे निवेदन का मूल्याकन करेंगे।

धन्यवाद !

खास बाजार
कानपुर

उमाशंकर

१

बूदें गिरने लगी थी। जब अमरनाथ ने रिक्शे पर बैठते हुये उसे स्टेशन पर चलने के लिये कहा, "ज़रा जल्दी करना भाई। गाडी का समय हो गया है।" उसने अपने पैरो को उठाकर गद्दी पर रख लिया।

"अभी पहुँचा साहब। तूफान से जाना है न ?"

"हाँ।"

"घनऽऽऽ। घनऽऽऽ ऽ घंटी बजाता रिक्शे वाला उड़ चला।

वास्तव मे, अनुमान से पहले अमरनाथ स्टेशन पर आ पहुँचा। रिक्शेवाले को मुंह माँगे पैसे दिये और जल्दी-जल्दी सीढ़ियो पर चढ़ने लगा। उसके बाँये कधे मे बिस्तर-बन्द लटका हुआ था और दाहिने हाथ में एटैंची। गाड़ी आ चुकी थी। प्लेटफार्म पर भाग-दौड़ मची हुई थी। संयोग से सामने वाला डब्बा खाली नजर आया। उसने खिड़की से सामान अन्दर डाल दिया। खिड़की के समीप बैठी एक युवती ने तनिक मुंह बनाया, और ओठो मे बुदबुदाती हुई दूसरी ओर देखने लगी।

अमरनाथ डब्बे में आया। एटैंची और बिस्तरबन्द ऊपर रखे, और उस युवती से नम्र शब्दो मे बोला, "मैं अपनी गलती के लिए लज्जित हूं। शीघ्रता मे ऐसा करना पड़ा था।" उसने गर्दन घुमाकर देखा, "यहाँ कोई बैठा हुआ तो नही है ?" उसका मतलब सामने वाली बेंच से था।

युवती ने कोई उत्तर नहीं दिया, "किन्तु उसके बगल मे बैठी दूसरी युवती बोल पड़ी, "नहीं, खाली है।"

अमरनाथ बैठ गया।

गाड़ी ने सीटी दी और रेंग चली। सामने से दो-एक सज्जन दौड़ते हुये दिखलाई पड़े। अमरनाथ ने खिड़की से हाथ बढ़ाकर कुलियों से सामान ले लिया। आगन्तुक सुविधापूर्वक गाड़ी में चढ आये। उन लोगो ने सहायता के लिये कृतज्ञता व्यक्त की। अमरनाथ ने मुसकरा कर 'धन्यवाद' कह दिया।

गाडी प्लेटफार्म को छोडती हुई अपनी गति का परिचय देने लगी। यह आगरा होती हुई दिल्ली को जाने वाली गाडी थी—तूफान। अमरनाथ आगरे जा रहा था, अपने बहनोई के पास। उसके बहनोई श्री रामेश्वर दयाल वहाँ जज थे, जो दो-तीन मास पूर्व झाँसी से बदलकर आये थे। अमरनाथ के लिये 'एक पंथ दुई काज' वाली बात थी। बहन-बहनोई से भेंट भी होगी और मुगल सम्राटो की राजधानी का निरीक्षण भी होगा, जिसके वैभव का कभी सारे-विश्व मे डका बजा हुआ था। अभी तक उसने आगरा नही देखा था।

आकाश मे बादलों का घनत्व बढ गया था। रह-रह कर बिजली भी चमकने लगी थी। पानी तेज़ी से आने वाला था। अमरनाथ ने खिड़की का शीशा गिरा दिया। उधर वाली खिडकी अभी खुली थी। सम्भवत. खिडकी के समीप बैठी हुई युवती को फुहारें विशेष प्रिय थी। इस समय वह फिल्मफेयर देखने मे तल्लीन थी। इस बीच अमरनाथ की सरसरी दृष्टि ने जो अनुमान लगाया था उसके आधार पर एक विवाहिता थी और दूसरी कुँवारी। शक्ल-सूरत दोनो की अच्छी थी। शरीर स्वस्थ और आकर्षक था। रग साफ था। एक की उम्र पच्चीस-छब्बीस की होगी तो दूसरी की इक्कीस-बाईस की।

अमरनाथ ने एटैची खोली। एक उपन्यास निकाला और उसके साथ मे 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' भी। ऊपर बादल टकराये। बिजली तड़-तडाती हुई नभ मण्डल मे अग्नि प्रज्ज्वलित करके अन्तंध्यान हो गई।

"खिडकी बन्द करो भाभी। पानी जोरों का आने वाला है।" बगल वाली बोली।

भाभी ने बाहर की ओर देखा और उठकर खिड़की बन्द कर दिया। पानी की बड़ी-बड़ी बूदें शीशे पर प्रहार करने लगी—पट-पट-पट-पट ऽ ऽ पट-पट-पट-पट ऽ ऽ, पट ऽ पट ऽ ट ऽ ऽ पट-पट।

अमरनाथ उपन्यास के पन्ने उलटने लगा। आरम्भ के चार-छः पन्ने उलटने के उपरान्त उसने बीच के पन्नों को उलटकर दो-चार पक्तियाँ इधर-उधर की देखी। तत्पश्चात् अन्तिम पृष्ठ पढने लगा। पुनः इधर-उधर पन्ने उलटे, और पुस्तक के आवरण पर लेखक का परिचय देखने लगा। बीच-बीच में, वह लेख के चित्र को भी देख लेता था। परिचय समाप्त होने पर पुनः पन्ने उलटे। इस प्रकार काफी देर तक पुस्तक के साथ क्रीड़ा करते रहने के उपरान्त, उसने उसे रख दिया और 'हिन्दुस्तान' उठाकर पढ़ने लगा।

कुमारी ने बाधा उत्पन्न की, "क्या मैं इसे देख सकती हूँ ?" उसका सकेत उपन्यास को था।

'अवश्य' अमरनाथ ने उपन्यास थमा दिया और पुनः पत्रिका पढ़ने लगा।

युवती ने उपन्यास खोला और फ्लैप छपे चित्र को देखकर तनिक चौंकी। उसने सिर उठाकर अमरनाथ को देखा। दोनों सूरतें मिल रही थी। उसने दोबारा चित्र देखा। शक की कोई गुजाइश नही रह गई। चित्र के नीचे लेखक के परिचय को पढने के उपरान्त उसने उपन्यास पढ़ना शुरू कर दिया।

इटावा आ गया। उधर बारिश बिल्कुल नही थी। अमरनाथ ने खिड़की से इधर-उधर देखा। जिसकी तलाश थी वह दिखलाई नही पड़ा। वह नीचे उतरा और आगे बढ़कर एक कुली से बोला, "क्यों जी, भिन्ड वाले पेड़े यहाँ नही मिलते है ?"

"मिलते हैं आगे बढ़ जाईये।" वह दूसरी तरफ मुड़ गया।

डब्बे मे अविवाहिता, विवाहिता से कह रही थी, "इस उपन्यास के लेखक भी यही सज्जन हैं।"

"क्या ?"

"यह फोटो देखो ।" उसने पन्ना उलट कर दिखा दिया ।

विवाहिता विस्फारित नेत्रों से देखती रह गई, "नावेल कैसा है ?"

"स्टार्ट तो अच्छा है । यह इनका चौथा उपन्यास है । एक पर गवर्मेन्ट से प्राइज भी मिल चुका है । तुम्हारा व्यवहार कभी-कभी बेतुका हो जाया करता है भाभी । कानपुर स्टेशन पर तुमने···।" वह कहती-कहती चुप हो गई । अमरनाथ डब्बे में आ गया था ।

गार्ड ने सीटी दी । गाड़ी धक-धक करती हुई चल पड़ी ।

सब अपने पढ़ने में तल्लीन हो गये । अमरनाथ जब-तब दबी नजरों से, उस युवती को देख लेता था । उसकी आँखें अच्छी थीं; ओठ पतले थे; गाल सुर्ख थे, भौंहें पतली थी और शरीर के अग भरे हुये और सुडौल थे । तात्पर्य यह कि वह बहुत सुन्दरी नहीं; तो साधारण सुन्दरी अवश्य कही जा सकती थी । स्वभाव से भी उसके अच्छे होने का अनुमान लग रहा था ।

गाड़ी स्टेशनो पर रुकती अपनी मंजिल की ओर बढ़ती रही और अन्त मे उसकी नही, किन्तु अमरनाथ की मंजिल आ ही गई । दूर संगमरमर का ताज—अनोखी प्रीति का अनोखा उदाहरण—सामने चमकता दृष्टिगोचर होने लगा । अमरनाथ टकटकी लगा कर देखता रहा जब तक वह आँखों से ओझल नही हो गया उसने बिस्तर-बन्द और एटैची को ऊपर से उतार कर नीचे रख लिया । युवती ने किताब बन्द करते हुये उसकी ओर बढ़ाया, "बहुत अच्छा लिखते है आप । यह पुस्तक आगरे में मिल जायेगी न ? कुछ पन्ने बाकी रह गये है ।"

"जी हाँ, मिल जाना चाहिये । अभी-अभी प्रकाशित हुई है ।"

"आप रहने वाले आगरे के हैं ?"

"जी नही, बनारस के पास का । पहली बार आगरा जा रहा हूँ । सूर्यनगर जाना है ।"

"सूर्यनगर जाना है ?" युवती ने आश्चर्य व्यक्त किया, "किस

के यहाँ ?"

"श्री रामेश्वर दयाल, सिविल जज। अभी कुछ मास पूर्व झाँसी से बदल कर आये हैं।"

"हम लोग उन्हें जानते हैं। मेरे भाई साहब प्रैक्टिस करते हैं। यह मेरी भाभी हैं।"

अमरनाथ ने हाथ जोड़ लिये। उन्होने भी हाथ जोड़े, "हम लोग भी वहीं पास मे रहते हैं—बीमानगर मे।"

सिटी स्टेशन आ गया! अमरनाथ खड़ा हो गया।

"यहाँ नही।" भाभी का कहना था, "राजामडी पर उतरना होगा। बैठिये। यहाँ से सूर्यनगर दूर पड़ता है।"

अमरनाथ बैठ गया।

राजा की मंडी स्टेशन पर दो रिक्शे हुए। एक पर अमरनाथ और दूसरे पर वे दोनो। दोनो रिक्शे साथ-साथ चले। जेल के सामने से होते हुये रिक्शे अभी थोड़ी ही दूर आ पाये होगे कि युवती ने अमरनाथ के रिक्शे वाले को रोकने का संकेत किया। रिक्शा रुक गया। उसने रिक्शे वाले को जज साहब का पता समझाया और फिर अमरनाथ से कहा, "यही बीमानगर है।" उसने उगुली से संकेत किया, "बस, उस सड़क से दाहिनी ओर मुड़ते ही पहला बंगला मेरा है। किसी दिन आने का कष्ट करे। अभी तो आठ-दस दिन रहोगे ही।"

"आशा ऐसी ही है। आऊँगा। आपके भाई साहब···।"

"श्री ओकार प्रसाद।" उसने नमस्ते किया।

"इसे लेती जाइये।" अमरनाथ ने उपन्यास उसकी ओर बढ़ा दिया, "अभी कुछ पढ़ने को शेष है न ?"

उपन्यास लेते हुए उसने पुनः हाथ जोड़ लिये।

२

अमरनाथ की शिक्षा-दीक्षा इलाहाबाद में हुई थी। रहने वाला वह बनारस के पास का था किन्तु परिवार वाले कानपुर में रहने लगे थे नौकरी के सिलसिले मे। दो वर्ष पूर्व वह भी एक अच्छी नौकरी में था पर स्वभाव से लड़ाकू और खुशामद पसन्द न होने के कारण, नौकरी से हाथ धोना पडा था। फिर उसने दूसरी नौकरियो के लिये, महीनों दफ्तरों और इम्पलायमेन्ट एक्सचेंज के चक्कर लगाये, किन्तु नौकरी न मिल सकी। बेकारी से बेगार भली के विचार से, उसने दो-तीन ट्यूशन कर लिये, और संध्या समय दो-एक सेठो के यहा टाइप का भी कार्य करने लगा। लगभग सौ-डेढ सौ की आमदनी होने लगी। गाड़ी चल डगरी। मस्तिष्क की उलझन दूर हुई। वह परिवार पर बोझ बनकर नही रहना चाहता था। उसे यह बात स्वय खटकती थी। यद्यपि परिवार वालों की तरफ से ऐसी कोई बात नही थी। कारण, अविवाहित होने के नाते उस पर खरचा ही क्या हो सकता था ?

बचपने से साहित्य के प्रति कुछ रुचि रखने के कारण वह कुछ लिखने पढ़ने मे भी दिलचस्पी रखता था। उसने कालेज जीवन मे कुछ तुकबन्दियाँ भी की थीं, और छोटी-मोटी पत्रिकाओ मे कहानियाँ भी छपवाई थी, परन्तु पढाई के बाद, नौकरी में जाते ही, यह शौक समाप्त हो गया था। अब पुनः जब लिखने-पढ़ने वाले वातावरण मे डोलना पड़ा, तो हृदय के किसी कोने में दबी हुई पुरानी अभिलाषा अंकुरित हो उठी। उसने कुछ लिखने का इरादा बनाया और सौभाग्य से वह शीघ्र कार्यरूप मे परिणित भी हो गया। डेढ़-डेढ़ और दो-दो बजे रात तक लिखने का

कार्यक्रम चलने लगा, और अन्त मे एक तीन सौ पृष्ठो का उपन्यास तैयार हो ही तो गया। पांडुलिपि दोबारा सुधारी गई, और तब अन्त में साफ की गई। फिर दो-चार मित्रो को दिखलाई गई। सभी ने पुस्तक की सराहना की और प्रकाशको से प्रकाशनार्थ वार्ता करने की सलाह दी।

बनारस, दिल्ली और बम्बई के प्रकाशकों को अमरनाथ ने पत्र लिखना आरम्भ किया। कुछ ने उत्तर दिया, कुछ ने छापने से असमर्थता प्रगट की और दो-एक ने पांडुलिपि मंगा कर भी वापस लौटा दी। सम्भवतः कृति इस योग्य नही थी कि उसे छापा जा सके। अमरनाथ का हृदय बैठ गया, उत्साह मे शिथिलता आ गई और आशाये घूमिल पड़ गईं। लेकिन उसके मित्रो ने अन्य दूसरे प्रकाशकों को लिखने के लिये कहा। पुनः पत्र लिखे गये।

सर्वप्रथम एक दिल्ली के प्रकाशक का उत्तर आया। उसने अव-लोकनार्थ पांडुलिपि भेजने को लिखा था। अमरनाथ ने लौटती डाक से पांडुलिपि भेज दी। लगभग पन्द्रह दिनो बाद, प्रकाशक का उत्तर आया। वह दस प्रतिशत रायल्टी पर उपन्यास छापने को तैयार था। अग्रिम कुछ नही दे सकता था। अगर शर्त मंजूर हो तो वह अनुबन्ध-पत्र भेज सकता था। अमरनाथ खुशी से उछल पड़ा। पैसा भी मिलेगा—इसकी तो उसने कभी कल्पना भी नही की थी। वह तो मुफ्त मे छपवाने को तैयार बैठा था। उसने अविलम्ब मित्रो को खुशखबरी सुनाई और अनुबन्ध-पत्र भेजने के लिये प्रकाशक को पत्र लिख दिया।

अब उपन्यास के छपकर आने की प्रतीक्षा होने लगी। सौभाग्य से तीन मास के भीतर ही पुस्तक प्रकाशित हो गई और अनुबन्ध के अनुसार उपन्यास की बारह प्रतियां अमरनाथ के पास भी आ गई। इन तीन महीनों मे अमरनाथ ने प्रकाशक को कितने पत्र लिखे थे और किस बेसब्री से किताब के आने की इन्तजारी की थी—इसे केवल दो प्रकार के मनुष्य ही समझ सकते है, इश्क का मारा हुआ अथवा आकाक्षाओं का

दुलराया हुआ। हफ्तो अमरनाथ उपन्यास हाथ में लिये घूमता रहा—अपने मिलने वालो को दिखाता रहा। जिन्हें भेंट करना था उन्हें भेंट भी करता रहा। पुस्तकें समाप्त हो जाने पर उसने अपने पैसों से बीस प्रतियाँ और मंगाई। इसी बीच सरकार द्वारा पुरस्कार हेतु पुस्तक भेजने की तिथि की घोषणा हुई। अमरनाथ ने भी अपनी पुस्तक भेज दी। निश्चित समय के अनुसार जब पुरस्कृत लेखकों की सूची समाचार-पत्रो मे निकली, तो उसमे एक नाम अमरनाथ का भी था। फिर क्या था? अमरनाथ के हल्ले हो गये। बधाइयों पर बधाइयाँ मिलने लगी। कई दिनो तक मित्रो, तथा नगर के विभिन्न संस्थाओं द्वारा स्वागत-सम्मान होते रहे। गुदड़ी का लाल शो-केस मे आ गया था।

इसके बाद उसने दूसरा उपन्यास लिखा। फिर तीसरा और चौथा भी लिख डाला। प्रकाशको के बीच उसकी माँग बढ़ गई। अब उसकी सौदेबाजी वाली स्थिति आ गई थी। उधर पाठको और साहित्यिक क्षेत्र मे भी, थोड़ी-बहुत चर्चा होने लगी थी। अन्य शहरो से पाठकों के पत्र आने लगे थे। भावनायें तरंगित हो उठीं थी। उत्साह बढ़ गया था। भविष्य, आशाओं के पखों पर उड़ान भरने लगा था। ख्याति की—अमरत्व की, लालसा प्रबल हो उठी थी। अपने और अपने जीवन के सम्बन्ध में दृष्टिकोण बदल गया था। उसने सेठो की नौकरियाँ छोड़ दी और ट्यूशन भी कम कर दिये। अब उसका अधिक से अधिक समय लेखन कार्य मे लगने लगा। वह लेखक बन गया।

× × ×

अमरनाथ को आगरे आये लगभग दस दिन हो चुके थे लेकिन लगता था जैसे कल-परसो ही आना हुआ हो। बहन, बहनोई और उनके तीन छोटे-छोटे बच्चों के परिवार मे, एक नया वातावरण फैल गया था। बहन को भाई मिला था, बहनोई को साला और बच्चो को मामा, जो कभी घोडा बनकर दुलकी चाल से उन्हे सारे कमरो मे घुमाता रहता था तो कभी बाजार-हाट की सैर कराता था। सभी खुश थे, और सभी

उससे चिपटे हुए थे। कोई उसे छेड़ना नहीं चाहता था। अमरनाथ भी अपने अन्य सम्बन्धियों की अपेक्षा, रामेश्वरदयाल से अधिक स्नेह रखता था। कारण, इस परिवार में उसे घर जैसा स्नेह मिलता था, रिश्तेदारों जैसा नही।

यद्यपि अमरनाथ ने कई वार ओंकारप्रसाद के घर जाने का इरादा वताया था लेकिन किसी न किसी कारणवश जाना न हो सका था। उसका उपन्यास वापस आ गया था और पुनः आने का निमंत्रण भी मिल चुका था किन्तु फिर भी वह जा नही सका था। शाम को वहन-वहनोई के साथ सिनेमाओं तथा इधर-उधर की मटरगश्तियो से ही अवकाश नही मिल सका था और दिन के समय वह जाना ठीक नही समझता था। खैर, एक शाम, जैसे-तैसे किसी वहाने, अमरनाथ ने अवसर निकाला और वीमानगर जा पहुँचा। वकील साहव का वॅगला आसानी से मिल गया।

छोटा-सा वॅगला, जिसके आगे दीवारो से घिरा हुआ छोटा सहन था। साधारण रूप से कुछ फूलो के पौधे भी लगे थे और दस-पाँच गमले भी इधर-उधर रखे थे। अमरनाथ ने सहन का फाटक खोलकर प्रवेश ही किया था कि सामने वरामदे मे वह दिखलाई पड़ गई। गुलावी रंग की धोती और उसी रंग के व्लाउज ने उसके रूप को कुछ नये आकर्षणों से उभार दिया था। उस दिन की अपेक्षा आज वह अधिक सुन्दर दिख रही थी। उसने हाथ जोड़े, "मैं तो निराश हो चुकी थी, लेकिन सौभाग्य है दर्शन हो गये।"

अमरनाथ भी हाथ जोड़ता ऊपर वरामदे में आ गया।

"वैठिये।" वह वोली।

अमरनाथ वैठ गया।

"अभी आई।" कहकर वह अन्दर चली गई। भाभी से वताया, फिर कमरे में जाकर शीशे में शकल देखी, वालो पर जल्दी-जल्दी दो-चार वार कंघे चलाये, और वाहर आ गई। अमरनाथ के सामने वाली

कुरसी पर बैठती हुई बोली, "शायद यहाँ आने की याद नही रह गई थी ? है न ऐसी बात ? उधर मैंने कई दिनों तक आपकी प्रतीक्षा की थी।"

"मैं जरूर आया होता लेकिन शाम को जज साहब अपने तकल्लुफों मे ऐसा उलझा देते है कि मैं आपसे क्या बताऊँ ? मैं अपने वादे पर न आने के लिये लज्जित हूँ। वैसे दिन मे आ सकता था मगर बेकार था। आप कालेज जाती होंगी ?"

"जी नही। मैं कालेज नही जाती। प्राइवेट देने का विचार है। माँ की डेथ के कारण, भाभी अकेले घर मे ऊबती हैं।"

"कब डेथ हुई थी उनकी ?"

"पीछे, जाड़ो मे।"

"अवस्था काफी होगी ?"

"जी हाँ, साठ-पैंसठ की।"

"आपका कौन-सा ईयर है ?"

"एम० ए० प्रीवियस।"

"हिन्दी मे ?"

"नहीं, सोसियोलॉजी मे।"

"वाह, तब तो कमाल है !"

"क्यो ?"

"विषय समाजशास्त्र का और रुचि हिन्दी से ?"

तब तक अन्दर से आवाज आई, "प्रतिभा, प्रतिभा।"

वह उठकर अन्दर चली गई और ट्रे में चाय लेकर लौटी। पीछे-पीछे उसकी भाभी थी, तश्तरियों में मिठाइयाँ और नमकीन लिये हुए। अमरनाथ ने खड़े होते हुए नमस्ते किया।

प्रतिभा की भाभी अधरो पर मुसकान बिखेरती हुई कह उठी, "चलिये, देर से आये पर आये तो। बैठिये। घर का पता तो नहीं भूल गये थे ? लेखकों का कोई ठिकाना नही।"

अमरनाथ भी मुसकराने लगा । उसने कोई उत्तर नही दिया ।

प्रतिभा चाय बनाने लगी । अमरनाथ ने पूछा, "वकील साहब नहीं दिखलाई पड़ रहे है ।"

"नौकर को लेकर मार्केट गये हुए है । आते ही होगे । लीजिये, इसे तो शुरु कीजिये ।" श्रीमती ने तश्तरियो को तनिक और आगे कर दिया ।

"यह तो तकल्लुफ हो गया । मैं अभी-अभी नाशता करके चला आ रहा हूँ ।"

"खैर, थोड़ा ही सही । उठाइये ।"

"तुमने भाभी," प्रतिभा बोल पडी, "थोडा खूब कह दिया । इसमे भी थोडा ।" उसने अमरनाथ के सामने चाय की प्याली रख दी ।

"मेरे कहने पर विश्वास कीजिये । मैं खाने-पीने के मामलो मे बडा साफ हूँ । बिल्कुल इच्छा नही है । आप लोगो की जबान न खाली जाये, इसलिये चाय पी लूंगा ।"

"मेरी जबान तो खाली रहेगी ही अमरनाथ जी ।"

"क्यो ?"

चाय प्रतिभा के हिस्से में पडी है । मेरे मे तो नमकीन और मिठाइयाँ आती है ।" वह मुसकराने लगी ।

अमरनाथ को विवश हो खाना पड़ा ।

प्रतिभा ने बातो का सिलसिला बदला, "आजकल भी आप कोई नावेल लिख रहे होगे ?"

"अभी तो नही, लेकिन यहाँ से लौटकर जाने पर आरम्भ करूँगा । जो उपन्यास आपने पढा है, वह अभी हाल मे ही प्रकाशित हुआ है ।"

"बहुत अच्छा लिखा है । स्पेशली, उषा और उस अपाहिज की मनोदशा का चित्रण साकार हो उठा है ।"

श्रीमती ने पूछा, "आप की बहिन जी अच्छी तरह हैं ?"

"जी हाँ ।"

"बच्चे कितने हैं ?"

"एक लड़की और दो लड़के। लड़की सबसे बड़ी है—छे-सात साल की।"

"अभी," प्रतिभा पूछ बैठी, "आप कब तक रूक रहे है ?"

"अगले इतवार तक। आज शायद मंगल है ?"

"जी।"

अमरनाथ खड़ा हो गया, "तो आप लोग किस दिन आ रही है ?"

"अभी एक बार आपको और आना होगा। तब हम लोग चलेंगे।" प्रतिभा का कहना था।

"क्यो ?"

"यह उसी दिन बताया जायेगा जिस दिन आप आयेंगे। आप हमारे भी तो मेहमान हैं।"

"वह तो हैं, लेकिन···।"

"परसो हम लोग फिर आपकी प्रतीक्षा करेंगे। रात में खाना भी यही खाना होगा।"

अमरनाथ हसता हुआ बरामदे से बाहर निकला, "यह बात खूब रही।" उसने हाथ जोड़े और फाटक की ओर बढ चला।

प्रतिभा फाटक तक आई। अमरनाथ विदा होने के लिये ठिठका। प्रतिभा की हथेलियाँ जुडी, "परसो मैं इन्तजार करूँगी। आना न आना आप की मरजी पर है।"

अमरनाथ 'नमस्ते' कहता हुआ मुड़ गया।

३

परसो के दिन अर्थात वृहस्पतिवार को अमरनाथ संध्या समय प्रतिभा के घर पहुँचा । वास्तव मे वह प्रतीक्षा कर रही थी । देखते ही कुरसी से उठ खड़ी हुई और स्वागतार्थ वरामदे से नीचे आई । मुसकान की हलकी रेखाएं अधरो पर फैल गई थी, और सुन्दर-सा मुखड़ा विकसित पुष्प की भाँति, वरवस अमरनाथ की आँखो को अपनी ओर आकृष्ट करने मे समर्थ हो उठा था । अमरनाथ नमस्ते करता हुआ प्रतिभा को देखने लग गया । आज उसमे और अधिक सम्मोहन था । वस्त्रो और केशो पर विशेप साज-सज्जा थी पर थी सादगी लिए हुए ।

"मैं आपकी ही प्रतीक्षा कर रही थी ।" वह वोली, "आज मुझे विश्वास था कि आप अवश्य आएँगे ।"

"क्यों, ऐसा विश्वास आपको कैसे हो गया ?" दोनो वरामदे में आमने-सामने वैठ गए ।

"इसलिए कि उस दिन जाते समय आपने नाही कहा था न ।" उसने कंधे से खिसके हुए पल्ले को खीच कर ठीक कर लिया ।

"आपका तर्क अकाट्य और प्रशंसनीय है । कभी मैं भी इसका सदुपयोग करूँगा ।"

प्रतिभा चुप रही ।

"जरा फाउनटेनपेन मगवाइए ।"

प्रतिभा स्वय उठकर ड्राइंग-रूम से ले आई । वरामदे से लगा हुआ वाईं ओर ड्राइग-रूम था । रूमाल में लिपटी हुई किताव को निकाल कर अमरनाथ ने लिखा, "अनायास यात्रा मे मिलने वाली अध्ययनशीलता

की धनी कुमारी प्रतिभा जी को सप्रेम।" और उसके नीचे हस्ताक्षर कर दिए। "यह मेरा नम्बर टू नावेल है।" उसने थमा दिया।

"धन्यवाद।" पुस्तक लेती हुई प्रतिभा उसे उलट-पुलट कर देखने लगी, "नाम बड़ा आकर्षक है। कवर भी सुन्दर बना है।" वह पुन. पन्ने उलटने लगी।

प्रतिभा के भाई और भाभी अन्दर से बाहर आए। अमरनाथ से हाथ मिलाते हुए ओंकारप्रसाद ने कहा, "उस दिन के लिए मैं माफी चाहूंगा। बाजार से एक वकील साहब से कुछ ऐसी बातें होने लगीं कि समय का ध्यान ही न रहा।" दोनों बैठ गए, "आपकी बहन जी ठीक हैं ?"

"जी हां।"

'जज साहब भी बड़े कायदे के इन्सान हैं। बाद मे उनकी बडी तारीफ है। किसी को नाखुश भी नही होने देते और कानून से बाहर भी नहीं जाते। बड़ी अच्छी समझ है। इसके पहले शायद झाँसी में मुन्सिफ सिटी थे ?"

"जी हां।"

ओंकार प्रसाद ने पत्नी की ओर देखा, "क्या आज चाय के लिए ज्यादा इन्तजारी मे बैठना होगा ?"

"आप लोगो के पेशे में यही तो बुराई है। इन्तजार करना जानते ही नही। अभी आकर बैठे हैं और…।"

"क्यो झूठ बोलती हैं हुजूर। आपकी इन्तजार मे तो सारी उम्र गुजार दी है और फिर भी शिकायत।"

सब हंसने लगे।

नौकर चाय ले आया। साथ में अन्य सामान भी था। प्रतिभा चाय बनाने लगी।

विपयान्तर हुआ, "आप तो कानपुर मे ही रहते हैं ?"

"हां।"

"वहाँ किसी डिपार्टमेन्ट मे···।"

"नही। मैं कोई सर्विस नही करता।"

"सिर्फ लिखना ?"

"सिर्फ।"

"लेकिन लिखने से क्या इतनी इनकम हो जाती है कि पूरा परिवार चल सके ?"

"अभी उस जिम्मेदारी से दूर हूँ वकील साहब। शादी नही की है।"

"लेकिन साल-दो-साल वाद तो करनी ही होगी। तव ?"

"भविष्य अंधकार में है। अभी से उस पर क्या सोचा जाये ? और मैं तो वैसे भी कट्टर भाग्यवादी हूँ। जो कुछ हो रहा है और जो कुछ भविष्य मे होगा, सव मे भाग्य का हाथ है। मनुष्य के स्वयं का अस्तित्व कुछ भी नही हैं।" उसने चाय की चुसकी ली।

"फिर मनुष्यो के कार्यो का क्या महत्त्व रहा अमरनाथ जी ?" वकील की पत्नी ने प्रश्न किया।

"अकर्मण्य न वनने की आदत से अपने को वचाना।"

"वस।"

"इसे आप इस तरह समझें। नदी पार करने के लिए नाव की आवश्यकता पड़ती है न ?"

"पड़ती है।"

"लेकिन मझधार में पहुँच कर वह किस समय तूफानों के चपेटे मे आजाये, किसी को ज्ञान नही। कार्यों के महत्त्व का परिणाम नाव है और उस नाव से पार उतर जाने का भरोसा भाग्य। अन्ततोगत्वा भाग्य ही सर्वोपरि है।" अमरनाथ ने प्रतिभा की ओर देखा। वह उसे पहले से देख रही थी।

वाहर फाटक पर किसी ने पुकारा, "वकील साहव, वकील साहव।"

"कौन साहव हैं ? अन्दर आ जाइये।"

फाटक खुलने पर तीन-चार लोग दिखलाई पड़े जो मुवक्कल प्रतीत

हो रहे थे। वकील साहब खड़े हो गये। प्रतीभा कह उठी, "उन को यही बुला लीजिये। हम लोग ड्राइंग-रूम मे बैठे जाते है।" वह उठ पड़ी, "आइये।" उसका सम्बोधन अमरनाथ को था।

तीनो ड्राइंग-रूम मे आकर बैठ गये। थोड़ी देर बाद नौकर कुछ पूछने आया। प्रतिभा की भाभी उठकर अन्दर चली गई। प्रतिभा की आँखे अमरनाथ से मिली, "अब कुछ मैं भी कहूँ ?"

अमरनाथ हसने लगा, "भाभी जी के पक्ष में ? कहिये। लेकिन यह भी ध्यान रहे कि मैं अकेला हूँ।"

"लीजिये, आपने तो अभी से भाग्य का सहारा छोड दिया। कर्म की प्रधानता तो अब यो ही सिद्ध हो गई।"

"जी नही, यह भी भाग्य का चक्कर है अन्यथा मेरा पक्ष न लेकर आप भाभी जी का क्यों लेती ? रहीम जी के कथानुसार—"रहीम चुप है बैठिये देख दिनन को फेर···।" मैंने भी इसी कारण पहले से ही हथियार डाल दिये हैं।"

प्रतिभा खिलखिला पड़ी। अमरनाथ भी हंसने लगा।

"अब आप मेरे यहाँ किस दिन आ रही है ?"

"किस दिन आजाऊँगी। इस सनडे को तो आप कानपुर जा नही रहे है।"

"क्यो ?"

"मेरा अनुमान है।"

"नही, सनडे को जाना निश्चित हो गया है।"

"तो मेरे कहने से रुक जाइये।" प्रतिभा की गर्दन झुक गई थी, "अगले सनडे को चले जाइयेगा।"

अमरनाथ के शरीर मे कोई सिरहन फैल गई। उसके नेत्र प्रतिभा को निहारने लगे कुछ अनुमान हेतु।

कोई उत्तर न पाकर प्रतिभा ने सिर उठाया। नेत्र मिल गये। प्रतिभा सकुचा गई। उसने तत्क्षण झुका लिया, "आपने कोई उत्तर नही दिया ?"

उस ने अपनी कमजोरी को छिपाने का प्रयास किया।

"उत्तर क्या दूं? आपकी बातों का इन्कार कैसे हो सकता है, मगर कल तो आपको मेरे यहाँ आना ही होगा। यह मेरी शर्त है। आइयेगा न?"

"भाभी को बुला लूं।" वह उठकर अन्दर चली गई।

अमरनाथ के जीवन में किसी ऐसी किशोरी के प्रेम का पहला आभास था जो सुशिक्षित थी, सुन्दर थी, और उसके कथाकार के प्रति आकर्षित थी। वह इस समय जिस उल्लास का—अन्तर के आह्लाद का अनुभव कर रहा था, वह अवर्णीय था।

अपनी भाभी के साथ प्रतिभा आई। अमरनाथ ने पहले वाली बात दोहराई। उसने अपनी सहमति दे दी। अमरनाथ खड़ा हो गया।

"आप उठ क्यों गये?" श्रीमती ने आपत्ति की।

"अब चलूंगा।"

"अभी नहीं। उस दिन खाने की बात भी तो हो गई थी। क्यों प्रतिभा?"

"बिल्कुल पक्की हुई थी। तुम इन्हें रोको।"

"और किसी दिन खा लूंगा प्रतिभा जी। अब तो अगले इतवार तक रुकना ही है। बहन से मना नहीं किया है अन्यथा खा लेता। जज साहब मेरी प्रतीक्षा में होंगे। आप लोग उनके स्वभाव से परिचित नहीं हैं। बड़े तकल्लुफी हैं।" उसकी आँखें प्रतिभा की आँखों में समा जाना चाहती थीं।

"थोड़ा ही सही।" श्रीमती ने पुनः जोर दिया।

अमरनाथ ने हाथ जोड़ लिये, "आज के लिए क्षमा चाहूंगा।" उसने पैर उठाये, "कल की याद न भूलें। नमस्ते।" वह कमरे के बाहर हो गया।

"क्यों साहब?" वकील महोदय ने टोका।

"अब जा रहा हूँ।"

"अरे वाह, यह कैसे हो सकता है ?" उन्होने पुकारा, "प्रतिभा।"

प्रतिभा वाहर आई।

"तुम तो कह रही थी कि अमरनाथ जी खाना भी खायेंगे। और—।"

अमरनाथ बीच मे बोल उठा, "और किसी दिन वकील साहब। आज के लिए घर पर कहना भूल गया था। अच्छा नमस्ते।" वह अविलम्ब मुड गया। इस तरह मुड़कर चल देने की उसकी पुरानी आदत है।

वकील साहब मुवक्कलों से कह रहे थे, "जिस जज साहब के यहाँ आप लोगो का मुकदमा होता है, उन्ही के यह साले हैं। पूरा काम फतह होगा। किसी तरह की चिन्ता करने की जरूरत नही है। वस, मेरी फीस मे हीला-हवाला न हो।" आजकल के वकील मुकदमा अपनी योग्यता से नही सिफ़ारिश और इधर-उधर के दन्दफन्द से जीतते हैं।

मोवक्कलो की वाछे खिल उठी थी।

४

दूसरे दिन निश्चित समय पर प्रतिभा और उसकी भाभी का जज-साहव के यहाँ आगमन हुआ। जज साहव कचहरी से आ चुके थे। अमरनाथ ने सबका सबसे परिचय कराया। अमरनाथ की वहन ने प्रतिभा की भाभी से वकील साहव को साथ न लाने का मीठा उलाहना दिया। श्रीमती ने अपनी त्रुटी स्वीकार किया और क्षमा मांगी। उधर प्रतिभा और अमरनाथ की आँखें वीच-वीच मे मिलती जा रही थी, और कुछ न कुछ कहने का प्रयत्न भी करती जा रही थी, यद्यपि इन प्रयत्नो मे अभी

झिझक अधिक थी।

चाय आई। साथ मे फलों, नमकीन और मिठाईयो की प्लेटे भी आई। बाद मे चपरासी हलवा का एक प्लेट अमरनाथ के सामने रख गया। प्रतिभा की भाभी मुसकराई, "मालूम पड़ता है अमरनाथ जी को हलवा बहुत पसन्द है ?"

"बहुत।" बहन ने उत्तर दिया, "हलवा और बेसन की कढ़ी, बरी के साथ। ये दोनो चीज़े अमृत हैं।"

"और इमरती के बारे मे इनकी क्या राय है यह भी तो बता दो।" जज साहब मुस्कराते हुये कह उठे।

सब हँसने लगे।

चाय के बाद आधे घंटे तक और बैठक हुई, तत्पश्चात् अतिथियो ने विदा ली। प्रतिभा की भाभी ने जज साहब समेत आने का निमंत्रण दिया। जज साहब की पत्नी ने निमंत्रण स्वीकार कर लिया किन्तु तारीख निश्चित नही की।

फाटक के बाहर सड़क तक अमरनाथ छोड़ने आया। प्रतिभा की भाभी ने अमरनाथ से पूछा, "अब दर्शन कब होगे ?"

"जब आज्ञा होगी।"

"तो कल के लिये कह दो भाभी। झूठ-सच का अनुमान लग जायेगा।" प्रतिभा ने अवसर से लाभ उठा लिया।

"यह भी सही है।" प्रतिभा के भावार्थ को अमरनाथ ने समझ लिया था, "निर्णय हो जाय अन्यथा जीवन-भर के लिये झूठा साबित होना पड़ेगा। आज्ञा दिलवाइये।"

"अब कहती क्यों नही भाभी ?"

"क्या कहूँ ? मेरा तो निमन्त्रण है ही। अब देखना है कि कल अमरनाथ जी आते है या नही।"

"लीजिये, आपका कहना हो गया न ? कल आपको आना है।" प्रतिभा के नेत्र चमक उठे।

"अच्छी बात है।" उसने हाथ जोड़े।

दोनों ने प्रत्युतर में नमस्ते कहा और मुड़ पड़ीं।

अपने बंगले के अन्दर मुड़ने के पहले अमरनाथ ने पुन. पीछे सर घुमा-कर देखा। प्रतिभा भी देख रही थी। लेखक का मन वल्लियों उछल गया। क्या वास्तव में प्रतिभा उससे प्रेम करने लगी है—अन्दर के किसी कोने से आवाज़ उठी और विलीन हो गई।

उस रात वडी देर तक अमरनाथ खाट पर आँखें वन्द किये जागता रहा। नाना प्रकार के प्रश्नो को लेकर तर्क-वितर्क करता रहा। कल्पनाओं की दुनियाँ को सवारता-सजाता रहा और एक विशेष प्रकार के आनन्द का अनुभव करता रहा।

दूसरे दिन भोजनोपरान्त, लगभग वारह वजे वहन से शहर घूमने का वहाना वताकर, अमरनाथ निकल पड़ा। यद्यपि वीमानगर का रास्ता पाँच मिनट से अधिक का नही था परन्तु उसमे उतनी भी सवूरी नही थी। वह अविलम्व पहुँच जाना चाहता था। उसने रिक्शा किया और प्रतिभा के दरवाजे आ खड़ा हुआ। कमरे के दरवाजे वन्द थे। उसने वरामदे मे आकर इधर-उधर देखा। घंटी नही थी। उसने किवाड पर 'खट-खट' की ध्वनि की। दरवाजे खुले "आप।" प्रतिभा सामने खड़ी थी।

अमरनाथ अपलक देखता रह गया। खुले हुए लम्वे-लम्वे केशो के वीच सुघराई की किरणे छिटकाता हुआ प्रतिभा का गोल मुखड़ा, सुन्दरता के प्रखरो से अवगत करा रहा था। धोती सफेद थी और व्लाउज भी सफेद। महीन कपड़े के कारण अन्दर की कंचुकी दिखलाई पड़ रही थी, जिसके फलस्वरूप आकर्षण वढ़ गया था।

अमरनाथ के नेत्रों की ढिठाई प्रतिभा को प्रिय लगी। उसने भी अपने नेत्रो को ऐसा करने के लिये प्रोत्साहित किया पर वे डरपोक निकल गये—मुकाविले मे उठ न सके। प्रतिभा ने नत मस्तक हुए ड्राइंग-रूम के किवाड़ खोले, और अमरनाथ को वैठने के लिये कहा। उसके नेत्रो की

दशा अब तक वैसी ही थी।

"आप भी बैठिये।" अमरनाथ ने कहा।

प्रतिभा बैठ गई। सम्भवतः वह भूल गई थी कि वह अब तक खड़ी है।

"आपकी भाभी जी कहाँ हैं?"

"यहीं बगल मे गई हुई हैं। अभी बुलवाती हूँ।"

"बुलवा लीजियेगा। जल्दी क्या है? आप शायद आराम कर रही थी?"

"नही। दिन में सोने की आदत नही है। आपका उपन्यास पढ़ रही थी।"

"मेरा इस समय आना आपको कैसा लगा होगा?"

"क्यों? मैं तो स्वयं उस दिन आपसे कहने वाली थी। शाम को बातचीत नही हो पाती है। भाई साहब के मुवक्कल आते-जाते हैं।" प्रतिभा की आँखे धीरे-धीरे उठकर अमरनाथ को देखने लगी।

अमरनाथ भी देखने लगा।

प्रतिभा ने पुनः दृष्टि नीचे कर ली, "अभी आई।" वह उठकर अन्दर चली गई।

अमरनाथ को कुछ बुरा लगा। भाभी को बुलाने की क्या जल्दी थी परन्तु शीघ्र ही उसकी यह खिन्नता प्रसन्नता मे परिवर्तित हो गई, जब प्रतिभा ने शरबत का गिलास लाकर उसके सामने मेज़ पर रख दिया।

"यह क्या?"

"धूप मे आये हैं न। पीजिये।"

"और आप।"

"आप पीजिये। मोटे व्यक्तियों को मीठी चीज़े कम खानी चाहियें। जब लोग अभी मजाक उड़ाने मे नही चूकते तो···।"

"आश्चर्य है उन लोगों पर जिन्हें आप मोटी दिखती है। मेरे ख्याल से उन लोगो को आपकी तन्दुरस्ती से ईर्ष्या होगी। इतनी अच्छी हेल्थ

आजकल की लेडीज में देखने को मिलती कहाँ है ?मैं`` ।"

"बस । अब शरबत पीजिये । आप लेखकों की क्या बात ? न पत्थर को हीरा बनाते देर लगती है और न हीरे को पत्थर । पीजिये ।"

"लेकिन उसके साथ यह भी तो कहे कि जितना उत्तम पारखी वह होता है उतना दूसरा नही ।"

प्रतिभा मुस्कराई, "आप लोगों से घन्टों मे पार पाना कठिन है । गिलास उठाइये ।"

अमरनाथ ने गिलास ओठो से लगा लिया । प्रतिभा ने गर्दन झुका ली। उसे अमरनाथ की आँखो की शरारत का अन्दाज था । पर अमरनाथ कितना घुटा था उसे क्या इल्म ? अधिक समय बीत जाने पर भी जब गिलास के रखने की आहट न मिली तो विवश होकर उसे सिर उठाना पड़ा । नेत्र टकरा गये । दोनो के शरीर मे बिजली दौड गई । अंग-अंग अकुला उठे । प्रतिभा पुनः शरमा गई । अमरनाथ ने मेज पर गिलास रख दिया । वह जो चाहता था सो हो गया ।

प्रतिभा ने नौकर को पुकारा ।

"क्यों ?" अमरनाथ ने पूछा ।

"भाभी को बुलवाऊँ ।"

"बुलवा लीजियेगा । ऐसी जल्दी क्या है ?"

नौकर दरवाजे पर आया ।

"एक गिलास पानी दे जाओ ।"प्रतिभा के कहने के पूर्व अमरनाथ ने कह दिया ।

प्रतिभा चुप रही नौकर पानी देकर चला गया ।

अमरनाथ ने प्रश्न किया, "शाम का क्या प्रोग्राम रहता है ?"

"कोई खास नही । कभी किसी सहेली के यहाँ चली जाती हूँ या कोई पिक्चर ।"

"तो कल कोई पिक्चर चालिये ।" पुरुष को नारी का प्रोत्साहन मिला नही कि वह हथेली पर सरसों जमाने की चेष्टा करने लगता है ।

"आजकल कोई अच्छी पिक्चर नही लगी है। और जो दो-एक हैं, उन्हे देख चुकी हूँ।"

"तो शाम को कही घूमने का रखिये।" मुगल गार्डन कैसा रहेगा ?"

"और किसी दिन चलेंगे।" प्रतिभा ने बात को टाला। "कल भाभी के कुछ रिलेटिव आने वाले हैं। अभी तो आप आगरे मे रहेगे ही ?"

"बस, अगले इतवार तक, आपकी आज्ञानुसार।"

"धन्यवाद। यह एहसान जिन्दगी भर नही भूल सकूंगी।"

अमरनाथ चुप रहा जैसे कुछ सोचने लग गया हो। प्रतिभा भी चुप रही। बाहर किसी के पैरो की आहट मिली। प्रतिभा ने खिड़की से झांक कर देखा। उसकी भाभी थी। उसने आने का संकेत किया। वह अन्दर आ गई। अमरनाथ हाथ जोड़ता खड़ा हो गया।

श्रीमती ने भी हाथ जोड़े, "आप कब आये ? बैठिये।"

"अभी दस मिनट पहले। सोचा—दोपहर मे आप लोग भी फुरसत मे होती हैं—चला आया। अब आगरे मे देखने को कुछ शेष तो रहा नही है। आगरा फोर्ट एतमाद्दौला और ताज को पाँच-सात बार देख चुका हूँ।"

"आपको शरबत वगैरह···।" उसका सम्बोधन प्रतिभा से था।

"अभी-अभी," अमरनाथ बीच मे बोल उठा, "पीया है।"

बातों का क्रम बदला। देश-विदेश की राजनीति, समाज की और फिल्म आदि पर बड़ी देर तक चर्चा होती रही। चार बजने को आये। वार्ता को समाप्ति का रूप देते हुये अमरनाथ ने पहले का भाव इंगित किया।

"चाय पीने के बाद। वकील साहब भी अब आ रहे होगे।" श्रीमती ने आपत्ति की।

"नही देर हो जायेगी। जज साहब प्रतीक्षा करेंगे।" वह खड़ा हो गया।

"चाय बनने मे कितना समय लगेगा। एक कप पी लीजिये।" प्रतिभा का आग्रह था।

"नहीं, देर हो जायेगी।" उसने नमस्ते किया और बाहर को निकल पड़ा।

प्रतिभा फाटक तक आई, "आप कानपुर कब जा रहे हैं ?"

"अगले इतवार को।" अमरनाथ की गर्दन झुकी हुई थी।

"अभी तो कई दिन हैं। कल आपका क्या प्रोग्राम है ?"

"कुछ नहीं। घर पर बैठा बोर होऊंगा। आपसे कह दिया है वरना चला जाता।"

"आप साहित्यकारों से ऐसी ही आशा की जाती है।" वह क्षण भर रुकी, दिन में बोर होने से तो अच्छा होगा कल आप फिर यहीं आ जांय। सौभाग्य दोबारा कहां मिलने का ?"

अमरनाथ चुप रहा।

"तो कल आप आ रहे हैं न ?"

"देखिये प्रयत्न करूंगा। निश्चित नहीं कह सकता।"

प्रतिभा अधरों में मुस्कराई, "अच्छी बात है तो मैं ही आ जाऊंगी। दोपहर में कहीं जायेंगे तो नहीं ?"

अमरनाथ की गर्दन ऊपर उठी और नेत्र प्रतिभा के नेत्रों मे अटक गये। उसने हथेलियाँ जोड़ी, "अपराधी को क्षमा करने की विशेषता है, दंड देना तो सभी जानते हैं। बस कल भर और आने का कष्ट दूंगी। आइयेगा जरूर।"

५

अमरनाथ को दूसरे दिन आना पड़ा। यद्यपि वह आना नहीं चाहता था; इसलिये नहीं कि वह गुस्सा था वरन् इसलिये कि प्रतिभा से

घनिष्टता बढ़ाने का कोई तुक नही था। अब वह आगरे में चार-छ. दिनों का मेहमान था। फिर कहाँ वह और कहाँ प्रतिभा। पुनः जीवन मे भेंट होने की कोई सम्भावना नहीं थी और कभी हो भी गई तो वह होने न होने के समान थी। अतः इस स्नेह का अन्त कर देना ही लाभकर और उचित था। इसका बढ़ावा भविष्य के लिये दुखदायी था। दिल, दिमाग और दुनिया, तीनों के लिये उलझनों का वाइस था। अमरनाथ ने रात में बड़ी देर तक जाग कर, यही निर्णय किया था परन्तु दूसरे दिन, ज्यों-ज्यों दोपहरी समीप आती गई, मन का अन्तर्द्वन्द्व बढ़ता गया। रात के निर्णय का रूप बदलता गया। जिन तर्कों के बल पर इतना बड़ा फैसला लिया गया था, उन्ही तर्को को, नये तर्कों द्वारा अनुचित सिद्ध किया गया और भोजनोपरान्त अविलम्ब प्रतिभा के मकान के लिये प्रस्थान कर दिया गया।

प्रतिभा उसकी प्रतीक्षा में थी और अपनी एक सहेली के साथ थी। चर्चा अमरनाथ और उसके उपन्यासों की चल रही थी किन्तु कान बाहर लगे थे। फाटक खुलने की आहट मिली। प्रतिभा हड़बड़ाकर बाहर आई। सामने हाथ जोड़ता हुआ अमरनाथ था। प्रतिभा ने भी हाथ जोड़े। क्षण भर के लिये दोनों के नेत्र एक-दूसरे मे खो गये।

अन्दर बैठने पर प्रतिभा ने अपनी सहेली का परिचय कराया तदुपरान्त नौकर को आवाज देकर कुछ लाने का संकेत किया। नौकर को उस संकेत का अर्थ पहले से विदित था।

उपन्यासों की चर्चा आरम्भ हुई और धीरे-धीरे उसका रूप व्यापक होता गया। देशी और विदेशी कथाकारो की तुलना-सी होने लगी। प्रतिभा की सहेली मालती कह रही थी, "हमारे यहां के राइटर्स में जो सबसे बड़ी कमी है, वह फारेन राइटर्स को कापी करने की है। लेकिन अफसोस यह है कि उसे भी वे अच्छी तरह नही कर पाते हैं।" उसका मुँह प्रतिभा की ओर था। बहस इन्हीं दोनों में हो रही थी। "अश्लील साहित्य, जिसे यथार्थवाद की ओट मे धड़ल्ले से लिखा जा रहा है, वह

कापी नही तो क्या है?"

"कापी क्यों है?" प्रतिभा ने प्रतिवाद किया, "क्या हमारे कानों, और नाकों मे, और उनके कानो नाको मे अन्तर है? हवा वहाँ भी चलती है और यहाँ भी। युवक-युवतियाँ वहाँ भी हैं और यहाँ भी। प्रेम वहाँ भी होता है और यहाँ भी। फिर कापी करने की क्या बात है? रहा प्रश्न अश्लील साहित्य का, उसे मैं अश्लील मानती ही नही। यह विज्ञान का युग है, जादुई महल का नही। आज के समाज का दृष्टिकोण प्राचीन समाज जैसा नही रह गया है। वह साहित्य मे भी विज्ञान जैसा यथार्थ ढूंढ़ने लगा है। सृष्टि में जैसा जो कुछ हो रहा है, वैसा ही उसके सामने आना चाहिए।"

"तुम भी अजीब बात करती हो। मेरा कब कहना है कि सृष्टि मे जैसा जो कुछ हो रहा है वैसा उसका डिस्क्रिपसन न हो, लेकिन समाज मे जैसा जो कुछ हो रहा है, उसका वैसा डिस्क्रिपसन नही होना चाहिये।"

"क्यो? क्या समाज सृष्टि से अलग है?"

"अलग तो नही है पर हमारे और पश्चिमी समाज के आउटलुक में फ़रक है और साहित्य का आउटलुक समाज के आउटलुक से वंधा हुआ है। इसके विपरीत जाने पर साहित्य अश्लील हो जाता है—विकास के स्थान पर समाज का पतन करने लगता है।"

प्रतिभा हँस उठी, "क्या सिड़ीपने वाली बात की है तुमने। समाज से वंधकर चलने वाला साहित्य, रूढ़िवादी होता है मैडम। उसे हर हालत में उसके विपरीत चलना चाहिये, तभी समाज का उत्थान हो सकता है। जिसे तुम अश्लील साहित्य समझती हो, वही विकास है। किसी समय सती प्रथा को, हमारा साहित्य भी उचित और महत्वपूर्ण बतलाया करता था पर जैसे ही उसने आउटलुक बदला, सती प्रथा समाप्त हो गई। हम स्त्रियो को उस कठोर दंड से छुटकारा मिला जिसकी केवल कल्पना से आज भी बदन सिहर उठता है।"

"पर मुझे यह बताओ कि आजकल के साहित्य मे नारी का जो

नग्न चित्रण हो रहा है, उससे किस प्रथा की समाप्ति होने वाली है ? यह समाज को विकास की ओर ले जायेगा या पतन की ओर। क्या तुम्हारा यथार्थवाद यही तक सीमित है ? क्या सृष्टि मे इतना ही यथार्थ देखने को रह गया है ?"

शरवत का गिलास सबके सामने रखकर नौकर चला गया।

"इतना तो नही है, मगर जितना है उतने मे बुराई क्या है ? कालिदास ने स्त्रियो का जो नग्न चित्रण प्रस्तुत किया है, उसे शायद तुम पढ भी नही सकती हो। नारी का समाज मे एक विशेप स्थान है और इसी कारण साहित्य मे भी उसे प्रमुख स्थान मिला है।"

अमरनाथ ने टोका, "प्रतिभा जी कुछ मैं भी कहूँ ?"

"अभी नही। आपका फैसला अन्तिम होगा।"

"इसे अब अन्तिम ही समझे। आपका तर्क अब जबरदस्ती वाला तर्क है। आज के कथा साहित्य मे अश्लीलता का खुला प्रदर्शन समाज के लिये घातक तो है ही, विशेप घातक आपकी जाति के लिये भी है। फ्रास, इग्लैड और अमेरिका की स्त्रियो की जो दशा है, वही दशा यहाँ की स्त्रियो की भी निकट भविष्य मे होने वाली है। स्त्रियाँ, केवल पुरुषों के मनोरजन का साधन मात्र रह जायेगी। यह इसी यथार्थवाद का दुष्परिणाम है कि आज अमेरिका का समस्त पारिवारिक जीवन, त्राहि-त्राहि कर उठा है। पारिवारिक शान्ति पूर्णतः समाप्त हो चुकी है। वे अब पीछे लौटने के लिये अधीर हो उठे हैं। आपने सम्भवतः पढा होगा कि इग्लैड मे डाक्टरो की रिपोर्ट के अनुसार बारह वर्ष से लेकर सोलह वर्ष के लड़को का अधिकाश व्यय, सेक्स सम्बन्धी दवाइयों पर हो रहा है। यह अश्लील साहित्य का ही तो प्रभाव है। प्रतिभा जी, समाज की भाँति साहित्य की भी कुछ सीमायें होती हैं। उन सीमाओं का अतिक्रमण होने पर वही साहित्य, जिनके बल पर बड़ी-बड़ी क्रान्तियाँ और राज्यों का उलट-फेर होता है, घातक और घृणित बनकर, बड़े-बड़े राष्ट्रो और जातियो के अस्तित्व तक को समाप्त कर देता है। यथार्थवाद के परदे

में यह अश्लील साहित्य वांछनीय नहीं है। इससे साहित्य, समाज और देश तीनों ही अधोगति को प्राप्त होंगे। यह बहुत बुरा है।"

"तब तो मालती के कहने के अनुसार यह नकल भी है?"

"बिल्कुल नकल है और भोंडी नकल है। सुन्दरता का वर्णन न तो कभी अनुचित समझा गया है और न आज समझा जाता है, पर यह वर्णन जब सेक्स प्रधान बन जाता है तो अनुचित और हानिकारक दोनों हो जाता है। गन्दे रूप से अंगो का चित्रण, और गन्दी उपमाओं द्वारा उनकी तुलना, आज के प्रत्येक उपन्यास, कहानी और कविता में इतना अधिक है कि उसका उल्लेख नहीं किया जा सकता। यह सब क्या है? हमारा समाज हमारी परम्परा और हमारे विचार आज दिन भी इस प्रकार के चित्रणों को हेय समझते हैं, और सम्भवतः आने वाले जमाने में भी समझते रहेंगे। हाँ, यह बात दूसरी है कि बरसाती नदी की भाँति, यह वेग कुछ समय के लिये अधिक प्रबल हो जाये, पर अन्ततोगत्वा इसे अपने वास्तविक रूप में आना ही होगा।"

प्रतिभा कुछ कहती-कहती चुप हो रही। मालती ने मजाक किया, "अब एक गिलास ठंडा पानी पी जाओ। उठो।" उसने कलाई घुमाकर घड़ी में समय देखा, "टाइम भी हो चला है। अभी तुम्हे कपड़े भी तो बदलने हैं।"

प्रतिभा उठकर अन्दर चली गई।

मालती ने विषय बदला! सिनेमा जगत पर वार्ता आरम्भ हुई। अमुक चित्रों, उनके पात्रों तथा दिग्दर्शकों की सफलताओं और असफलताओं पर, टीका टिप्पणियाँ होने लगीं। अंग्रेजी फिल्मो की चर्चा आई। अमरनाथ ने ऐतिहासिक फिल्मों की विशेष सराहना की और इस क्षेत्र में उन्हे अद्वितीय बताया। मालती उसके कथन से पूर्णतः सहमत थी।

नौकर के साथ प्रतिभा ने ड्राइंग-रूम में प्रवेश किया। बसन्ती रंग की रेशमी साड़ी में वह कौंध उठी थी। अमरनाथ के नेत्र अटक गये।

प्रतिभा की दृष्टि दूसरी ओर थी। उसने जान-बूझकर ऐसा किया था। उसे अमरनाथ की भावनाओ का अनुमान था। मेज़ पर प्यालियों और तश्तरियों को समुचित ढंग से लगा लेने के वाद, वह सोफा पर बैठी। नौकर ट्रे लेकर चला गया। प्रतिभा की नजर मुडी, मिली और तत्क्षण झुक गई। अमरनाथ स्वर्ग लोक मे जा पहुंचा। प्रतिभा चाय बनाने लगी।

अमरनाथ ने चाय पीते हुए पूछा, "आप लोगो का कही का प्रोग्राम है ?"

"जी हां," प्रतिभा के स्थान पर मालती ने उत्तर दिया, 'साथ में आपका भी है।"

"मेरा ! मुझे तो कुछ वताया नही गया है।"

"मौके पर वताया जायेगा। तभी उसमे खूवसूरती है।"

"अमरनाथ ने चाय की प्याली मुंह से लगा ली। पुनः नेत्रो का आदान-प्रदान हुआ, "आपकी भाभी जी आज नही दिखलाई पड़ रही है ?" अमरनाथ ने प्रश्न की ओट में कुछ छिपाने का प्रयास किया।

"उनकी कोई मिलने वाली आई हुई हैं। उन्ही से वाते कर रही हैं।"

चाय समाप्त हुई। अमरनाथ खडा हुआ। युवतियाँ भी खडी हुईं। अमरनाथ के वाहर निकल जाने पर मालती ने प्रतिभा के कपोलो को नोचते हुये कहा, "बेचारा लेखक मारा जायेगा डारलिंग। इतना जुल्म न ढाओ। आज तो चांद भी···।"

प्रतिभा विचकती हुई वाहर निकल गई।

वस द्वारा तीनो राजा मंडी वाजार पहुँचे। चौराहे से समीप और वाजार के मध्य मे 'भारत' सिनेमा है। "अव तो आपको मालूम हो गया न अमरनाथ जी ?" मालती ने सिनेमा के सामने पहुँचकर पूछा।

"जी हां, अच्छी तरह। मगर अव एक मेरी रिक्वेस्ट है।"

"उसे कभी और के लिये रखिये।" मालती समझ गई थी। 'टिकट

पहले से मँगवा लिये गये हैं। आइये चलिये।"

सब आकर हाल मे बैठ गये। न्यूज-रील शुरू हुई और उसके वाद पिक्चर। यद्यपि अमरनाथ की दृष्टि परदे पर थी किन्तु दिमाग कुछ और सोच रहा था—प्रतिभा के सम्बन्ध मे सोच रहा था, उसके विचारो के सम्बन्ध मे सोच रहा था और उसके प्रति भावनाओ की गहराइयो को।

चित्र चलता रहा, दृश्य वदलते रहे और फिर मध्यान्तर हो गया। वत्तियाँ जल गई। अमरनाथ की शृँखला टूट गई। वह तनिक सीधा वैठता हुआ इधर-उधर देखने लगा।

"कैसी लग रही है?" प्रतिभा ने पूछा।

"अभी तक तो वहुत अच्छी है। शान्ताराम की अपनी यही तो विशेषता है। उनकी हर पिक्चर कोई नई चीज लिये होती है।" उसने सामने से जाते हुये लडके को सकेत से वुलाया।

लडके ने फटाफट कोका-कोला की वोतले खोल कर सवके हाथो मे थमा दिया।

"तीन अच्छे सन्तरे भी दौड़ कर ले आओ।" अमरनाथ ने आदेश दिया।

युवतियो ने आपत्ति की। अमरनाथ ने सुनी-अनसुनी कर दी। लड़का लेने वाहर चला गया।

प्रतिभा ने मुँह वनाया, "यह आपकी ज्यादती है।"

"अवसर-अवसर की वात है। दूसरे भी तो नही चूकते।"

प्रतिभा को लाजवाव होना पड़ा।

खेल आरम्भ हुआ और अन्त मे समाप्त भी हो गया। सव वाहर निकले। फिल्म पर टीका-टिप्पणी होने लगी और रास्ते भर होती आई। अमरनाथ और प्रतिभा बीच-वीच मे नयनो की भाषा द्वारा कुछ-कुछ समझ लेने का भी प्रयास कर लेते थे। वीमानगर के पहले एक सड़क वायीं ओर को मुड़ती है। तीनों यहीं रुक गये। अमरनाथ को सामने जाना था।

मालती बोली, "अगर कल शाम को मेरे यहाँ चाय पीने का कष्ट करें तो बड़ी कृपा होगी।

"इसमे कृपा करने की क्या बात है मालती जी ?"

"बात है। आप साहित्यकारो के इतने समीप आने का सौभाग्य सब को तो नही प्राप्त होता न। तो कल आप···।"

"जरूर आऊँगा। लेकिन आपका मकान··· ।"

मालती ने पता बता दिया।

सब की हथेलियाँ जुड़ीं। अमरनाथ के मुड़ने के पहले उसकी आँखों ने अपनी इच्छा पूरी कर ली। पूरी क्यो न करती। पूर्ति करने वाला जो आशा से अधिक उदार बन बैठा था।

अमरनाथ को देखते ही जज साहब मुसकराये। वह इस समय लान में बैठे, अपने बच्चों के साथ मनोरंजन कर रहे थे। बच्चे दौड़कर मामा से चिपट गये। अमरनाथ कुरसी खींचकर बैठ गया, "आप मुसकराये क्यों ?" उसने पूछा।

"मालूम पड़ता है इश्क की शुरुआत हो गई है, दोपहर के गये-गये अब आना हो रहा है ? क्या कल कोई प्रोग्राम तय हो गया था ?"

"जी, और कल का भी तय हो गया है। क्या करें आप तो कही तय कराने से रहे ?"

"बड़ी जल्दी। एक हफ्ते मे इतनी प्रोग्रेस। कमाल है भई आजकल की लड़कियों का। आज क्या-क्या प्रोग्राम रहे ?"

अमरनाथ बताने लगा। साले-बहनोई मे बड़ी खुलकर सब बातें होती हैं।

६

सूर्य नगर से सटी हुई "लाजपत कुंज" नामक एक और नई बस्ती है। यह भी बस्ती सम्पन्न लोगों की है। सड़क के दोनों ओर सुन्दर-सुन्दर बंगले आधुनिक डिजाइन के बने हुये हैं। इन्ही बंगलो में एक बंगला प्रतिभा की सहेली मालती का है। इसी सड़क पर आगे चलकर बलवन्त राजपूत कालेज है, जिसमें मालती, एम०ए० की छात्रा है। मालती के परिवार मे पिता-माता, एक बड़े भाई, भाभी और एक छोटी बहन, जो उसी कालेज मे बी०ए० की छात्रा है।

निश्चित समय के अनुसार, अमरनाथ अपने बंगले से निकला। साथ में बहनोई का एक चपरासी भी था। उसे उधर के बंगलों का अन्दाज़ था। आज प्रथम बार आकाश मे ढ़ेरो मेघो का जमघट होने के कारण, सध्या का वातावरण लुभावना और शीतल बन गया था। आगरे में अभी तक एक बूंद पानी नहीं गिरा था।

अमरनाथ को मालती के बंगले तक पहुँचने मे अधिक समय नहीं लगा। उसे देखते ही मालती और प्रतिभा उठकर फाटक तक आई। अमरनाथ ने प्रतिभा को विशेष भाव से देखते हुए कुछ जताने का प्रयत्न किया। प्रतिभा समझकर भी नासमझ बनी रही। चपरासी लौट गया।

लान मे कई लड़कियाँ बैठी थीं। मालती ने सबका परिचय कराया। तब तक उसकी माता निकली और उनके पीछे-पीछे पिताजी। अमरनाथ ने उठकर प्रणाम किया। उन लोगों के बैठ जाने पर वह भी बैठ गया। बातचीत प्रारम्भ हुई। साहित्य, राजनीति, दर्शन सब पर थोड़ी-थोड़ी

चर्चायें हुई। अमरनाथ के अध्ययन की गहराई का आज सही अनुमान लग सका था। युवतियाँ चकित थी। मालती के पिता बड़े प्रभावित हुये। उन्होने अमरनाथ से पूछा, "आप तो आगरे में ही रहते हैं ?"

"जी नही, कानपुर मे।"

"यहाँ कहाँ रुके हुये है ?"

"आपके," मालती ने बताया, "ब्रदर-इन-ला यहाँ सिविल जज हैं पापा।"

"अच्छा, अच्छा। तो अभी आपका रहना होगा ?"

"जी, बस इतवार तक हूँ।"

"तो जाने के पहले किसी दिन और आने का कष्ट करे। आपकी स्टडी बहुत अच्छी है।" वह खड़े हो गये, "आज हम दोनो का व्रत है। भगवान के दर्शनों के लिये मंदिर······ ·।"

"अवश्य। आप हो आवे।" अमरनाथ ने उठकर प्रणाम किया।

पति-पत्नि चले गये।

सिनेमा जगत की वार्ता चल पड़ी। बीसवी सदी मे धर्म शास्त्र, समाज शास्त्र, अर्थ शास्त्र, राजनीति शास्त्र आदि शास्त्रो के साथ-साथ सिनेमा शास्त्र का विशेष विकास हुआ है। आज इस शास्त्र की चर्चा देहात से लेकर शहर तक, झोपड़ियो से लेकर बडी-बड़ी कोठियों तक, गली-कुलियो से लेकर चौड़ी सड़कों तक, और छोटे-छोटे बच्चो से लेकर बड़े-बूढ़ों तक सर्वत्र है अगर किसी गली मे चार-पाँच वर्ष का बच्चा "जादूगर सईयाँ छोड़ मोरी बहियाँ हो गई आधी रात·········" गाता हुआ सुनाई पड़ जायेगा तो दीवारो पर चिपकी हुई, अभिनेत्रियो की अर्ध-नंगी तसवीरो को आँखें बचाकर घूरता हुआ, कोई बुजुर्ग भी दिखाई पड़ जायेगा। खैर, बातचीत चलती रही और साथ-साथ जलपान भी होता रहा।

बादलों की सघनता बढ़ने के कारण विवशता में गोष्ठी को जल्दी समाप्त करना पड़ा। मालती ने अमरनाथ से पूछा, "अब आप के दर्शन

कब होगे ? सनडे को आपका जाना निश्चित है ?"

'बिलकुल । काफी दिनो से यहाँ हूँ । देखिये, अगर समय मिला तो
ा जाऊँगा । आप पिताजी से यही समय
बता दीजियेगा ।" वह लान से निकलकर सडक पर आया परन्तु फाटक पर ठिठकते हुए बोला, "आप प्रतिभा जी ! अगर चलना चाहें तो उधर से आप को छोडता हुआ मैं निकल जाऊँगा ।"

प्रतिभा के चलने में क्या आपत्ति थी । वह तो इसी की प्रतीक्षा में थी ही । वह साथ चल पडी ।

अमरनाथ और प्रतिभा सडक पर मौन चले जा रहे थे । अमरनाथ कुछ कहना चाहता था पर बात मुँह तक आकर रुक-रुक जाती थी । दूरी कुछ और कम हुई । अमरनाथ के अन्दर तनिक घबड़ाहट बढ़ी और मुँह की बात निकल पडी, "अब तो आप से भेंट होगी नही ?" उसकी आवाज मे भरमराहट थी ।

"क्यो ? इतवार को तो अभी कई दिन है ?"

"कई दिन नही, केवल दो दिन—कल और परसों ।"

प्रतिभा चुप रही ।

अमरनाथ ने पुन: पूछा, "अगर पत्र लिखूं तो क्या आप उत्तर देंगी ?"

"आप मुझे पत्र लिखना पसन्द करेंगे ?"

"मैं तो बहुत कुछ पसन्द करता हूँ प्रतिभा जी, मगर आप बुरा मानेंगी इस डर से कहना नही चाहता ।"

"जैसे ?"

अमरनाथ कहकर भी वह बात न कह सका जो ऐसे उत्तम अवसर पर कहना चाहिए था । उसके मुँह से निकला, "अगर मैं कहूँ कि कल मेरे साथ ताजमहल घूमने चलिये तो क्या आप चलना पसंद करेंगी ?"

प्रतिभा हँसने लगी, "यही बुरी मानने वाली बात है । जब आपके साथ सिनेमा जा सकती हूँ तो ताजमहल जाने में क्या आपत्ति है, लेकिन आप तो ताज कई बार देख चुके हैं ?"

"आप से अकेले में कुछ बातें हो सकेंगी इसलिये .... ।" अब भी अमरनाथ साफ-साफ नही कह पा रहा था।

"आप साहित्यकारो का भी जवाब नही। क्या इस समय हम लोग अकेले नही है। जो कल वहाँ कहना चाहते हो, उसे अभी कह डालिये न। उतनी दूर जाने-आने से जान बच जायेगी।" प्रतिभा ने जान-बूझ कर अमरनाथ के कहने की गम्भीरता को हलका बना दिया था। विचित्र है स्त्रियो का मनोविज्ञान ऊपर कुछ अन्दर कुछ।

अमरनाथ चुप हो रहा। शायद उसे प्रतिभा की बातें अच्छी नहीं लगी थी।

जवाब न मिलने पर प्रतिभा ने सिर घुमाकर देखा। वह सन्न रह गई। अमरनाथ के चेहरे पर उभरे हुये भावो मे कोई व्यथा थी जो उस के हृदय मे चुभ-सी गई। वह धीमी आवाज मे बोली, "मेरी कोई बात आपको शायद बुरी लग गई है ?"

"नही। यो ही चुप हो गया था। शायद आपकी गली आ गई।"

प्रतिभा ने उसके अन्तिम वाक्य पर ध्यान नहीं दिया, "कल का आपका कार्यक्रम क्या है ?"

"कुछ नही।"

"मेरे यहाँ दोपहर में आयेंगे ?"

"नही।"

"क्यों ?"

"वह ठीक नही लगता।"

"मैं आपके यहाँ आऊँ ?"

अमरनाथ चुप रहा।

"बोलते क्यो नही ?"

"क्या बोलूं ? कहने और करने मे बड़ा अन्तर होता है।"

प्रतिभा वाली गली आ गई। वह ठिठकी, "कल बारह बजे ताज पर मैं आपकी प्रतीक्षा करूँगी।" वह गली में मुड़ गई।

अमरनाथ की प्रसन्नता का ठीकाना न रहा।

लेकिन दूसरे दिन की मुलाकात खटाई मे पड़ गई। सध्या वाली बदली ने रात मे बड़ा भयंकर रूप धारण किया। उसने आधी रात के बाद मूसलाधार पानी गिराना शुरू कर दिया था। अमरनाथ ने रात में कई बार उठकर देखा था। और आशंकित मन को ढाढ़स बंधाया था। सवेरे नीद खुलने पर पानी बन्द मिला। उसकी जान मे जान आई। कल्पना की कली खिल उठी। प्रतिभा से वह क्या कहेगा और किस प्रकार कहेगा, इस पर विस्तार पूर्वक मन ही मन सोचने लगा।

जैसे तैसे दस-साढ़े दस बजा। आज उसने भी बहनोई के संग-सग भोजन कर लिया वरना बारह बजे किया करता था। बहनोई के कचहरी चले जाने पर, उसने एटैंची से कपडे निकाले, मिनट दो मिनट तक उसका चुनाव किया तत्पश्चात पहन कर बाहर निकला। बहन ने टोका, "कहीं जाना है क्या ?"

"अभी नही ग्यारह-साढ़े ग्यारह बजे जाऊँगा। एक कविजी के यहाँ निमन्त्रण है। गोष्ठी होगी।" अमरनाथ ने झूठ कह दिया।

"इस पानी मे। बेकार परेशान होना है।"

अमरनाथ चुप रहा।

ग्यारह बजे। आधे घटे की और बात थी। उसने साढ़े ग्यारह बजे चलने को सोच रखा था। अनायास मेघो मे गडगड़ाहट हुई और सामने दूर आकाश मे, काले-काले पहाड़ उड़ते दिखलायी पड़े। अमरनाथ का दिल कुछ बैठने-सा लगा। पानी बरसेगा क्या ? पुनः गर्जना हुई, बिजली चमकी और देखते-देखते चारो ओर-अधकार छा गया। अमरनाथ बरामदे से उठकर अन्दर आ गया। बूंदे टिपटिपाई और हरहराता हुआ जल बरस उठा।

आधा घंटा बीत गया। रफ्तार की तेजी मे कोई कमी नही आई। पौन घंटा बीत गया। बिजली कड़कती रही। बादल गरजते रहे। पानी बरसता रहा। अमरनाथ की आशा जाती रही। मन की पीड़ा मन में

दबाये वह उठा, कपड़े उतारे और पलँग पर जाकर लेट रहा। बहाना सोने का था लेकिन बात दूसरी थी। वर्षा होती रही।

साढ़े चार के लगभग जज साहब कचहरी से आये। बच्चों ने मामा को उठाया और पापा के आने की सूचना दी। तब तक स्वयं जज साहब मुसकराते हुये कमरे मे आ गये, "बारिश बड़ी बेतुकी रही क्यो साहब? आज की दोपहरी खाली गई।" वह कुरसी खींचकर बैठ गये।

"इसी गम मे तो मुँह ढके पडा हूँ। जहाँ गाडी डगरती है कि अल्लाह मियाँ ब्रेक लगा देते हैं। भाग्य मे स्त्री सुख नही बदा है।" दोनों हंसने लगे।

चाय आई। अमरनाथ की बहन बैठकर बनाने लगी। जज साहब ने बात चलाई, "मैं एक बात पूछूँ आपसे? अगर कानपुर के बजाय आप यही रहें तो क्या परेशानी है? जैसे आपके लिये कानपुर वैसे आगरा; बल्कि लिखने की सहूलियत वहाँ से यहाँ ज्यादा है। दूसरी बात आपके रहने से हम लोग भी अकेलेपन का अनुभव नहीं करते हैं। एक उपन्यास यहीं रहकर लिख डालिये। दिल्ली भी नजदीक है। पब्लिशर्स···।"

"नही, अमरनाथ सिर हिलाता बीच मे बोल उठा, नहीं। ऐसा नही हो सकता।"

"क्यों?"

"इसलिये कि···।" वह तनिक रुका।

"बताइये, बताइये। मनी वाली समस्या है न। उसके लिये आपको चिन्ता करने की जरूरत नहीं। सब हो जायेगा और अगर आपको पसन्द न हो तो यहाँ भी दो-एक ट्यूशन कर लीजियेगा।"

"नही, ट्यूशन क्यों करेंगे।" बहन ने आपत्ति की।

"इसलिये कि इनके स्वाभिमान को ठेस न पहुँचे। मेरा आप से ट्यूशन कराने का सिर्फ यही मक़सद है।"

"खैर, दो-चार महीने ट्यूशन न भी करें तो अपने खरचे के लिये पैसा पर्याप्त है। तब तक दूसरी पुस्तक तैयार हो जायेगी। पर रिश्ते-

दारी में इस तरह रुकना··· ।" अमरनाथ कह रहा था ।

जज साहब बोल उठे, "हमारे आपके बीच रिश्तेदारी है कहाँ? मैंने तो हमेशा आपको घर का व्यक्ति समझा है और आपने भी ऐसा ही समझा है। समझा है या नहीं?"

अमरनाथ के पास कोई जवाब नहीं था ।

जज साहब को अवसर मिल गया और उन्होंने अमरनाथ को अपने प्रस्ताव पर सोचने के लिए विवश कर दिया ।

७

अमरनाथ दूसरे दिन भी प्रतिभा के घर न जा सका । पानी का सिलसिला उसी प्रकार का बना हुआ था, यद्यपि तेजी में कमी अवश्य आ गई थी । तीसरे दिन सवेरे बदली फटी, घिरी और पुन. बारह बजते बजते साफ हो गई । नीले आकाश की शोभा निखर आई । धूप चमचमा उठी । जड़-चेतन खिलखिला उठे । प्रकृति की चमक-दमक बढ़ गई । अमरनाथ ने प्रतिभा के यहाँ जाने का विचार बनाया किन्तु फिर कुछ सोचकर स्थगित कर दिया । उसने इतवार के बाद जाने का निर्णय किया । वह प्रतिभा की भावनाओं की गहराई को नापना चाहता था । उसे अब कानपुर नहीं जाना था । बहनोई के प्रस्ताव पर वह सहमत हो गया था ।

शनिवार बीत गया । इतवार को लगभग ग्यारह बजे नौकर आया अमरनाथ के सम्बन्ध में पता करने के लिये । वह घर पर नहीं था । जज साहब के साथ कहीं गया हुआ था । अमरनाथ की बहन से यह मालूम हो गया कि वह अनिश्चित काल के लिये रुक गया है । नौकर

लौट आया। अमरनाथ के लौटने पर वहन ने संदेशा कह दिया। अमरनाथ के मन की कली खिल गई। गहराई का अनुमान लग गया।

वड़ी वेसब्री के वाद सोमवार की दोपहर आई। अमरनाथ निकला और कुछ सोचता हुआ बीमानगर को चल पड़ा। प्रतिभा के वंगले के फाटक पर पहुँचकर तनिक ठिठका। फिर फाटक खोलता हुआ अन्दर प्रवेश कर गया। वाहर कोई नहीं था। वरामदे में पहुँचकर दरवाजे पर थपकी दी।

"कौन ?" अन्दर से प्रतिभा की भाभी ने आवाज दी।

"वाहर आने का कष्ट तो कीजिये।"

साड़ी सभालती वह वाहर आई। अमरनाथ को ड्राइग-रूम में विठलाया और जाने-आने के सम्वन्ध मे नाना प्रकार के प्रश्नो की झड़ी लगा दी। कुछ समय वीत जाने पर भी जव प्रतिभा का आगमन न हुआ तो अमरनाथ अपने को न रोक सका, "प्रतिभा जी शायद कही गई हुई है ?"

"यही पास, अपने एक रिलेटिव रहते हैं, उन्ही के घर। अभी नौकर को भेजती हूँ।" उसने पुकारा।

नौकर के जाने के वाद पुन. श्रीमती ने घर-परिवार आदि सम्वन्धित प्रश्न पूछने आरम्भ कर दिये। अमरनाथ वताता रहा परन्तु भीतर से उसे बुरा लग रहा था। यह सव पूछना सभ्यता के विरुद्ध है।

वाहर चप्पलो की आहट मिली। अमरनाथ उत्सुक हो उठा। द्वार का परदा हटा और प्रतिभा हाथ जोड़ती हुई अन्दर आई। एक पल के लिये नेत्र मिले और झुक गये। प्रतिभा वैठ गई, "आपको आये वहुत देर हो गई क्या ?" उसने पूछा।

"कोई खास नही।"

प्रतिभा ने भाभी की तरफ देखा, "तुमने खाना खा लिया ?"

भाभी ने सिर हिलाते हुए नाही का भाव प्रदर्शित किया।

"अभी आपने खाना नही खाया। वाह ! यह तकल्लुफ आपका खूव

रहा । मैं क्या अकेले नही बैठ सकता था ? जाइये-जाइये ।" बिल्ली के भाग से सिकहर टूट गया था ।

वह उठकर अन्दर चली गई ।

अमरनाथ के नेत्र प्रतिभा को निहारने लगे । प्रतिभा ने गर्दन झुका ली । उसने ऐसा जान-बूझकर किया था । तड़पाने में भी एक खास मजा है । मिनट,दो मिनट और चार मिनट बीत जाने पर भी जब प्रतिभा की गर्दन ऊपर नही उठी तो अमरनाथ को विवश होकर कहना पड़ा, "मुझसे कोई गलती हो गई है क्या ?"

"क्यो ?" प्रतिभा ने उसी प्रकार सिर झुकाये पूछा, "किसी ने कुछ बताया है क्या ?"

"क्या प्रत्येक बात बताने से ही जानी जाती है ? अनुमान भी तो लगाया जा सकता है ।"

"तो अनुमान ग़लत है । आपसे कोई गलती नहीं हुई है ।"

"फिर यह नाराजगी क्यो ?"

"कौन-सी ?"

"मेरी तरफ देखिये तो बतावें ।"

"देखने से क्या होगा ? बतलाइये ।"

"प्रतिभा जी ।"

प्रतिभा की गर्दन उठी । नेत्र मिले रोम-रोम पुलकित हो उठे, "बतलाइये ।" वह बोली, "आप तो बिल्कुल बुत बन बैठे ।"

अमरनाथ ने कोई उत्तर नहीं दिया । केवल देखता रहा ।

प्रतिभा ने पुनः गर्दन झुका ली, "आप लेखकों से भगवान बचाये । भावुकता में उचित-अनुचित तक का ध्यान समाप्त हो जाता है ।" वह खड़ी हो गई ।

"क्यो ?"

"आपके लिये शरबत ले आऊँ ।"

"नही । तबीयत नहीं है । बैठिये ।"

प्रतिभा अन्दर चली गई और स्वय शरवत वना कर ले आई। मेज पर गिलास रखते हुये पूछा, "अब आप कानपुर नही जा रहे है ?"

"फिलहाल अगले सनडे तक।"

"और कही अगले सनडे को फिर पानी वरस गया तो दूसरे सनडे तक रुक जाना पड़ेगा ?"

"मानी हुई वात है। मुझे किसी भी दशा मे ताज वाले अवसर से वचित नही होना है न। वोलिये कव चल रही है ?"

प्रतिभा चुप रही।

"वोलिये।"

"क्या वोलूं ?"

"कल दोपहर मे चलेगी ?"

"देखा जायेगा। अभी तो सनडे के कई दिन है। कल की जल्दी क्या है ?" स्त्रियों की यही अपनी विशेषता है।

"इसलिए कि जव सौभाग्य से अवसर मिल गया है तो आपके साथ दो-चार और भी प्रोग्राम हो जायेंगे। कायदे से एक दिन मुझे भी तो पिक्चर दिखलाने का अवसर मिलना चाहिये।"

किसी के आने की आहट मिली। वातों का क्रम वदल दिया गया। प्रतिभा की भाभी ने परदा हटाते हुए अन्दर प्रवेश किया। उसके वैठने के उपरान्त दूसरी वातयें चल पड़ी। वीच-वीच में अमरनाथ और प्रतिभा प्रीति भरी निगाहों से एक-दूसरे को देखकर शरीर को नस-नस में एक अनुठी स्फूर्ति का—सिरहान का अनुभव कर लेते थे। लगभग तीन वजे अमरनाथ एक वहाना वता कर उठ खड़ा हुआ। वह शाम की चाय वहनोई के साथ ही पीना चाहता था। ओंकार के आ जाने पर देर हो जाने की सम्भावना थी। फाटक पर अमरनाथ ने धीरे से कह दिया, "कल वारह वजे ताज पर मैं आप की प्रतीक्षा करूँगा।" और वह वाहर सड़क पर वढ गया विना प्रतिभा को कुछ कहने का अवसर दिये हुये।

दूसरे दिन अमरनाथ वारह वजे ताजमहल पर उपस्थित था। यह

वही ताज है, जिसके सम्बन्ध मे साम्राज्ञी मुमताज महल ने अपने पति की भुजाओं में, अन्तिम घड़ियाँ गिनते हुए कहा था—"मेरी कब्र पर ऐसा मकबरा बनाया जाय जिसकी भव्यता की तुलना संसार का कोई भी भवन न कर सके।"

आकाश मे छोटे-बड़े बादलों के आने-जाने का तारतम्य लगा हुआ था, जिसके कारण कभी छाया और कभी धूप के प्राकृतिक सुख का आनन्द लुट रहा था। हवा में ठन्डक थी, इस कारण वातावरण अधिक ठगिया बन बैठा था। पाँच मिनट और बीत गये। अमरनाथ ने एक बजे तक का इन्तजार करने का निश्चय किया हुआ था। उसने जेब से रूमाल निकाल कर मुँह पोंछा। पुनः घड़ी में समय देख कर उठने को ही था कि सामने से प्रतिभा आती हुई दिखलाई पड़ गई। वह उचक कर खड़ा हो गया। प्रसन्नता की सीमा न रही। सम्भवतः प्रतिभा ने अभी उसे नहीं देखा था। उसकी आँखें इधर-उधर ढूंढ रही थी। अमरनाथ पेड़ की ओट मे हो गया। प्रतिभा समीप आई। वह हाथ जोड़ता हुआ पुनः सामने आ गया। प्रतिभा झिझक कर सभल गई।

"बड़ी देर से प्रतीक्षा मे खड़ा हूं।" वह मुसकराया, "आइये, इधर बैठे।" प्रतिभा उसके संग-संग मुड़ पड़ी।

उद्यान मे कुछ अन्दर जाकर एक कुंज के पीछे, दोनों आमने-सामने बैठ गये। प्रतिभा ने गर्दन झुकाली थी। वह उस समय कुछ लज्जा का अनुभव कर रही थी। अमरनाथ भी मौन था। उसका सोचा हुआ सब भूल गया था। कल से आज तक की सारी तैयारी मिट्टी मे मिल गई थी। वह क्या कहे, यही नहीं समझ पा रहा था। जल्दी मे उसके मुंह से निकला, "अब तो मैंने आगरे मे रहने का निश्चय कर लिया है। कानपुर नही जाऊंगा।"

प्रतिभा का सिर ऊपर उठा और नेत्रों से आश्चर्य के भाव व्यक्त किये।

"मैं झूठ नहीं कह रहा हूं। एक उपन्यास यहीं रह कर लिखूंगा।

बहन और बहनोई की ऐसी ही इच्छा है। आपकी क्या राय है ?"

"मेरी क्या राय हो सकती है ? आपने जो सोचा होगा, ठीक ही सोचा होगा।"

प्रतिभा का उत्तर अमरनाथ को अच्छा नही लगा। उसने अनायास हाथ बढा कर उसका हाथ पकड लिया, "क्या अब भी आप मुझको अपने से अलग समझती है ?"

प्रतिभा चुप रही।

अमरनाथ भी चुप हो गया।

मिनट-दो मिनट बाद प्रतिभा के मुँह से निकला, "चलिये अब चले।" उसने धीरे से हाथ खीच लिया।

"आपने मेरी बात का उत्तर नही दिया।"

"किस बात का ?"

"वही जो मैंने पूछी थी।"

"क्या प्रत्येक बात के लिये उत्तर देना आवश्यक होता है ?"

अमरनाथ का अग-अग झूम उठा, "मेरी तरफ देखिये।"

'क्यो ?"

"देखिये तो।"

प्रतिभा की पलके उठी, "बताइये।"

अमरनाथ ने उसकी आँखो मे अपनी आँखे डाल दीं। क्षण भर के लिए दोनो एक-दूसरे मे खो गये। किसी के पैरो की आहट मिली। तल्लीनता भग हो गई। मुडकर देखने पर एक विदेशी युवक-युवती आलिगनों में कस रहे थे। प्रतिभा ने मुँह दूसरी ओर कर लिया। अमरनाथ ने पुनः उसका हाथ पकड लिया। प्रतिभा ने हाथ छुड़ाने का प्रयत्न किया।

"क्यो ?" अमरनाथ ने पूछा।

"नही। मुझे यह सब अच्छा नही लगता है।" उसने छुडा लिया।

८

यद्यपि वत्तीस वर्षीय कथाकार अमरनाथ, गौरवर्ण का छरहरा मनुष्य था, किन्तु देखने-सुनने मे सत्ताईस-अट्ठाईस से अधिक का नही प्रतीत होता था। उसका व्यक्तित्व आकर्षक था एक कलाकार जैसा। पहनने ओढ़ने में, चलने-फिरने मे और बात-चीत मे एक अन्दाज था, जो सड़क पर चलने वालों तक को आकर्षित करने मे समर्थ था। इनके अतिरिक्त ईश्वर ने उसे और गुण भी दे रखे थे। वह गायक था, वक्ता था और एक सफल अभिनेता भी था। हिन्दी मे कवितायें और उर्दु मे नज्मे और गज़लें लिखता था यद्यपि कवि सम्मेलनों और मशायरो मे वह कभी जाता नही था, किन्तु जब कभी जाता तो उसकी आवाज श्रोताओ पर छा कर रह जाती। दूसरे कवि या शायर थोड़ी देर तक बड़ी परेशानी का अनुभव करते।

अमरनाथ अभी तक अविवाहित था। जिन दिनों वह नौकरी मे था। शादी के लिए बहुत लोग आते रहते थे पर वह अकारण शादी टालता रहा था। दुर्भाग्य से अथवा सौभाग्य से नौकरी छूट गई। उसने साहित्यिक क्षेत्र मे पदार्पण किया। विवाह का विचार पूर्णतः समाप्त हो गया। उसके ख्याल से वर्तमान युग मे विवाह करना बिना पूंजी के दरवाजे पर हाथी बांधना-जैसा था। अमरनाथ आर्थिक अभावों से मुक्त नही था और निकट भविष्य मे भी मुक्त होने की सभावना नही थी। अतः विवाह न करने का उसका निर्णय उचित था। कारण, भविष्य में नौकरी न करने के साथ-साथ जिन्दगी मे कुछ कर गुजरने की अभिलाषा जो बलवती हो उठी थी। परन्तु आगरा आने पर, उसके जीवन ने एक नया

मोड़ लिया था। प्रतिभा का प्रेम उसे कुछ सोचने के लिये विवश करने लगा था। वैसे अभी ऐसा सोचना, वुद्धिमत्ता के स्थान पर भावुकता का ही परिचय देना था। क्योकि अभी उसे वहुत कुछ प्रतिभा को समझना था, उसके मनोभावों को जानना था और जानना था उसकी जिन्दगी के इरादों को।

संध्या समय मेघो की चढाई आरम्भ हो गई थी और कभी भी पानी वरस जाने की सम्भावना भी पाई जाती थी; फिर भी मालती के साथ प्रतिभा अमरनाथ के घर आई। अमरनाथ खिल उठा। वड़े आवभगत से उसने दोनो को विठलाया और वहन तथा वहनोई को अन्दर सूचना देने के लिए चपरासी को कहा।

लगभग घंटे-डेढ़ घंटे तक चाय-नाश्ते के संग-संग विभिन्न विषयो पर वार्ता चलती रही। इसके पश्चात दोनों ने चलने की आज्ञा ली। अमरनाथ भी उनके साथ बाहर निकला। सड़क पर वत्तियाँ जल गई थी। तीनो टहलते हुए 'लाजपत कुज' की ओर वढ चले। मालती को वीच मे डाल कर, अप्रत्यक्ष रूप से अमरनाथ और प्रतिभा की प्रेम भरी वाते होने लगी। आगे चौराहे से तीनो दाहिनी ओर मुड़ गये और उधर काफी दूर तक निकल जाने के वाद लौटे, फिर मालती को उसके घर छोड़ा और वीमानगर को मुड़ पड़े।

वादलो मे गरगराहट हुई, हवा मे तेजी आई और वूंदा-वांदी होने लगी। दोनो ने पैर वढ़ाये। रुकने के लिये कोई स्थान नही था। विजली कड़की और पानी जोर का आ गया। दोनो भागे। आगे एक अधूरा वना हुआ वगला था। दोनो ने उसके वरामदे मे शरण ली। अंधेरा ऐसा था कि हाथ को हाथ नही सूझता था। अमरनाथ ने छेड़छाड़ आरम्भ की, "आज एक वड़ा गलत तजरवा हुआ।"

'क्या ?"

"स्टूडेन्ट लाइफ मे किसी किताव मे पढ़ा था, "लिपट जाते हैं वह विजली के डर से, इलाही यह घटा दो दिन तो वरसे।" लेकिन क्या

बताया जाये, यहाँ बिजली भी चमक रही है और पानी भी बरस रहा है फिर भी...।"

"अच्छा चुप रहिये। कल मैं आपको मना कर चुकी हूँ।"

अमरनाथ हँस पडा। बिजली पुनः चमकी। अमरनाथ ने अनायास प्रतिभा को अपनी भुजाओं मे आबद्ध कर लिया। दोनो एक-दूसरे में खो गये। कुछ समय उपरान्त प्रतिभा ने अपने को अलग कर लिया। बाँध टूट जाने पर पानी थामे नही थमता। अमरनाथ ने पुन. प्रतिभा का हाथ पकडा। प्रतिभा ने शीघ्रता से हाथ खींच लिया, "नही। सीमा का उल्लंघन नहीं होना चाहिये। यह अनुचित है।" उसकी आवाज में गंभीरता थी।

अमरनाथ रुक गया किन्तु प्रतिभा के मनोभाव वह पूर्णतः समझ नही सका था, "आपको सम्भवतः मेरे हृदय पर विश्वास नही है ? खैर, लेकिन इतनी मेरी अभिलाषा अवश्य है कि अगर आप के पास इसे परखने का कोई साधन हो तो...।"

"अगर मुझे विश्वास न होता तो मैं आपके इतने समीप आती कैसे ? बदाग मेरी तरफ से था, न की आपकी तरफ से। मेरी बातो पर आप दूर तक सोचने की कोशिश करे। मुझे इन चीजो से नफरत नही है, पर उचित अवसर आने पर। हम दोनो को अपनी परिस्थितियों पर भी ध्यान रखना है। इसे आप मानने से इन्कार नहीं कर सकते कि सेक्स की फीलिंग, लव की बुनियाद को कमजोर बनाती है।" अंधेरे और आमने-सामने की बातचीत मे यही अन्तर होता है। सब कुछ कह देने मे भी झिझक नही होती है।

"नही।"

"तब ऐसा क्यो ? क्या आपको मेरी फीलिंग मे किसी दूसरी चीज का आभास मिलता है ?"

अमरनाथ चुप रहा।

"बोलिये।"

"नही ।"

"फिर ?"

अमरनाथ क्या कहे । कोई जवाब हो तब न । वह पुन. चुप हो रहा ।

पानी कुछ थमने-सा लगा था । प्रतिभा ने बरामदे के आगे हाथ निकालकर पानी का अनुमान लगाया और बोली, "मैं अब चलूंगी । आप दूसरी तरफ से जाइयेगा । कल घर आयेंगे या कही और जाने···।"

"शायद बहन के साथ पिक्चर जाना पड़े इसलिये मुश्किल रहेगी ।"

"तो परसो ।"

"हाँ ।"

"आप शायद नाराज हो गये ?"

"नही । नाराज होने की क्या बात ?

"है । अब आज नही परसो बताऊँगी ।" उसने पैर उठायें, "दोपहर मे आयेंगे या शाम को ?"

"शाम को ।"

"नमस्ते ।" वह तेजी से निकल गई ।

अमरनाथ वही खडा रहा और काफी समय तक खडा रहा । पानी थम चुका था , केवल झीसी मात्र थी । तब भी वह रुका रहा । क्या करता, मजबूरी थी । मस्तिष्क, प्रतिभा के प्रश्नो को लेकर ऐसा उलझ गया था कि बिना सब का हल निकाले चलने की इच्छा नही हो रही थी । सडक पर दो-एक लोग आने-जाने लगे । साइकिले भी दौड़ने लगी । अमरनाथ को निकलना पडा जब कि अभी कई प्रश्नो के हल शेष रह गये थे ।

× × ×

अमरनाथ की मुलाकातें होती रही—कभी यहाँ तो कभी वहाँ । बीच-बीच मे जब-तब मालती के सग-सग सिनेमा के भी कार्यक्रम बनते रहे । कभी-कभी सिकन्दरा, एतमाद्दौला, और ताजमहल के भी चक्कर लगते रहे । बडी-बड़ी और गहरी-गहरी बातें होती रही । प्रेम, आदर्श

और सेक्स को लेकर बहसे होती रही—और अनूठे-अनूठे तर्क भी रखे जाते रहे। प्रतिभा, आदर्श का पक्ष लेकर, सेक्स को स्वार्थ प्रधान बताती और एक सीमा का निर्धारण करती, जबकि अमरनाथ उसे प्राकृतिक कहकर, आदर्श को थोथी बकवास कहता।

इस प्रकार विचारो मे मतैक्य न होने पर भी, वे एक-दूसरे के प्रति दिन-पर-दिन आकर्षित होते गये। प्रतिभा को अमरनाथ की कुछ चीजें बहुत पसन्द थी, जिन्हे वह अद्वितीय समझती थी और ऐसी ही कुछ चीजे अमरनाथ के लिये प्रतिभा मे थी। इन तीन महीनो मे प्रतिभा ने भली-भाँति समझ लिया था कि अमरनाथ हृदय से निश्च्छल, मन से उदार, असाधारण परोपकारी, भावनाओ से भावुक और प्रेम का उपासक है। वह मुँह से जो भी कहता हो किन्तु अन्तर से प्रेम के आदर्श रूप का ही समर्थक हैं। वह प्रेम को धरोहर की भाँति रखना चाहता है—ताले मे बन्द करके।

उधर अमरनाथ की बुद्धि ने निर्णय दिया था—प्रतिभा हृदय से निष्कपट और उदार है। स्वार्थ की भावना उसमें नही के बराबर है। ईर्ष्या जानती तक नही, और दूसरो के मौकों पर काम आने वाली है। वह स्त्री जाति में अपवाद स्वरूप है।

ये हैं दोनो की बढ़ती हुई घनिष्ठता के आधार। यद्यपि अमरनाथ जब-तब अवसर मिलने पर अपनी हरकतो से बाज नही आता। उसकी भुजाये प्रतिभा को जकड़ लेती। प्रतिभा अलग हटना चाहकर भी न हट पाती, किन्तु वह कहने से कभी नही चूकती—"आपका बचपना कभी नही जा सकता।" अमरनाथ मुसकराता हुआ दूसरी बातें करने लगता।

एक दिन प्रतिभा से भेंट होने पर अमरनाथ ने कहा, "मेरी तो तैयारी हो गई।"

"कैसी तैयारी ?"

"वही, कानपुर जाने वाली।"

"ऊहूँ।" प्रतिभा ने गर्दन मटकाई, "इसे बहुत बार सुन चुकी हूँ।

और कोई बात कीजिये।"

'सही कह रहा हूँ। बहन भी जा रही है।"

प्रतिभा को आश्चर्य हुआ, "कब ?" वह अमरनाथ की बनावटी गंभीरता के चक्कर मे आ गई।

"परसो या तरसो।"

"लौटियेगा कब तक ?"

"अब लौटना कहाँ हो सकेगा ?"

"क्यो ?"

"क्यो क्या ? मेरा मकान कानपुर मे है आगरे मे नही।"

प्रतिभा का चेहरा उतर आया। गर्दन झुक गई।

"आप तो कभी कानपुर जाती न होगी ?"

"नही। रिश्तेदारियाँ इलाहाबाद मे है।"

वातावरण मे अधिक गंभीरता लाने के अभिप्राय से अमरनाथ मिनट भर चुप रहा, "अब आपसे कैसे भेंट हो सकेगी ?"

"लेकिन अचानक इतनी जल्दी यह प्रोग्राम कैसे बन गया ?"

"एक न एक दिन तो बनना ही था। अगर सिसटर को न जाना होता तो सम्भवत: पन्द्रह-बीस दिन और रुक जाता। मुझे आगरे में आये तीन महीने से अधिक हो चुके है। रिश्तेदारी का भी तो ध्यान रखना चाहिये।"

प्रतिभा चुप रही।

'अब आपने क्या सोचा है ?" अमरनाथ का प्रश्न था।

"क्या सोचूँगी ? आप यहाँ रहे या वहाँ, क्या अन्तर आने का ? महीने-दो महीने मे कभी दो-चार दिनो के लिये तो आ ही सकते हैं ?"

"लेकिन यह कब तक ? क्या···?"

"जब तक मैं एम० ए० और एल० टी० करके किसी कालेज में लग न जाऊँ। हम या आप, क्या उस स्थिति मे है जिसकी ओर आपका संकेत है ? जीवन की बड़ी-बड़ी समस्यायें हैं न।" आप नौकरी कर नही

सकते और लेखन से उतनी इनकम है नही। तब तीसरा रास्ता वही है जो मैंने बतलाया है, या और कोई सूरत है ?"

"मैं नौकरी कर लूंगा।" अमरनाथ ने और गहराई तक जाने का प्रयत्न किया।

"आप! नौकरी करेंगे।"

"आपकी खातिर।"

"तब आप मुझे जो कहिये वह कर डालूं। मगर इतना समझ लीजिये कि आपका यह जोश बहुत जल्द ठंडा पड़ने वाला है। अन्त में मुझे वही करना होगा जिसे मैं आज करने को कह रही हूं।"

अमरनाथ के अधरो पर मुसकराहट आई। उसने अपना हाथ बढ़ाकर प्रतिभा का हाथ पकडा और खीच लेना चाहा। प्रतिभा झिटकती हुई पीछे हट गई, "क्या करते हैं ? भाभी आ गई तो ?"

अमरनाथ मुसकरा उठा। इस समय वह प्रतिभा के साथ ड्राइंग-रूम में बैठा था। श्रीमती प्रसाद अर्थात प्रतिभा की भाभी सम्भवतः अन्दर सो रही थी। समय दोपहर का था। अमरनाथ बोला, "बहाने बना लीजिये। देखना है कितने बहाने आपको आते हैं। अब मैं यहां दो साल रहूंगा। समझ में आया सरकार के।"

"सब समझा है। दो साल रहिये या पाँच साल, बहानों मे कमी नही आने की। बहुत है। लडकियो के चक्कर मे अभी आप आये कहाँ हैं ?"

"अच्छी बात है। यह भी देखना है। अब तो दो वर्ष का लम्बा पीरियड है। लड़को वाले हथकंडे दिखलाये जायेंगे।"

मन-ही-मन प्रसन्नता का अनुभव करती प्रतिभा मुँह बनाती हुई उठकर अन्दर चली गई। पानी पिया और अमरनाथ के लिये भी एक गिलास मे ले आई, "पानी पियेंगे ?"

अमरनाथ ने गिलास ले लिया, "कल बहन और बहनोई साहब से रात के बारह बजे तक बाते होती रही। मेरे बार-बार नही करने पर

भी, अन्त मे मुझे विवश होकर उनकी बात रखनी पड़ी। वे लोग मुझे किसी हालत मे यहाँ से जाने देना नही चाहते है। अब मैं सोच रहा हूँ कि जब टाइम है तो क्यो न अंग्रेजी से एम० ए० कर लूं। सबेरे दो घंटे की बात है ? आपकी क्या राय है ?"

"बहुत अच्छा रहेगा। दिन का वक्त नावेल लिखने के लिये रखिये और रात का स्टडी के लिये।"

"और प्रतिभा से मिलने के लिए कौन-सा वक्त रहेगा ?"

"कोई नहीं। अब मुलाकात बन्द।"

"फिर तो हो गया। अमरनाथ बे-मौत मारे गये। जिनके लिये रुकना हुआ उनसे तो मुलाकात नही होगी, और बहनोई साहब का एहसान जिन्दगी भर के लिए अलग।"

"एहसान क्यो ? उन्ही के रोकने पर तो आप रुके है ?"

"जी नही। प्रतिभा जी के रोकने पर रुका हूँ। उनका तो एक बहाना है।"

प्रतिभा मुँह बिरा कर मुस्काने लगी।

६

अक्तूबर के आरम्भ मे अमरनाथ ने बलवन्त राजपूत कालेज में अपना नाम एम०ए० मे लिखवा दिया। लेट एडमीशन के लिए उसके बहनोई को प्रिन्सिपल से सिफारिश करनी पड़ी थी। अंग्रेजी मे एम० ए० करने का सुझाव भी उसके बहनोई का ही था और अमरनाथ ने इसलिये पसन्द किया था कि थोड़े परिश्रम में एक नई डिग्री मिल रही थी। साथ ही इस बहाने वह दो साल तक आगरे मे भी रह सकता था। प्रतिभा के

विना अब चैन कहा था ? लगी मे ऐसी ही हालत हो जाया करती है।

अमरनाथ के दरजे मे पन्द्रह लडके और दस लड़कियाँ थी। लडकियो मे केवल तीन-चार से ही आवश्यकतानुसार जब कभी दो-चार बातें कर लेता, बाकी से नही। उसे उनकी अगरेजियत से नफ़रत थी। विदेशी भाषा, ज्ञान वृद्धि हेतु पढ़ी जानी चाहिये न कि अपने को उसी तौर-तरीके में ढाल देने के लिये। लडकों के बीच भी अपना दायरा सीमित था। एक से ही उसकी दुआ-बन्दगी होती थी। केवल एकमात्र राजेश ऐसा लड़का था, जिससे उसकी घनिष्टता बढ़ गई थी। राजेश उसे कई कारणो से पसन्द था।

अमरनाथ का कार्यक्रम बन गया था। सवेरे कालेज जाना, दोपहर मे बारह से चार तक लिखना और रात मे आठ से ग्यारह तक पढना। सध्या का समय मिलने-मिलाने और घूमने-घामने के लिये था विशेप अवसरो की बात दूसरी थी। मौके के मुताबिक सिनेमा या कोई और प्रोग्राम प्रतिभा द्वारा बनाने पर उसका वह पूरा-पूरा लाभ उठाने का प्रयत्न करता था। समय-सारिणी इन मे दखल नही डाल सकती थी। वैसे प्रतिभा और जज साहब के परिवारो मे इतनी घनिष्ठता बढ़ गई थी कि अब वह घंटो प्रतिभा के घर पर उसके साथ अकेला बैठा बाते करता और करता भी था। प्रतिभा भी कभी-कभी मालती के साथ, तो कभी अकेली अमरनाथ के बगले पहुँच जाती और बाहर लान में, या ड्राइंग-रूम मे,बैठी बातें करती रहती। यह जानते हुये कि दोनो एक-दूसरे को चाहते है, फिर भी कोई कुछ कहने मे असमर्थ था। और उसका सारा श्रेय प्रतिभा को था। उसने अपने और अमरनाथ के बीच की दूरी को सदैव बनाये रखा था। यद्यपि इतना आगे बढ जाने पर भी यह स्थिति बनाये रखना-सा बड़ा कठिन था, किन्तु प्रतिभा का विवेक, उसकी इन्द्रियों पर सदैव हावी बना रहता था। अमरनाथ की सारी कोशिशे, दलीलें तथा दूसरी समझाने वाली चीजे, निष्फल रहती थी। एक-दो बार उसने जबर-दस्ती भी करने का प्रयत्न किया था, जिसके लिये लिए उसे बाद मे बड़ा

पछतावा रहा और प्रतिभा से बार-बार क्षमा भी माँगी थी।

अब अमरनाथ को प्रतिभा द्वारा निर्धारित सीमा के भीतर ही रहना पड़ता था। उसकी हाँ में हाँ और उसकी ना में ना। जहाँ उसने चाहा ब्रेक लगा दिया। अमरनाथ नतमस्तक होकर सब स्वीकार करता। मज़ाक में जब-तब अवश्य कह देता, "तुमने तो अभी से मुझे चिड़ी का गुलाम बना लिया है।"

"क्या करती जब बनने वाला मिल गया तो बना लिया।"

"तो इसमें भी मेरी कमजोरी है ?"

"और किसकी हो सकती है ?"

"अच्छी बात है। कल से देखूँगा।"

"कल से क्या देखियेगा ? मेरे यहाँ आना बन्द कर दीजियेगा, यही न ?"

"बिल्कुल, तभी तो मालूम होगा कि गुलाम है कौन ? पुरुषों के लिए बहुत से रास्ते खुले हैं मिस साहब। और फिर मेरे लिये क्लास की ही तमाम लड़कियाँ आजकल पीछे पड़ी रहती हैं।"

"अ ह ह ह, क्या कहते हैं ? अब तो मेरी सलाह है कि उसे भी करके देख लीजिये। तमन्ना न रह जाये। अन्त में तो बुद्धू घर को लौटकर आयेंगे ही।" वह मुसकराने लगी।

अमरनाथ भी हँसने लगा। चुहलबाजी समाप्त हुई। अमरनाथ ने क्षण दो क्षण सोचने के उपरान्त पूछा, "मान लो प्रतिभा अगर किसी लड़की से मेरा रोमान्स हो जाये तो तुम क्या करोगी ?"

"कुछ नहीं।"

"कुछ नहीं ?"

"बिल्कुल कुछ नहीं।"

"क्यों ?"

"क्यों क्या ? क्या आपको रस्सी में बाँधकर रखूँगी ?"

"लेकिन पीड़ा तो जरूर होगी।"

"एकदम नही।"

"यह मैं नही मान सकता।"

"यह आपकी मरजी है। वैसे मुझे अपने हृदय पर वड़ा भरोसा है। आपका रोमान्स चाहे जितनी लडकियो से हो, पर अन्त मे आपको मेरे पास ही आना होगा। मैंने जो कुछ आपको दिया है, वह किसी दूसरी लड़की से मिल सकेगा—मुझे सन्देह है। और जव तक वह मिलेगा नही, आपका कही टिकना असम्भव है।"

अमरनाथ प्रतिभा को देखता रह गया। वह अक्षरशः सत्य कह रही थी। प्रतिभा ने केवल शरीर नही दिया था शेप वह अमरनाथ को समर्पित कर चुकी थी। उसका प्रेम आत्मिक प्रेम था, जो अन्यत्र मिलना दुर्लभ था। अमरनाथ भली-भाँति समझ चुका था कि उसके जीवन में किसी स्त्री विशेष से अधिक उसके निष्कपट मन को आवश्यकता थी। उसकी प्राप्ति के लिये यदि उसे सयोग वाले सुख से भी वचित रहना पड़े तो कोई चिन्ता नही थी।

"आप मुझे इस तरह क्यो देखने लग गये ? क्या मेरा कहना गलत है ?"

"विल्कुल नही। लेकिन वड़ा कॉनफिडेन्स है तुम्हे अपने ऊपर।"

"अपने उपर नही आपके ऊपर। क्या समझे ?"

अमरनाथ ने अपना हाथ बढ़ा कर धीरे से उसका हाथ पकड़ लिया।

१०

कालेज मे एक पेड़ के नीचे वैठते हुये राजेश ने अमरनाथ से कहा, "कल दो मुक्तक रात मे लिखे थे, आपको सुनाऊँ ?" प्रोफेसर के न आने

के कारण पहला घंटा खाली था।

"सुनाओ।" अमरनाथ बोला।

राजेश सुनाने लगा—

'बात उनकी है बताये से नही बनती है,
पीर अपनी है दवाये से नही दबती है,
पड गई जान दो पत्थर के बड़े पाटों में—
क्या करूँ अक्ल भी अब काम नही करती है।'

"बहुत अच्छे।" अमरनाथ ने दाद दिया, "बहुत अच्छे राजेश। "पड गई जान दो पत्थर के बड़े पाटों मे—बड़े कमाल की लाइन है। फिर सुनाओ।"

राजेश ने उसे दूसरा मुक्तक सुनाया—

'वह भुलावे के लिए मशहूर है,
पास रहकर भी बहुत कुछ दूर है,
राजे उलफत किस तरह समझा करें—
नर्म दिल है कि या मगरूर हैं।

"वाह, वाह। तुम तो छिपे रुस्तम निकले यार। मालूम पड़ता है कही गहरी चोट खा गये हो? 'नर्म दिल हैं कि या मगरूर है'—क्या अभी अनुमान नही लग पाया है?" वह मुसकराया।

राजेश भी मुसकराता हुआ दूसरी ओर देखने लगा। उसने कोई जवाब नही दिया। सम्भवतः हिचक रहा था।

"बात टालने की नही होती भाई जान। बताओगे, तो लेखक के तजरूबो से लाभ उठाओगे।"

राजेश फिर कुछ न कह सका। उसी प्रकार मुसकराता रहा। अमरनाथ ने दूसरी बात आरम्भ कर दी। वह राजेश की झिझक को समझ रहा था। थाड़ी देर बाद घटा बोला। दोनो उठ पड़े।

साढ़े नौ बजे तक एम०ए० के सारे घटे समाप्त हो जाते थे। छुट्टी होने पर अमरनाथ नें घर की ओर पैर बढ़ाये और राजेश ने लाइब्रेरी

की ओर। इधर महीने-दो महीने से चारू वर्मा के साथ जो उसी की कक्षा की एक छात्रा थी—घनिष्ठता बढ़ने लगी थी। जब तब बातो मे अप्रत्यक्ष रूप से कुछ कह देने की हिम्मत खुलने लगी थी। समय के साथ साथ घनिष्ठता की वृद्धि हेतु नये-नये कदम उठाये जाने लगे थे।

चारू लाइब्रेरी मे, कोने वाली मेज पर बैठी पुस्तक के पन्ने उलट रही थी। राजेश ने साहस दिखाया और उसकी मेज के समीप जाकर पूछा, "आपकी स्टडी अभी से आरम्भ हो गई।"

"क्यो, जानवरी खतम होने को है अब भी नही शुरू होगी। आज आप कैसे रुके है ?"

"प्रिन्सिपिल साहब से बात करनी है।" उसने बहाना बताया, "आप क्लासेज ओवर होने पर डेली रुकती हैं क्या ?"

"नही, कभी-कभी।"

"कल रुकेंगी ?"

"क्यो ?" चारू वर्मा उसके भाव को समझ कर भी नासमझ बन गई।

"वैसे ही पूछा।" राजेश के पास अभी इतनी हिम्मत कहाँ थी जो क्यों का कारण बता सके।

"कुछ ठीक नही। रुक भी सकती हूँ और नही भी, मूड पर है।" वह पन्ने उलटने लगी।

राजेश को चलने के लिये बाध्य होना पड़ा। वह आगे कौन-सी बात करे सोच न सका। चारू की भी यही हालत थी। वह भी बाते करना चाहती थी। राजेश से बाते करते समय नामालूम उसका दिल धड़कने क्यो लगता था ?

राजेश बाहर आकर कुछ सोचता रहा। वह किसी बहाने पुनः चारू से बातें करना चाहता था। परन्तु कदम उठ-उठकर रुक जाते थे और अन्त तक लाइब्रेरी मे जाने का उसे साहस न हो सका। खिन्न मन वह साईकिल-स्टैंड की ओर मुड़ गया। वहाँ से साईकिल निकाली और घर को चल पड़ा। अनायास कालेज के फाटक पर पहुँच कर उसकी साईकिल

रुक गई। उसकी बुद्धि ने एक नया उपाय सुझा दिया था। वह लौट पड़ा और पास ही एक पेड़ के नीचे खड़ा हो गया। चारू के आते ही प्रतिक्षा होने लगी।

दस, पन्द्रह और वीस मिनट वीत गये। चारू निकलती हुई दिख-लाई नही पड़ी। राजेश की व्यग्रता वढ़ गई। साथ ही आने-जाने वाले विद्यार्थियो की घूरती हुई दृष्टि से भी कुछ उलझन होने लगी थी। और दस मिनट वीते। चारू आती हुई दिखलाई पड़ी। राजेश ने अपना मुंह दूसरी तरफ कर लिया, जैसे किसी और की प्रतीक्षा मे खड़ा हो। हृदय धक करने लगा था। ज्यों-ज्यो चारू समीप आती गई धुकधुकी वढ़ती गई।

चारू भी राजेश को दूर से देखकर कुछ सहम गई। उसके मस्तिष्क में वहुत से प्रश्न इकट्ठे कौंध गये, और किसी पर कुछ सोचना उसके लिये मुश्किल पड़ गया। वह ठिठरती हुई वढ़ती रही। राजेश समीप आ गया। वह अव भी दूसरी ओर मुंह किये खड़ा था। जव चारू चार-छः गज के फासले पर रह गई तो उसने मुंह घुमाया और तनिक चौंककर पूछा, "आप। वड़ी देर तक स्टडी चलती है ?"

"वड़ी देर क्या ? अभी दो घंटे भी नही हुये। साल-भर तो कुछ पढ़ाई हुई नही। अव पढ़ने से क्या होता है ? आप किसका वेट कर रहे हैं ?"

"मेरे मुहल्ले का एक लड़का किसी काम से आया हुआ है। गेट पर मिल गया था। उसकी इन्तजारी है, लेकिन अव चलिये। पता नहीं कव तक भाई का लौटना हो।" उसने साइकिल वढ़ाई।

"आप रहते कहाँ हैं ?"

"वजीरपुरा मे, और आप ?" राजेश का प्रश्न था।

"नई राजामडी मे।"

"आप ने वी०ए० कहाँ से किया था ?"

"मथुरा से। फादर वहीं रहते हैं।"

"और यहाँ ?"

"मेरे अंकिल हैं। आपके अमरनाथ जी।" चारू ने विपयान्तर किया, "लिखते तो बढिया हैं, लेकिन कुछ रूखे नेचर में मालूम होते हैं। कल, मैंने उनका एक नावेल पढ़ा था। यहाँ लाइब्रेरी में है। आपकी तो उनसे खूब पटती है ?"

"रूखे तो नही है, मगर कुछ सोचने-समझने मे भिन्न होने के कारण, मालूम ऐसे ही होते हैं।"

कालेज का फाटक आ गया, "अच्छा।" वह बड़े अन्दाज से हाथ हिलाती हुई दाहिनी ओर मुड़ गयी।

विवश राजेश वायी ओर मुड़ गया कुछ सोचता हुआ। अपने विचारो की तन्मयता में वह काफी दूर तक पैदल ही चलता चला गया। उधर रास्ते मे चारू ने भी निष्कर्ष निकाल लिया था—राजेश केवल उसी की प्रतिक्षा मे रुका हुआ था। मौहल्ले वाले लड़के का वहाना मात्र था।

चारू औसत कद और हलके वदन की सांवली लडकी थी। चेहरा भरा हुआ कुछ लम्बा था। वदन सुडौल था पर कुचों और नितम्बों की सुडोलता कालेज ऊपर थी। जिधर से निकल जाती, लड़कों की आंखे देखती रह जाती थी। चारू के चाचा की कपड़े की वड़ी दुकान 'किनारी वाजार' मे थी। नई राजामंडी में उनका सुन्दर वंगला था। नई राजा-मंडी वस्ती, राजामंडी स्टेशन से लगी हुई थी। यहाँ से वलवन्त राजपूत कालेज भी पास था।

उसी दिन से राजेश भी नियमित रूप से लाइब्रेरी में वैठने लगा। चारू कभी आती कभी नही आती। किसी दिन कुछ वाते होती और किसी दिन नही भी होती। कभी वह देखकर भी अनदेखी वन जाती और दूसरी मेज पर वैठ जाती। इस तरह की हरकतें अव वह जान-वूझ कर करने लगी थी। उसे राजेश को उकसाने मे मजा आने लगा था। राजेश भी सव कुछ समझ रहा था फिर भी मौन था। वह जानता था कि जलाने वाले को भी एक दिन स्वयं जलने के लिये वाध्य होना ही

ड़ेगा। भड़की हुई लपटें, जलने वाले और जलाने वाले का विचार ही रखती है।

मिलना-जुलना बढता रहा। छोटी-बडी बातें होती रही। पौधो की ांति जड़ें अन्दर को, और टहनियाँ ऊपर को बढती रही। अदृश विकास ोता रहा। अब चारू भी नियमित रुप से लाइब्रेरी मे बैठने लगी थी। नुपस्थित होने पर स्वयं को पीड़ा होती थी। राजेश को अधिक बढ़ावा दया जाने लगा था। मेज पर आमने-सामने बैठकर बार बार एक-दूसरे ो देखने मे उत्सुकता बरती जाने लगी थी। दरजे मे भी पढ़ते समय कसी न किसी बहाने दो-एक बार एक-दूसरे को देख लेना जरूरी हो या था।

एक दिन लाइब्रेरी से निकलने पर चारू ने पूछा, "रात मे आप कब क पढ़ते हैं ?"

"यही कोई डेढ-दो बजे तक।"

"उफ ! डेढ-दो तक। लिमिट हो गई। तब तो फस्ट क्लास श्योर । टॉप भी कर सकते हैं ?"

"पढाई तो ऐसी ही चल रही है। या तो टॉप करूंगा या जीरो बटा ीरो पाऊँगा।"

"यह क्यों ?"

"ऐसा ही है। अगर एक्जामिनर रतौंधी और दिनौंधी दोनों का ोगी हुआ तब तो टॉप समझिये, और नही तो पटरा साफ।"

"गोया आप पढते नही है सिर्फ किताबे खोलकर रख लेते हैं ?"

"बिल्कुल।"

"लेकिन ऐसा क्यों ?"

"मजबूरी है। किताबें खुली नही कि दिमाग गजमडी पहुँच जाता है और डेढ-डेढ़ दो-दो बजे तक वही चक्कर लगाया करता है।"

"आई सी। दिस इज दी प्वायंट। फिर तो सीरियस बीमारी है। मुश्किल से जायेगी।"

"अच्छा हुआ कि आपसे जिक्र कर दिया। इलाज मालूम हो जायेगा।"

"आँखे नचाती हुई चारू उसे देखकर सामने देखने लग गई। जैसे उसने उसकी शरारतपूर्ण बातों पर डाँट बतलाई हो।

राजेश को प्रसन्नता हुई। उसने पूछा, "शाम को आप का क्या प्रोग्राम रहता है ?"

"कुछ नही। कल जरूर "बेनहूर" देखने चली गई थी। ब्यूटीफुल पिक्चर। आपने अभी देखा है या नही ?"

"अभी नही। किसी दिन जाऊँगा। मैंने भी बड़ी तारीफ सुनी है।"

"उसमे एक सीन चैरियट रेस का है। बहुत ही कमाल का है। आप देखते रह जायेंगे।"

'तब तो दो बार भी देखी जा सकती है।"

"हाँ, देखी तो जा सकती है।"

"फिर एक बात की गुस्ताखी करूँ। हुक्म है ?" राजेश ने उसी गभीरता से पूछा था।

"क्या ?" जल्दी मे चारू के मुँह से निकल गया।

"कल दिन वाले शो का दो टिकट मँगवा लूँ ?"

"हुहऽऽ। वेरी क्लेवर मैन।" वह मुसकराने लगी।

फाटक आ गया। राजेश ने रोकना चाहा किन्तु चारू हाथ हिलाती मुड़ गई।

११

बीमानगर के सामने थोडी दूर पर, "पालीवाल पार्क है और उसी से लगा हुआ वजीरपुरा मोहल्ला। इसी वजीरपुरा मे लबे सड़क सम्राट

अकबर द्वारा बनवाया हुआ। सबसे पुराना गिरजाघर है, जिसे शाहजहाँ ने ईसाइयो से क्षुब्ध होकर, तुड़वा दिया था और बाद मे अपने ज्येष्ठ पुत्र दाराशिकोह के आग्रह पर, पुनः बनवाने की आज्ञा प्रदान की थी। इस गिरजा के सामने से एक सड़क दाहिनी ओर मुड़ती है, जिस पर आगे चलकर राजेश का मकान है। राजेश के माता-पिता नहीं है। दोनो का देहान्त उसके बाल्यकाल मे ही हो गया था। राजेश का लालन-पालन उसकी नानी ने किया था और उसकी पढाई-लिखाई उसके मामा के जिम्मे थी। मामा, मामी, उनके बच्चे और साठ वर्षीय नानी—यही कुल परिवार था। राजेश का मामा, सी०आई०डी०इन्सपेक्टर था। गाँव में तीस-चालीस बीघे जमीन, जिसका एकमात्र उत्तराधिकारी राजेश था। पिता की यही सम्पत्ति उसे धरोहर के रूप मे प्राप्त हुई थी।

आज छुट्टी का दिन था किन्तु लाइब्रेरी खुली हुई थी। चारु के सामने बैठा राजेश जब तब फुसफुसा उठता था। दोनों के सामने पुस्तकें खुली हुई थी। बीच-बीच में पाँच-सात मिनट का पढने वाला अभिनय भी हो जाया करता था—चपरासी तथा अन्य विद्यार्थियो की आँखो में धूल झोकने के लिये। अभी अभिनय का प्रारम्भ ही था कि अचानक अमरनाथ ने लाइब्रेरी मे प्रवेश किया। अमरनाथ की दृष्टि दोनों पर पड़ी। उसने मुँह फेर लिया और अलमारियों मे पुस्तकें देखने लगा। राजेश ने आवाज दी, "इधर भी आने का कष्ट कीजियेगा अमरनाथ जी।" उसे अपने दिल के दर्द को दिखा देने का अवसर अच्छा मिल गया था।

अमरनाथ झूठा आश्चर्य व्यक्त करता हुआ पास में आया, "नमस्ते।" वह बोला।

चारू भी नमस्ते करती हुई खड़ी हो गई, "बैठिये।"

"आप लोगों की पढाई तो बड़ी जोरो में चल रही है। क्या-क्या पढ डाला ?" वह बैठ गया।

"अभी तो कुछ नहीं। हाँ, मिस्टर राजेश की पढ़ाई जरूर

है। आप कौन-सी बुक निकलवा रहे है ?"

"हिस्ट्री की दो-एक देखनी है। पिछले सप्ताह प्रकाशित मेरे लेख पर एक पाठक का पत्र आया है। मेरे लेख की एक ऐतिहासिकता पर उन्हे कुछ भ्रान्तियाँ मिली है।"

"आपका" राजेश बोला, "एक उपन्यास मिस वर्मा ने भी पढा है। बड़ी प्रशसा कर रही थी। लेकिन इन्हे एक चीज की बड़ी गलतफ़हमी है।"

"क्या ?"

"कुछ नही।" चारू बीच मे बोल उठी, "आप भी मिस्टर राजेश क्या बाते करने लगते हैं ?"

"यह तो आपकी ज्यादती है चारू जी।" अमरनाथ ने कहा, "जिसे राजेश जी गलतफहमी बतला रहे है, हो सकता है वह वास्तविक हो। बताने दीजियेगा। भविष्य मे मेरे लिए वह लाभदायक रहेगी।" उसने राजेश की तरफ देखा।

"कोई खास बात नही है। मिस वर्मा का कहना है कि ऐसा सरस लिखने वाला व्यक्ति, इतना रूखा क्यो है ?"

अमरनाथ मुसकराया, "समझा। खैर आज से मिस वर्मा की धारणा बदल जायेगी। अब मुझे रूखा नही समझेगी। क्यो, मेरा अनुमान सही है न ?"

चारू गर्दन झुकाकर मुसकरा उठी।

अमरनाथ ने खडे होते हुये आज्ञा माँगी। जाकर पुस्तके निकलवाई और चलता बना। उधर राजेश पर चारू बरस पड़ी थी। यह कौन-सा आप का तरीका है ? अमरनाथ जी सोचते होगे अजीब लड़की है। आप को बताना नही चाहिये था।"

"लडका भी तो अजीब है। उसे क्यों अलग किये दे रही है।' राजेश ने भावपूर्ण नेत्रो से चारू को देखा, "वह तो···।"

"प्लीज ! पढ़ना शुरू कीजिये। मौका मिला नही कि बातें शुरू कर

-दी। इसके अलावा और भी कुछ आपके दिमाग मे रह गया है ?"

"जगह कहाँ है ? समूचे पर तो मिस वर्मा का अधिकार स्थापित हो चुका है। अब··· ।"

"डोंट डिस्टर्ब मी।" वह पढने लगी।

राजेश भी मुसकराता हुआ पन्ने उलटने लगा।

लगभग ग्यारह बजे पढाई बन्द हुई और दोनो बाहर निकले। चारु चुप थी। राजेश कुछ कहना चाहता था किन्तु क्या कहे, यही नही तय कर पा रहा था। कालेज का वातावरण शान्त और सरस था। वृक्षों पर इधर-उधर चिडियो की चहचआहट कानो को भली लग रही थी। नीरवता मन को गुदगुदाने लगी थी। पर चारु उसी गभीरता के साथ मौन चल रही थी। राजेश ने मौनता भंग की, "क्या सचमुच मैंने बहुत बडी गलती कर दी है ?"

"कोई गलती नही की है।"

"मगर आप नाराज तो दिख रही है। अभी तक तो इस तरह का मूड कभी देखने मे आया नही था। क्या बात है ?"

"कोई बात नही है।"

"फिर भी कुछ न कुछ तो है ही। मैं अपनी गलती के लिये माफी चाहूंगा और ।"

"उहूँ।" चारु बीच मे बोल पड़ी, "आप भी कैसी बाते करने लगते हैं। न तो आपसे कोई गलती हुई है और न मैं नाराज हूँ। रही मेरी मूड वाली बात वह मेरी यों ही है। उसके पीछे कोई कारण नही है। अब तो आपको सतोष है।"

"थोड़ा-थोड़ा।"

"पूरा नही।"

"अभी नही।"

"फिर उसके लिये आप जिस तरह से बताइये मै उसी तरह से कह दूँ। ग़लतफ़हमी से जान छूटी तो दूसरी गलतफहमी सिर पर आ पड़ी।

लड़कियो के साथ बड़ी आफत है। ज्यादा बोलिये तो बुराई और कम बोलिये तो बुराई।"

अनायास राजेश रुक गया।

"क्यो ?"

"आइये, थोडी देर के लिए उस बेंच पर बैठा जाय।"

"आप भी कभी-कभी आर्ट की दुनिया में चले जाते हैं। चलिये।" वह मुंह घुमाती हुई चल दी।

राजेश ने बढ़कर पुनः आग्रह किया, "चारू जी, सिर्फ पांच मिनट। आइये।"

"क्या आये ? कोई तुक भी हो। वहाँ बैठने से फायदा ?"

"बताऊँगा। पहले चलिये तो।"

"नही, मैं नही बैठूंगी।"

"प्लीज, इट इज माइ रिक्वेस्ट…।" राजेश का चेहरा कुछ वैसा हो गया था।

चारू ने राजेश के चेहरे को गौर से देखा और फिर चुपचाप बेंच की ओर मुड़ पड़ी। राजेश गद्-गद् हो आया।

दोनो बेंच पर आकर बैठ गये। चारू बोली, "आप कभी-कभी बेतुकी जिद करने लगते है।" चारू ने सिर लटका लिया, किन्तु हृदय प्रफुल्लित था।

"जिद कहाँ, रिक्वेस्ट किया था और वह भी बहुत डरके।"

"रहने दीजिये। आज लाइब्रेरी में भी आने की आपकी ही जिद थी। बेकार टाइम बरबाद होता है। अब कल से मैं नही आया करूँगी।"

"लेकिन इससे फरक क्या पड़ेगा ?"

"क्यों, टाइम की सेविंग होगी और घर पर स्टडी भी अच्छी होगी।"

"मुश्किल है।"

"क्यों मुश्किल है ?"

"मैं भी तो वही धूप में खिड़की के सामने खड़ा रहा करूँगा। क्या

आप मेरी तरफ देखेगी नहीं ?"

"खिडकियो मे दरवाजे लगे है। वे आसानी से

"आपको भ्रम है। उन्हे वन्द करने मे आपको और अगर दृढ़तापूर्वक वन्द भी किया गया तो उन्हे वहुत समय नही लगेगा। मारने वाले से मरने वाले होती है न। उसकी फरियाद की सुनवाई ईश्वर तक ... है।

चारु मुसकराई और गर्दन घुमाकर राजेश को विशेष भावो सहित देखा। राजेश ने धीरे से हाथ पकड लिया, "मेरी आरजू पर···।"

"छोड़िये।" चारु का दिल धक-धक करने लगा था, "इट इज एन ओपन प्लेस।" वह हाथ खीचती हुई अपनी धोती को ठीक करने लगी, जो वक्षस्थल से कुछ खिसक गई थी। "चलिये अब चले।"

"वस पाँच-सात मिनट और। आज शाम को 'क्वालिटी' मे आइयेगा ?"

चारु ने सिर हिलाकर नाही कर दिया।

"वहुत थोड़ी देर के लिये। उधर कुछ मार्केटिंग भी कर लीजियेगा।" अर्थात् मार्केटिंग के वहाने—राजेश का तात्पर्य था।

चारु ने पुनः सिर हिला कर नाही कर दिया। वह खडी हो गई।

१२

दूसरे दिन चारु लाइब्रेरी मे पढ़ने के लिये नही रुकी। राजेश ने भी कोई विशेष ध्यान नही दिया। सोचा, कोई कार्य आ गया होगा। तीसरे दिन भी उसका रुकना नही हुआ और न उसने कोई कारण ही वतलाया, जवकि राजेश ने जानने का प्रयत्न भी किया था। परन्तु वह

जानबूझ कर कतराती हुई, अपनी सहेलियो के साथ निकल गई थी। राजेश को आश्चर्य के साथ-साथ व्यथा पहुँची थी। वह घर आकर बड़ी देर तक खाट पर लेटे-लेटे, इस आकस्मिक परिवर्तन पर सोचता रहा किन्तु अन्त तक कुछ भी निष्कर्ष न निकाल सका। यद्यपि उसका मन बार-बार कहता रहा कि उसे भ्रम है। चारु के इस परिवर्तन मे कोई विशेष बात नही। वह शान्त हो गया। कुछ संतोष मिल गया था।

जैसे-तैसे दिन और तब रात बीती। दूसरे दिन जल्दी के कारण वह समय से बहुत पहले ही कालेज पहुँच गया। वह चारू की प्रतीक्षा करने लगा। वह आई किन्तु साथ मे और लडकियाँ भी थी। प्रतीक्षा बेकार गई। किन्तु एक बात आज और विशेष अखर गई थी, जिसने तिनके वाले सहारे का भी अन्त कर दिया था। चारू ने उसे एक बार भी मुड़कर नही देखा था।

घंटा बजा। सब दरजे मे आकर बैठ गये। प्रोफेसर महोदय आये। पढाई होने लगी। राजेश ने खाँस-खूँसकर, शिक्षक से दो-चार प्रश्न पूछकर, चारू के ध्यानाकर्षण हेतु बड़े प्रयत्न किये, किन्तु उसकी गर्दन न घूमी तो न घूमी। वह अन्त तक सामने ही देखती रही। घटा समाप्त हुआ। शिक्षक के साथ-साथ चारु भी शीघ्रता से बाहर निकल गई। राजेश का बचा-खुचा भ्रम समाप्त हो गया। फिर भी, मन अभी पलरे मे ऊपर-नीचे हो रहा था। उसके प्रयास तीसरे और चौथे घटे मे पुनः हुये, परन्तु नतीजा वही निकला जो पहले में निकल चुका था। उसका हृदय बैठ गया। विचारों मे खिन्नता आ गई। मन की वेदना उभर उठी और छुट्टी होते ही उसने अपनी साइकिल निकाली और घर को चल पडा। पर फाटक पर पहुँचकर उसकी साइकिल धीमी हुई और बाईं तरफ मुड़ने के बजाय, दाहिनी ओर नई राजा मंडी वाली सड़क पर मुड़ गई। उसकी बुद्धि ने सम्भवतः कोई नया उपाय सुझा दिया था। वह आगे, रेलवे लाइन के समीप, पान वाले की दुकान पर खड़ा होकर चारू के आने की प्रतीक्षा करने लगा।

वड़ी देर तक प्रतीक्षा के उपरान्त भी जव चारू का आना न हुआ तो राजेश चक्कर मे पड गया किन्तु तत्क्षण स्मरण हो आया—कही लाइब्रेरी मे वैठी उसकी वह प्रतीक्षा न कर रही हो। वह साइकिल पर उड़ता हुआ कालेज आया। धड़कते दिल से लाइब्रेरी मे गया पर वहाँ कहाँ चारू थी, वह सिर लटकाये वाहर निकला और चिन्ताओ मे उलझता घर को चल पड़ा। उस दिन उसका खाना-पीना हराम हो गया था। माता तुल्य नानी ने वहुत वार कहा पर 'पेट ठीक नही है' कहकर राजेश ने हर वार नाहीं कर दिया। मुहव्वत के मारो की हालत ऐसी ही हो जाया करती है।

दिन-भर राजेश सोचता रहा। दिमाग मे कई प्रश्न थे लेकिन उनमें से किसी का भी उत्तर नही मिल रहा था। चारू उससे निस्सदेह प्रेम करती थी। कारण, अगर प्रेम न करती होती तो वह कभी वढ़ावा न देती और उसके वढ़ावा न देने पर, हाथ पकड़कर क्वालिटी मे आने का प्रस्ताव, राजेश के वड़े-वड़े फरिश्ते भी नही कर सकते थे। लेकिन इस तरह वढ़ावा देने के वाद, एकदम रोक देने का अभिप्राय? यह तो है नही कि उसने इस चीज को अव वुरा समझा हो। अगर मान लिया जाय उसने वुरा समझा भी है तो साफ कह देने मे क्या उलझन है? यो सामना वचाकर, कतरा कर, निकल जाने का क्या तुक? उसे भय किस वात का? फिर ध्यान मे आया—कही ऐसा तो नही कि वह उसे वुद्धू वना रही हो? कालेज की लड़कियाँ आजकल ऐसा भी करती हैं। उन्हें इस तरह के कार्यों मे वड़ा मजा मिलता है। किन्तु तत्क्षण वुद्धि ने खंडन किया—ऐसा नही हो सकता। चारू मे इस प्रकार के अवगुण नही हैं। वह उच्छृंखल नही है। तव···!

राजेश सोचता-सोचता सो गया। लगभग चार वजे उसकी नीद टूटी। नानी ने भोजन के लिये पूछा। उसने स्नानोपरान्त चाय पीने के लिये कह दिया। नानी ने चाय के सग-संग झटपट परौठे भी तैयार कर दिये। राजेश को भूख तो लगी ही थी, उसने एक-एक करके कई खा

डाले। नानी को सतोष हुआ। राजेश ने कपड़े वदले, और घर से विना प्रयोजन निकल पडा। पुनः वही वात मस्तिष्क मे घूमने लगी। वह सिर लटकाये, सडक के किनारे-किनारे, कितनी दूर निकल गया, उसे विदित नही। अचानक किसी मोटर मे झटके से ब्रेक लगने के कारण जो कर-कराहट हुई तो वह चौंक पड़ा। सामने कोई गाय कार से टकराती हुई वच निकली थी। ड्राइवर ने ब्रेक लगा दिया था। कार के वढ़ जाने पर राजेश ने जो कुछ देखा, उससे वह चकित था। चारू रिक्शे पर वैठी चली आ रही थी। उसने राजेश को देखकर गर्दन झुका लिया था। राजेश को जैसे कुछ हिम्मत आ गई। उसने हाथ देते हुये रिक्शेवाले को रोक लिया। 'नमस्ते।' वह समीप आकर वोला।

चारू ने भी धीरे से उत्तर दिया 'नमस्ते।' उसने अपनी गम्भी-रता मे अन्तर नही आने दिया था।

"कहाँ जा रही हैं ?"

' सिटी स्टेशन के पास मेरी एक फ्रेंड रहती है उसी से मिलने। आप किधर जा रहे है ?"

राजेश ने कोई उत्तर नही दिया। उसे देखता रहा। अनायास उसकी आँखें छलछला आईं। चारू घवरा गई। वह रिक्शे से उतर पडी और पैसे देकर रिक्शेवाले को विदा कर दिया। "आइये।" पाली-वाल पार्क से दूसरा रिक्शा कर लूंगी।" वह चल पडी।

राजेश भी चलने लगा। दोनो मौन थे। इस समय चारू को अपने किये पर वड़ा पछतावा था। वह नही समझती थी कि वात इस हद तक वढ जायेगी। उसने तो चाकू पर सान रखने के निमित्त यह खिल-वाड़ किया था। वह अव माफी माँगना जाहती थी पर कहे कैसे, यही सोच रही थी। अव तक राजेश का मन भी स्थिर हो चुका था। वह उसी प्रकार सिर झुकाये वोला, "मैं आप से एक वात पूछना चाहता हूँ। पूछूं ?"

"पूछिये।"

"मैंने कोई ऐसा कार्य तो किया नही जिससे आप के सम्मान पर धक्का लगा हो ?"

"नही।"

"फिर आपने इस प्रकार का व्यवहार क्यों आरम्भ कर दिया है ?"

"किस प्रकार का ?" चारू अपने बचाव के लिये बहाना ढूंढ़ रही थी।

"इधर कई दिनों से आपने लाइब्रेरी भी आना बन्द कर दिया है और...।" राजेश कह नही पा रहा था। कैसे कहे ?

"कोई रीजन नही हे। यों ही नही आ रही थी। कल से आऊँगी। क्या ये चीजे आपको बहुत बुरी लग गईं ?"

"बोलना भी तो अब आपने बन्द कर दिया है।"

"तभी आपका चेहरा उतरा हुआ है ? बोलना अगर बन्द किया होता तो इस वक्त आपके साथ-साथ क्यो चलती ? आप बड़े टची हैं। लीजिये आपके सामने कसम खाये लेती हूँ, अब ऐसी गलती नही करूंगी। अब रोज़ कालेज से जाते समय आपसे पूछ लिया करूंगी। बस। खुश हैं आप ?"

राजेश ने उसे देखा। चारू मुसकरा रही थी, "ओके नाऊ ? अब मैं जा सकती हूँ ?"

"नही।"

"क्यों ?"

"थोडी देर पार्क मे बैठने के बाद।"

"इसीलिये आपने रिक्शा रोका था ? गलत बात है। किसी ने देख लिया तो ? कल कालेज मे छुट्टी होने के बाद।"

"बहुत थोड़ी देर के लिये। आपको पार्क का अनुमान नही है। कोई नही देख पायेगा।"

"मुझे अच्छी तरह अनुमान है। कल।" उसने जाते हुये एक रिक्शे को रोका, "नमस्ते।" वह मुसकराती हुई बैठ गई।

"रिक्शा चालक ने पैर से पैडिल को दवा दिया।

दूसरे दिन राजेश और चारू की भेंट लाइब्रेरी में हुई। राजेश ने धीरे से कहा, "चलिये, वाहर चले।"

"कहाँ।"

"उधर वेंच पर।"

"इस वक्त। लड़के-लड़कियाँ क्या···?"

"ऊँह। क्या हुआ ?"

"आपको क्या है ? मैं नही जाऊँगी।"

राजेश सोच मे पड़ गया, 'खैर, यहाँ से निकलिये।"

"यह वात दूसरी है। मगर अभी थोड़ी देर और रुककर। कुछ पढ़ाई भी तो होनी चाहिये।"

"उठिये। पढाई का चक्कर तो रोज का है।" वह खड़ा हो गया।

"और यह एक दिन का है ? आप लोगो में यही चीज वड़ी वुरी है।" मुँह पर कुछ रूखे भाव का प्रदर्शन करती हुई वह उठ गई। मुँह मे राम वगल मे छुरी।

दोनो ने पुस्तकें जमा की और वाहर निकले। चारू वोली, "आप वहुत-सी चीजो को समझने की कोशिश नही करते हैं। हम लोगों को साथ देखकर लड़को मे कैसे इशारे होते है आपको अन्दाज है ?"

"छुट्टी हो गई। हुआ कुछ भी नही और इशारे भी होने लगे ?"

"होगा क्या ? आप भी अजीव वात करते हैं।"

राजेश हँसने लगा।

चारू तनिक कुढ़ती-सी वोली, "अव घर जा रही हूँ। मैंने इसीलिये आपसे वोलना वन्द कर दिया था।"

चारू के वनावटी क्रोध को राजेश समझ रहा था। उसने इधर-उधर देखा और हाथ जोड़ता हुआ कह उठा, "ऐसी धृष्टता···।"

"क्या करते हैं ?" वह मुँह मे आँचल दवाकर अपनी हँसी को रोकने का भरसक प्रयत्न करने लगी। राजेश मुसकरा उठा।

दोनो मुड़ते हुए उधर की ओर निकल गये, पर बेकार था। बैठकर बातें करने की वहाँ भी गुंजाइश नही थी। राजेश अवसर को हाथ से निकलने देना नही चाहता था। उसने अविलम्ब प्रस्ताव रख दिया, "क्यो न 'नीरा' चला जाये। यही स्टेशन के पास है। आप समय से घर भी पहुँच जायेंगी।"

"नही। वहाँ भी तो लड़के हो सकते हैं।"

"इस समय नही होगे। और ऐसा है तो मैं आगे चल रहा हूँ। अगर वहाँ इस तरह की कोई बात देखूंगा तो लौट आऊँगा।" नही तो वही बैठा रहूँगा। "आप अन्दर आ जाइयेगा।"

"और किसी दिन के लिये रखिये। आज नही। देर हो जायेगी।"

"बिलकुल नही होगी। बस एक-एक कप चाय पीकर उठ लेंगे। आइये।"

"मिस्टर राजेश ! आप बहुत बैसा दबाव डालते है।" अन्दर से चारू भी चलना चाहती थी।

"मैं चल रहा हूँ।" राजेश लम्बे-लम्बे डग रखता निकल गया।

दिल्ली दिशा से आने वाले देशी अथवा विदेशी पर्यटको के लिये राजामंडी स्टेशन अधिक सुविधाजनक रहता है। इसी कारण इस स्टेशन के समीप होटल और रेस्ट्राँ की बहुतायत है और दिन-पर-दिन इन में वृद्धि होती जा रही है। सरकार की ओर से भी यहाँ एक टूरिस्ट सेन्टर बना हुआ है, जिसमे केवल प्रथम और द्वितीय श्रेणी के पर्यटक ही ठहरने के अधिकारी हैं। तीसरी श्रेणी वालो को भगवान के सहारे छोड़ दिया गया है। इसी स्टेशन पर 'नीरा' एक नया और सुन्दर रेस्ट्राँ अभी कुछ दिनो पूर्व खुला है।

चारू को राजेश रास्ते मे नही मिला वह 'नीरा' पहुँच गई। दरवाजे पर राजेश खड़ा था। दोनों अन्दर आकर एक केबिन मे बैठ गये। बेयरा चाय, कुछ पेस्ट्रीज और एक प्लेट मे तले हुये काजू देकर चला गया। जाते समय उसने परदे खींचकर बंद कर दिये। चारू मेज पर दृष्टि

झुकाये मौन चाय पीने लगी। उसे इस समय बड़ा अजीब-सा लग रहा था।

अपने बायें हाथ को मेज के नीचे से डालकर राजेश ने चारु की मुलायम हथेली को अपनी हथेली मे दबा लिया। चारु ने कोई आपत्ति नही की। राजेश ने पूछा, "छुट्टियों में आप क्या मथुरा चली जायेंगी।"

"हाँ।"

"किसी प्रकार भी रुकना सम्भव नहीं हो सकेगा ?"

"मुश्किल है। फादर के अभी से लेटर आने लगे हैं। आप तो यहीं रहेंगे ?"

राजेश ने सिर हिला कर 'हाँ' कहा, "आप अंकिल से क्यो नही कहला देती ?"

"वह नही कहेगे। फादर की बातों में कोई दखल नही देता है।"

"फिर तो मेरे लिये मौत हो जायेगी। दो-ढाई महीने कैसे कटेंगे ? अगर मथुरा मे आपसे मिलना चाहूँ तो···।"

"मुमकिन नही है। मेरे फादर का टेम्परामेन्ट बड़ा उस तरह का है। आप भूलकर भी ऐसी गलती न कर बैठियेगा।"

आहट मिली। चारु ने हाथ खींच लिया। बेयरा आया, "और कोई चीज लाऊँ साहब ?"

"नहीं। मँगानी होगी तो कह देंगे।"

बेयरा चला गया।

राजेश ने पुनः हाथ पकड़ा, "चिट्ठियाँ भेजेंगी न ?"

चारु ने सिर हिलाकर स्वीकार किया फिर मिनट-दो मिनट के लिये शान्ति बनी रही। राजेश उसे देखने लग गया था—उसके सुडौल मांसल अंगों को निहारने लग गया था। चारु की दृष्टि मेज पर थी। राजेश ने बहुत धीरे से कहा, "चारु !"

"क्या ?"

"मेरी तरफ देखो।"

"क्यो ?"

"देखो तो।"

"कहिये मैं सुन रही हूँ।"

राजेश ने हाथ बढाकर उसकी ठोढ़ी को पकड़ना चाहा। उसने सिर पीछे कर लिया, "नही।" उसके नेत्र राजेश के नेत्रो में समा गये किन्तु तत्काल झुक भी गये, "चलिये अब चले। देर हो जायेगी।"

"कल मैटनी शो पिक्चर चलोगी ?"

"मुश्किल है।"

"कोई भी बहाना हो सकता है। छः के पहले ही खत्म हो जायेगी। बहुत छोटी पिक्चर है।"

"इग्लिश।"

"हाँ।"

पुन बेयरा के आने की आहट मिली। चारू खडी हो गई, "अब चलिये।"

बाहर निकलने पर जब चारू चलने को हुई तो राजेश ने पुनः पूछा, "कल वाला प्रोग्राम याद है न ?"

"नही।" वह कनखियो से देखती हुई बढ गई।

राजेश कालेज को लौट पड़ा। अभी उसकी साइकिल कालेज में थी।

१३

दूसरे दिन कालेज मे भेंट होते ही राजेश ने सिनेमा के प्रोग्राम के सम्बन्ध मे पूछा। चारू ने उचित कारण बतलाकर असमर्थता प्रकट कर

दी पर साथ ही दो-चार दिनो के अन्दर सम्पन्न होने का आश्वासन भी दिया। राजेश प्रसन्न था किन्तु उसे छेड़ने के विचार से बोला, "लेकिन आपने यह नही सोचा कि इन चार दिनो की प्रतीक्षा के कारण जो पीड़ा मिलेगी, उससे मैं किसी भी परिस्थिति का शिकार हो सकता हूँ।"

चारू ने भी उसी प्रकार से उत्तर दिया, "ऐसा भी हो सकता है ? खैर, किसी के वियोग मे दो चीज़े ही पासिबिल हैं, या तो संन्यासी वन जाना या स्यूसाइड कर लेना। स्यूसाइड आप कर नही सकते क्योकि अभी सयोग की उम्मीद लगी हुई है। रही वात सन्यासी वनने की, उसमे तो मुझे भी खुशी होगी। सुना है हमारे यहाँ के शास्त्रो मे, जीवन का अन्तिम और सुखदायी लक्ष्य इसी को वताया है।" वह होठो में मुसकराई।

"आपकी सहानुभूति से इस समय मुझे बड़ा वल मिला। भगवान आपकी मनोकामना अवश्य पूरी करेगा, पर एक वात आप सोचना भूल गईं।"

"क्या ?"

"अगर सन्यासी वनने के वाद कही आपके दरवाज़े पर ही धूनी लगा ली, तव क्या होगा ?"

"कुछ नही। उसमे होना क्या है ? पुलिस को इन्फार्म कर दिया जायेगा। आप धारा ४२० के अन्तर्गत जेल मे डाल दिये जायेंगे।"

राजेश हंसने लगा, "धारा आपको खूव याद है ?"

"क्या किया जाय इस तरह के लोगो का साथ जो हो गया है।"

पुनः दोनो हसने लगे। घंटा वजा। चारू ने चलते समय लाइब्रेरी मे भी आने को मना कर दिया था। उसे छुट्टी उपरान्त किसी कार्य-वश घर जाना था।

आज महीनो वाद, छुट्टी होने पर अमरनाथ के साथ-साथ राजेश भी चला। कारण का अनुमान लगाते हुए भी अमरनाथ ने कुछ पूछना

उचित नही समझा। राजेश और चारु के बीच बढ़ती हुई घनिष्ठता की जानकारी उसे क्या, कक्षा के सभी छात्र-छात्राओं को थी और दो-एक ऐसे भी लड़के थे, जो जब-तब राजेश पर छींटा भी कस दिया करते थे। परन्तु अमरनाथ ने कभी राजेश से इस सम्बन्ध मे कुछ जानने का प्रयत्न नही किया था। यद्यपि इधर कुछ दिनों से, जब भी कालिज मे राजेश को अमरनाथ से बातें करने का अवसर मिलता, या किसी दिन उसके यहाँ मिलने जाता तो इधर-उधर के प्रसगो के साथ-साथ चारु का प्रसंग भी अवश्य लाता, परन्तु अमरनाथ सदैव सुनी-अनसुनी करके दूसरी बाते करने लगता। आज पुन. राजेश ने उसी प्रसग को छेड दिया कुछ स्पष्ट शब्दों के साथ, "चारु आपको कैसी लड़की समझ मे आती है अमरनाथ जी ?"

"अच्छी लडकी है। देखने-सुनने मे भी और बातचीत मे भी।"

"ऐसे नही। यह तो चलताऊ बात हुई। सीरियसली बताइये।"

"सीरियसली बता रहा हूँ ? वह लड़की मुझे हर तरह से पसन्द है। अगर उसने मुझे लिफ्ट दी होती तो मैं अपने को बडा सौभाग्यशाली...।"

"बस, बस। बेवकूफ बनाने के लिये कालेज मे बहुत से लड़के हैं। क्लास मे कोई ऐसी भी लड़की है जो आपको लिफ्ट देने को तैयार न हो। आप तो मेरे रोमान्स का मजाक उडाने लगे।"

अमरनाथ हंसा, "तुम्हारे रोमान्स का नही, तुम्हारा। इतने दिनों से लाइब्रेरी मे जो कुछ हो रहा है, कभी कुछ जिक्र किया है ?"

"जिक्र कैसे करता ? साफ-साफ कहने की हिम्मत भी तो होनी चाहिये न। बहुत बार कोशिश कर चुका हूँ।"

"बडे घुटे हुए हो राजेश। अपने भोलेपन का जादू ऐसा फेंका कि चारु कहीं की न रह गई। खैर, वह लडकी अच्छी है। अगर तुम्हे उसका प्रेम मिला है तो उसे सजो कर रखने का प्रयत्न करना। मुझे प्रसन्नता है।"

राजेश ने अपनी प्रेम कहानी कह सुनाई और आगे की प्रगति के लिये राय माँगी।

"दूंगा", अमरनाथ बोला, "पहले सिनेमा वाला प्रोग्राम हो जाने दो। छुट्टियो मे वह यही रहेगी या···।"

"नही, मथुरा चली जायेगी और मुश्किल यह है कि वहां मुलाकात की कोई गुंजाइश भी नही है।"

"जीवन बड़ा लम्बा है। मुलाकाते बहुत होगी। धैर्य रखो। अगर सारी व्यग्रता अभी समाप्त हो गई तो बाद मे क्या होगा ?"

राजेश मुसकराया "अच्छी बात है। बड़ो की जैसी सलाह हो। मुझे तो उन्ही के बताये मार्गो पर चलना है।"

अमरनाथ का बँगला आ गया, "अब जाओ, कल कालेज मे फिर बातें होगी।"

× × ×

आजकल-आजकल मे कई दिन बीत गये और चारु सिनेमा का प्रोग्राम न बना सकी। ऐसा नही था कि स्वय बनाना न चाहती हो, पर उपयुक्त अवसर मिले तब तो। नित्य राजेश की राते, सुबह की प्रतीक्षा मे बीतती। सवेरे कालेज मे चारु से मिलते ही बड़ी उत्सुकता से पूछता, किन्तु उत्तर सुनते ही मन बैठ जाता, और पढाई के सारे घटे बेकार चले जाते। हाँ, इतना सतोष अवश्य था कि चारु स्वयं इस प्रोग्राम के लिये प्रयत्नशील थी। उसकी तरफ से हीला-हवाला नही था। कई दिन और बीत गये। प्रीपरेशन लीव सिर पर आ गई। राजेश ने अधीरता व्यक्त की फिर भी चारु विवश थी। उसकी और राजेश की स्थिति मे बड़ा अन्तर था।

प्रीपरेशन लीव हो गई। कार्यक्रम न बन सका। अन्तिम दिन अन्तिम घटा समाप्त होने पर राजेश ने चारु से पूछा, "अब ?"

चारु चुप रही। उसके चेहरे पर उदासी फैली हुई थी।

"अब आपसे भेट कैसे हो सकेगी ?"

"कैसे बताऊँ ? बहुत मुश्किल है।"

"कालेज मे लाइब्रेरी के बहाने तो आ सकती है ?"

"लेकिन आपको इन्फारेमशन कैसे होगी ?" चारू ने पूछा।

"पोस्टकार्ड के द्वारा और इससे भी अच्छा होगा कि आप मेरे घर आ जायें।"

"आपके घर।"

"हाँ। मेरे यहाँ नानी के अलावा और कोई नही है। मामा अपनी फेमिली के साथ इलाहाबाद मे है।"

चारू नें सिर हिलाया, "आपके घर आना ठीक नही है।"

"क्यो। किसी दिन दोपहर मे, उसी अपनी सहेली मे किताबे लेने के बहाने निकरा सकती हैं।"

चारू सोचने लगी, "लेकिन आपके घर···।" वह कहते-कहते रुक गई।

"कहिये न, रुक क्यो गईं ? क्या मुझ पर विश्वास···।"

"यह बात नही है।"

"तब ?"

चारू क्या कहे ? वह चुप रही।

राजेश भी चुप रहा। चारू को अपने घर बुलाने के लिये वह जबरदस्ती तो नही कर सकता था न। चारू ने सिर उठाया, "आप के मकान का पता क्या है ?"

राजेश ने पता बता दिया और स्थान का पूरा हुलिया भी समझा दिया, "आपकी प्रतीक्षा मैं किस दिन करूँ ?"

"अभी कुछ नही बता सकती। चार-छ दिनों बाद कार्ड डालूंगी। वैसे अब तो आप दिन भर घर पर ही रहा करेंगे ?"

"करीब-करीब। और अगर जाना भी हुआ तो अमरनाथ जी तक। मगर इधर सात-आठ रोज दिन में कही नही जाना है।"

"तो अब मैं जाऊँ ?"

दोनो ने एक-दूसरे की आँखो मे अपने को डाल कर हाथ जोड़े और उदास-मन से अलग हो गये।

एक सप्ताह के स्थान पर डेढ सप्ताह बीत गया। चारु का पत्र नही आया। दूसरा सप्ताह भी समाप्त होने को आया। फिर भी कोई सूचना नही मिली। राजेश का मन छटपटाने लगा। धैर्य जाता रहा। चारु को देखने की, उससे दो-दो बाते करने की व्याकुलता प्रबल हो उठी। पढाई काटने लगी। वह अपने को समझता, परीक्षा की जिम्मेदारियो को बतलाता और तब किताबें खोल कर बैठ जाता। पर घन्टो बैठे रहने के उपरान्त भी पढाई कुछ न हो पाती। सारा समय बरबाद चला जाता। उसे झुँझलाहट होती। वह उठकर बाहर चला जाता, मस्तिष्क के वातावरण को बदलने के लिये। रात मे पुनः पुस्तके खुलती। ध्यान को केन्द्रित करके पन्ने-दो-पन्ने पढे जाते परन्तु पुनः वही स्थिति आ जाती और उस स्थिति मे बारह और एक-एक तक बज जाते।

अन्त मे उसने अमरनाथ से भेंट की और अपनी हालत कह सुनाई। उसे भय था कि उसकी यह दशा कही उसकी परीक्षा को चौपट न कर दे। साल भर का पैसा और समय दोनो बेकार चले जायेंगे। सब कुछ सुन लेने पर अमरनाथ ने सलाह दी और उसे कार्यान्वित करने का उपाय भी बताया। राजेश को बात जच गई। अमरनाथ के कथनानुसार वह दूसरे ही दिन लगभग ग्यारह बजे, चारु के घर जा पहुँचा। संयोग से बाहर पोर्टिको में नौकर खड़ा मिल गया। उसने अपना नाम बताकर चारु वर्मा से मिलने को कहा। नौकर अन्दर चला गया। कुछ मिन्टो की प्रतीक्षा के उपरान्त चारु का आगमन हुआ। दोनों ने एक-दूसरे को नमस्ते किया और ड्राइंग-रूम मे बैठ गये। चारु ने पूछा, "आप तो मुझसे बहुत नाराज होंगे?"

"होंगे तो आपका क्या बिगाड़ लेंगे। यह तो अपनी ही बेवकूफी थी? खैर। जैसा आप ठीक समझे।"

"आपको मेरी मजबूरियो का अनुमान नही है वरना यह कहने का

अवसर नही मिलता। परसों बारह बजे आपके घर आऊँगी तभी अपने न आने का कारण बतलाऊँगी। आपका दिमाग अभी गरम है। जो बेवकूफी आपने की है वही मैंने भी की है। फरक इतना है कि आप लोग कह सकते है और···।" यह कहते-कहते रुक गई।

राजेश बरफ की भांति पिघल कर पानी-पानी हो गया। उसने चारु का निहोरा किया, "आपने मेरी बात को दूसरे रूप मे ले लिया लेकिन भगवान साक्षी है कि मैं इन दिनो जिस तरह से समय ··।"

"चाची आ रही है।" जल्दी से चारु बीच मे बोल पड़ी।

चारु ने अपनी चाची से राजेश का परिचय कराया और आने का कारण किसी पुस्तक को लेने का बताया। चाची ने राजेश से उसकी पढ़ाई आदि के सम्बन्ध में बहुत-सी बातें पूछी। इस बीच चारु अन्दर से एक पुस्तक ले आई और राजेश को दे दी। वह उठ खड़ा हुआ। चाची ने शिष्टता के नाते चाय के लिये कहा। उसने हाथ जोड़ते हुए क्षमा माँग ली। वह अत्यधिक प्रसन्न था। रास्ते मे पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। वहाँ से सीधा वह अमरनाथ के पास पहुँचा। एक साँस में सारी बात कह सुनाई। अमरनाथ मुसकराया, "तीर निशाने पर बैठ गया न ?"

"बैठता क्यो नही ? सलाह किसकी थी।"

फिर बड़ी देर तक दोनो मे वार्तालाप होती रही।

परसो राजेश के लिए वर्षो बाद आया। राजेश सवेरे से स्वयं मकान की सफाई मे जुट पड़ा। सब कही सफाई हुई। इधर-उधर फैले हुए सामानो को उचित स्थान पर रखा गया। अपने कमरे मे पलंग की चादर बदली गई। कुरसियो की गद्दियो पर धुले खोल चढ़ाये गये। टेबिल-क्लाथ बदला गया। बिखरी हुई पुस्तकों को उचित रूप से लगाया गया और खूटी पर टगे कपड़ों को भी ठीक किया गया। तात्पर्य यह कि जहाँ तक साफ और सुन्दर बनाया जा सकता बना दिया गया। इसके उपरान्त नहाना और खाना हुआ। भोजन के समय उसने नानी से

आगन्तुक के सम्बन्ध मे चर्चा कर दी। फिर वह बाजार गया और कुछ फल, नमकीन और मिठाइयाँ ले आया। चारू के स्वागतार्थ तैयारी पूरी हो गई। अब केवल आने की देर थी। राजेश कमरे मे बैठकर प्रतीक्षा करने लगा।

बारह बजने को आया। राजेश बाहर निकला, इधर-उधर सडक पर नजर दौडाई, कुछ देर तक खडा रहा और पुनः अन्दर आ गया। दस-पन्द्रह मिनट तक बैठा रहा, फिर बाहर आया। बाहर आना था कि चारू वर्मा का रिक्शा सामने से आता दिखलाई पड़ गया। हृदय नाच उठा। जल्दी से कुछ फुटकर पैसे अन्दर से ले आया। रिक्शा आकर रुका। चारू उतरी। इस समय वह बड़ी आकर्षक लग रही थी। राजेश ने रिक्शे वाले को पैसे दिये और चारू के साथ-साथ अन्दर आया। पहले नानी से मिलाया। चारू ने शिष्टता के साथ प्रणाम किया। नानी ने आशीर्वाद दिये, "तुम दोनों साथ-साथ पढ़ते हो ?"

"जी।"

"जाओ बैठो।" वृद्धा समय की प्रगति पर सोचने लग गई थी।

चारू को राजेश अपने कमरे मे ले आया। चारू बैठ गई, "बस हो गया न ? अब जाऊँ ?" वह मुसकराई।

राजेश निहारने लग गया। उसे बोलने की फुरसत नही थी। वह आज नजर भरकर देख लेना चाहता था। जीवन मे दोबारा ऐसा अवसर आये न आये।

चारू ने झुंझलाहट दिखलाई, "इस तरह से क्या घूरने लगे।"

"घूर नही रहा हूँ, अक्स उतार रहा हूँ। छुट्टियों भर के लिये कुछ सहारा चाहिये न।"

"उहँ। आपके पास और कोई टापिक नही। जब सुनिये तब वही बात।"

राजेश ने अँगड़ाई ली और उसके हाथ को अपने हाथों मे ले लिया।

"क्या करते हैं ?" चारू ने हाथ खींच लिया, "आप की नानी आ गईं तो ?"

"नहीं आयेंगी ।"

"जी नहीं ।" चारू ने मना कर दिया ।

विवशता में राजेश को बाहर देखने जाना पड़ा । नानी अपने कमरे में लेटी हुई थीं, "चाय बनेगी ?" उन्होंने पूछा ।

"बना दो ।" कह कर राजेश कमरे में आ गया ।

चारू उठकर राजेश की पुस्तकें देखने लगी । राजेश उसके पीछे आकर खड़ा हो गया ।

"कहाँ चले गये थे ?" उसने उसी प्रकार पुस्तकें देखते हुये पूछा ।

"नानी को देखने ।"

"क्यों ?"

"आप ही ने तो कहा था ।"

उसने गर्दन मोड़ी, "मैंने कहा था ?"

राजेश की आँखों ने कुछ भाव व्यक्त किये ।

"चलिये बैठें ।" वह हटने को हुई ।

राजेश ने अपनी भुजाओं में उसे कस लिया ।

१४

दिन बीतते गए । प्रीपरेशन लीव हुई और परीक्षा आरम्भ हो गई । परचे होने लगे और एक-एक करके समाप्त भी हो गए । अन्तिम दिन बड़े दुखी मन से चारू और राजेश अलग हुए । चारू को दो-एक दिन के अन्दर ही मथुरा चला जाना था, इस कारण पुनः भेंट होने की सम्भा-

बना नहीं थी। दूसरा सवाल राजेश का पत्र-व्यवहार के संबंध में था। चारु ने इसे असम्भव बताया था। मथुरा के पते पर राजेश का पत्र भेजना, खतरे को निमंत्रित करना था। रही बात चारु के लिखने की सो वह हफ्ते-डेढ़ हफ्ते के अन्तर से पत्र डालती रहेगी। प्रेमी ने संतोष का अनुभव किया।

उधर अमरनाथ की भी कानपुर जाने की तैयारी थी किन्तु एक मास अभी रुकने के बाद। उसका नया उपन्यास तैयार हो चुका था। अब दिल्ली जाकर प्रकाशकों से सौदा करना था। स्वतन्त्रता के बाद दिल्ली प्रकाशकों की गढ़ बन गई है। वहाँ दस-पाँच हजार से लेकर दस-पाँच लाख तक की पूंजी वाले प्रकाशक हैं। अमरनाथ उपन्यास लेकर दिल्ली आया। दो-चार प्रकाशकों को पाँडुलिपि दिखलाने के उपरान्त, एक प्रकाशक से कापीराइट पर सौदा तय हो गया। अनुबन्ध पत्र पर हस्ताक्षर किए, पैसे लिए और प्रसन्न चित्त आगरे को लौट पड़ा। चलने के एक दिन पूर्व, कनॉट सरकस से प्रतिभा के लिए, कानों, हाथों और जूड़े के वे गहने लिए, जो कृत्रिम होते हुए भी नये फैशन के कारण विशेष प्रिय थे। बहन-बहनोई के लिए 'घंटे वाला' का हलवा सोहन का आधा सेर वाला डिब्बा, और बच्चों के लिए कुछ खिलौने।

दिल्ली से लौटने के दूसरे दिन अमरनाथ दोपहर में अपने उपहारों सहित प्रतिभा से मिलने आया। प्रतिभा ने सरसरी दृष्टि से अमरनाथ को देखते हुए पूछा. "यह सब क्या है?"

"तुम्हारी भाभी कहाँ है?"

"मैंने जो पूछा है उसका यह जवाब नहीं है।" प्रतिभा ने अमरनाथ के मनोभाव को समझ लिया था।

"जवाब उसी का है पर कुछ घुमाकर।"

"लेकिन मैंने सीधा पूछा है। घुमाव मैं कम समझती हूँ।" उसने अंगड़ाई ली, "आज बदन मे बड़ा दर्द।"

अमरनाथ उठकर उसके सोफे पर बैठ गया।

"अरे ! यह क्या होने लगा ।" वह उठने को हुई ।

अमरनाथ ने हाथ पकड़ लिया, "बैठो ।"

प्रतिभा ने हाथ छुड़ाने का यत्न किया, "भाभी आती होगी ।"

"मुझे बुद्धू न बनाओ । इस समय वह सो रही है ।"

वह मुसकराई, 'अच्छा छोड़िये । देख तो आऊँ ।"

अमरनाथ ने छोड़ दिया । वह उठकर अन्दर गई और जब लौटकर आई तो अमरनाथ के सोफे पर न बैठकर दूसरे सोफे पर बैठ गई ।

"सो रही है न ?"

"मुझे नही मालूम ।"

"इधर आओ ।"

प्रतिभा ने गर्दन हिलाकर नाही किया ।

अमरनाथ उठने को हुआ, "फिर मै वहाँ आ जाऊँगा ।"

"बहुत ज़िद करते है ।" वह अमरनाथ के बगल मे आकर बैठ गई ।

अमरनाथ ने एक पैकेट खोला और कड़ो को खोलकर उसके हाथों मे पहना दिया, "कैसे है ?"

प्रतिभा देखने लग गई, "बहुत अच्छे है—बिल्कुल लेटेम्ट । यहाँ दो-एक लड़कियो को ही पहने देखा है ।" वह पुन देखने लग गई । उसके दूध जैसे हाथो में बड़े आकर्षक दिख रहे थे ।

"अपने कानो मे टाप्स निकालो ।"

प्रतिभा ने निकाल दिये । अमरनाथ ने दूसरी डिबिया खोली और अपने हाथो ही पहनाना चाहा । प्रतिभा ने टोका, "लाइये मै पहने लेती हूँ । आपको देर लगेगी ।"

अमरनाथ ने हाथ हटा लिये ।

प्रतिभा के पहन लेने पर अमरनाथ के मुँह से निकल पड़ा, "क्या बात है ? और उसने अनायास उसे गोद मे खीच लिया ।

प्रतिभा क्रोध प्रदर्शित करती हुई हटने को हुई । अमरनाथ ने और कस लिया । प्रतिभा शिथिल पड़ गई । अमरनाथ के अधर उसके अधरो

से सट गए। प्रतिभा ने पुनः झिटका दिया और अलग होती हुई अन्दर चली गई।

लगभग दस मिनट बाद वह शरबत का गिलास लेकर आई और उसे मेज पर रखकर, अलग बैठ गई, "चाहे जितना समझाया जाये आप पर असर नही पडने का। आदमियो की अजीब हालत है।"

अमरनाथ मुसकरा उठा। उसने तीसरा उपहार भी उसे पकड़ा दिया।

प्रतिभा देखने लगी। हाथो और कानों वाले आभूषण वह उतार आई थी। भाभी के आने की आहट-सी मालूम हुई। उसने झट से लपेट कर छिपा लिया। अमरनाथ ने नमस्ते किया। कुशल-क्षेम के उपरान्त इधर-उधर की बाते चल पड़ी और काफी समय तक चलती रही। प्रतिभा उठकर अन्दर चली गई थी और चाय के साथ-साथ अमरनाथ की प्रिय चीज हलवा भी बना कर ले आई थी। चाय पीते हुए अमरनाथ ने परसो के दिन दो बजे वाली गाडी से कानपुर को प्रस्थान की सूचना दी।"

"शायद आप की बहन जी भी जा रही होगी ?" श्रीमती प्रसाद ने पूछा।

"बहन और बहनोई दोनो।"

"अब तो कालेज खुलने पर ही वापसी होगी ?"

"देखिये, वापसी होती है या नही ?"

"क्यों ? फाइनल नही करना है।"

"करना है लेकिन अगले साल नही। ऐसा कुछ इरादा बन रहा है। सच पूछिये तो कालेज ज्वायन करके मैंने बड़ी भूल की है। मेरे लिए अंग्रेजी से एम० ए० करने और न करने का कोई महत्त्व नहीं है। अगर यही समय मैं अपने लिखने में लगाता तो वह अधिक महत्व-पूर्ण होता।"

"मगर अब अधूरा काम छोड़ने से लाभ ?"

"देखिये। आप लोग कहीं गर्मियो में जा रही है?" अमरनाथ ने पूछा।

"नहीं।"

उसने प्रतिभा की ओर देखा। वह गुमसुम बैठी थी। चेहरे पर उदासी फैल गई थी। उसने चलने की आज्ञा माँगी और खड़ा हो गया। श्रीमती प्रसाद ने हाथ जोड़े और 'विश यू गुड जरनी' कहती हुई विदाई दी। प्रतिभा साथ-साथ फाटक तक आई, "कल आप आयेंगे?" उसने पूछा।

'मुश्किल है। उन लोगो की तैयारी में दिन भर उलझा रहना पड़ेगा। अगर मौका मिला तो दस-पाँच मिनट के लिये आ जाऊँगा।"

"किस डेट तक लौटियेगा?"

"लौटकर क्या होगा? डॉट खाने के अलावा और कुछ तो मिलने से रहा।"

प्रतिभा ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसी प्रकार गर्दन झुकाये खड़ी रही।

"तो अब मैं चल रहा हूँ। पत्र का उत्तर जरूर दीजियेगा।"

प्रतिभा का सिर ऊपर उठा।, उसने हाथ जोड़े। अनायास उसकी आँखो से आँसू वह चले।

अमरनाथ मुड़ गया। उसे स्वयं कुछ-कुछ रुलाई-सी आने लगी थी। प्रतिभा ने जिस आदर्श प्रेम का परिचय दिया था, वह आज के युग मे अनोखा और अनुकरणीय था।

× × ×

अमरनाथ ने कानपुर पहुँचते ही प्रतिभा को पत्र डाला। उत्तर अविलम्ब भेजा गया। पुनः उसका पत्र आया और पुनः जवाब दिया गया। इस प्रकार दोनो प्रेमियों के बीच लम्बे-लम्बे पत्रो के आदान-प्रदान होने लगे। जितनी उत्सुकता से पत्र लिखे जाते, उतनी ही व्यग्रता से उत्तर की प्रतीक्षा की जाती। परन्तु यह सौभाग्य उस बेचारे राजेश

को नही प्राप्त था। वह चारु को अपने हृदय की भावनाओं से अवगत नही कर सकता था। चारू अपने प्रत्येक पत्र मे उत्तर न देने की हिदायत करती रहती थी। उसे डर था कि कही राजेश भावावेश मे उसे पत्र न लिख डाले।

धीरे-धीरे एक-एक करके दिन समाप्त होते गये और एक दिन प्रतिभा की चिट्ठी मे वह तारीख भी लिख कर आ गई, जिसकी उम्मीद में मन भीतर ही भीतर छटपटाया करता था। अमरनाथ ने १४ जुलाई को आने के लिये लिखा था। प्रतिभा ने उस पत्र को उस दिन कम-से-कम पाँच-सात बार पढ़ा था।

कालेज की परीक्षा मे सभी उत्तीर्ण हो गये थे।

१५

१० जुलाई को कालेज खुल गया। १२ जुलाई को चारू आने वाली थी—जैसे वर्षों बाद आ रही हो। राजेश के मन की विचित्र दशा थी। न कहते बन रहा था और न कहे बिना रहा जा रहा था। चारू से मिलने की उत्कंठा ने सोना और जागना दोनों हराम कर रखा था। जैसे-तैसे १२ जुलाई आई। यद्यपि बूदा-बांदी और बदली होने के कारण मौसम बड़ा खराब बन गया था, पर राजेश को इसकी कब चिन्ता थी ? आज दुनिया एक तरफ और वह एक तरफ। वह जल्दी तैयार हुआ और समय से बहुत पहले, कालेज जा पहुँचा। कालेज के चपरासियों को आश्चर्य हुआ। और दो-एक मुरहे, जिन्हे ताड़ने की लत थी, होठों के अन्दर मुसकराये और आपस मे बुदबुदाते हुये दूसरी ओर निकल गये। राजेश समझकर भी ना-समझ बना रहा।

धीरे-धीरे लड़को का आना आरम्भ हुआ। राजेश के दरजे के भी दो-एक लड़के आये। पहला घंटा साढे सात बजे लगता था। घंटा बोला। विद्यार्थी अपने अपने दरजे मे जाकर बैठ गये। राजेश के दरजे मे कुल पाँच लडके थे। लडकी एक भी नही थी। प्रोफेसर साहब ने छुट्टी कर दी। मौसम गड़बड होने के कारण उनके पढ़ाने का मूड नही था। उनके जाने के बाद राजेश भी दरजे से बाहर निकला जब कि अन्य सहपाठी अन्दर ही बैठे रहे। ऐसे चिप-चिप में क्या निकलना ? तितलियाँ भी तो नही थी, जिन्हे देखकर आँखे सेकी जाती। एक ने राजेश पर आवाज कस दी. "प्यारे बेकार है। आज नही आयेगी।"

सब हँसने लगे। राजेश अपनी हँसी दबाता बाहर निकल गया। वह कैसे बताये कि उसने आज ही आने को लिखा था।

बाहर बरामदे मे चन्द मिनटो तक प्रतीक्षा करने के उपरान्त राजेश नीचे उतरा और फाटक की ओर चल पड़ा। इस समय उसके लिए एक-एक क्षण काटना कठिन हो रहा था। फाटक के बाहर, एक पेड के नीचे नई राजामंडी की ओर मुँह करके वह खड़ा हो गया। और उधर से आने वाले रिक्शो को उचक-उचककर देखने लगा। कई रिक्शे आये और निकल गये। चारु नही आई। दूसरा घटा भी बोल गया। राजेश वही खड़ा रहा। उसकी इच्छा दरजे मे जाने की नही थी। चारु के न आने के कारण मन उदास हो गया था। आशा प्राय. जाती रही थी। उसकी समझ के अनुसार अगर चारु को आना होता तो आ गई होती। उसे भी तो उतनी ही विकलता होगी जितनी उसे थी। वह भला क्यो समय बरबाद करती।

राजेश ने घड़ी मे समय देखा। दस मिनट बीत चुके थे। वह पूर्णत. निराश हो गया। उसने घर लौटने को सोचा। कालेज मे जाना बेकार था। वह अपनी साइकिल हेतु साइकिल स्टैंड की ओर बढ़ा परन्तु फिर वापस लौट आया। सोचा—दस-पांच मिनट और प्रतीक्षा कर ली जाये। शायद अभी आती हो। उसकी दशा 'आशा, तृष्णा ना मरे कह गये दास

कबीर' वाली थी। पाँच-सात मिनट के स्थान पर पन्द्रह मिनट बीत गये। वह सड़क पार करके फाटक में घुसने वाला ही था कि एक और रिक्शा आता दिखलाई पड़ा। पैर ठिठक गये। रिक्शा कुछ समीप आया। राजेश को चारु जैसी झलक मिली। वह लौटकर सड़क की दूसरी पट्टी पर आ गया। रिक्शा और समीप आया। राजेश के नेत्र अपलक देखते रह गये। मन वल्लियों ऊपर उछल गया। शरीर के अग-अंग झूम उठे। वह चारु ही थी।

रिक्शा राजेश के सामने आकर रुक गया। चारु ने उसे देख लिया था। वह मुसकराती नीचे उतरी और रिक्शे वाले को पैसे देकर विदा किया. "यहाँ पानी मे क्यो खड़े हैं?" उसने पूछा। उसके नेत्र राजेश को निहारने लगे थे। बहुत दिनो से तलाश भी तो थी।

राजेश ने भी उसे निहारते हुये उत्तर दिया, "बड़ी देर से खड़ा हूँ। अब जाने वाला था। और···और आप अच्छी तरह से ·।"

"आइये, अन्दर चलें। यहाँ इस तरह खड़ा होना ·।"

"अन्दर नही, घर चलिये। आज पढाई नहीं हो रही है। सिर्फ तीन-चार लड़के हैं। घर पर···।"

"नही, वहाँ जाने से देर हो जायेगी। यहाँ ··।"

"यहाँ बिल्कुल बेकार है। मेरी हालत को भी तो देखिये।"

चारु ने गर्दन को झटकाया, "अच्छी तरह देख रही हूँ। हमेशा आप जिद करते हैं।" उसकी भी राजेश के घर जाने की इच्छा थी।

राजेश ने रास्ता बताया, "मैं साइकिल लेकर चल रहा हूँ। आप कालेज मे थोड़ी देर रुककर फिर आइयेगा। ठीक?"

"चारसौ बीस के काम तो कोई आपसे सीखें।" वह मुँह बिचती फाटक की ओर बढ गई।

घर पर चारु की प्रतीक्षा मे, राजेश को ज्यादा देर तक बोर नहीं होना पड़ा। उसके आने के थोड़े समय बाद ही, वह आ पहुँची। स्वाभाविक भी था। क्या उसके हृदय मे तड़पन नही थी, या राजेश से

मिलने की, पास-पास बैठ कर कुछ कहने-सुनने की, अधीरता नही थी ? दिखावे के लिए ऊपर से चाहे जो कह दिया जाये पर प्रेमिका की कसक से अधिक टीस वाली होती है न ।

चारू के घर मे आने की जानकारी राजेश को उस समय हुई जब वह नानी से ओसारे मे उनकी कुशलता पूछ रही थी । राजेश दरवाजे से देखकर पुनः कमरे मे हो गया । उसे इतनी जल्दी उम्मीद नही थी । नानी से दो-चार बाते करने के उपरान्त उसने कमरे में पदार्पण किया, "लीजिये मैं आ गई । अब तो आप खुश है ? वह कुरसी खीचती हुई बैठ गई, "कहिये, छुट्टी कैसी बीती है ?"

राजेश सामने की कुरसी पर बैठ गया, "तारे गिनते-गिनते और कैसे बीतनी थी । न दिन को चैन था न रात को नीद । एक-एक दिन एक-एक साल की तरह गुजरा है ।"

चारू क्या कहे । उसकी छुट्टी भी तो इसी प्रकार कटी थी, "मेरे लेटर्स तो सभी कुछ मिले होगे ।"

"हां, आपकी छुट्टियां कैसी बीती ?"

"बिल्कुल बोर । वहां सोने-खाने के सिवा और क्या था ? मुझे मथुरा बिल्कुल पसन्द नही है ।" चारू तारे गिनने वाली बात कैसे रहे ?

"मेरी भी याद कभी आती थी ?"

"आप को मेरे लेटर्स से क्या अन्दाज़ लगा है ? यह सवाल तो मुझे पूछना चाहिए था ।"

राजेश ने निःश्वास छोड़ी और ऊपर छत की ओर देखता हुआ कह उठा—

> जब से मुहब्बत की दुनिया मे आया,
> खुदा की क़सम हर अलम है भुलाया;
> जिये सौ बरस जिन्दगी मेरी लेकर—
> सभी कुछ दिया है सभी कुछ है पाया ।

उसने सिर घुमाया और चारू को बड़े भावपूर्ण नेत्रो से देखने लगा ।

चारु ने गर्दन झुका ली। राजेश ने उसका हाथ पकड़ लिया। दोनों चुप थे। मिनट, दो मिनट और चार मिनट बीत गये। कमरे की निस्तब्धता पूर्ववत बनी रही। चारु की गर्दन उठी, "छोड़िये, अब चलूंगी।" पर उसने हाथ खींचने का कोई प्रयास नही किया।

राजेश कुछ कहने लगा था कि नानी की आवाज़ आई, "राजे, बेटा राजे।"

"आया नानी।" वह उठकर चला गया।

नानी ने चाय तैयार की थी। राजेश दोनो प्याले ले आया, फिर एक प्लेट मे थोड़ी दाल-मोठ और मिठाई भी ले आया।

"नानी ने बेकार तखलीफ उठाई। चारु बोली, "आप को मनाकर देना चाहिए था।"

"मना करने से कुछ न होता। उनका अफेक्शन का अजीब हाल है। इस उम्र मे भी मुझे एक काम नही करने देती है। चाय पीजिये।"

राजेश ने प्याला उठा लिया। दोनो चाय पीने लगे। राजेश ने पूछा, "कल तो सही वक्त से आइयेगा ?"

"क्यो ?"

"इसलिये कि मुझे सड़क पर इन्तजार न करना पड़े।"

"यह आपकी गलती है। जैसे मैं सड़क पर मिलूंगी वैसे क्लास मे। फ़रक क्या पड़ता है ? आप क्लास मे ही रहियेगा।"

"मेरे दिल से पूछिये तो मालूम हो कि फरक क्या पड़ता है। खैर, कभी मेरा भी टाइम आयेगा। सबके दिन बदलते है।"

"बड़ा गुस्सा छिपा रखा है।" वह प्याला रखती हुई खड़ी हो गई।

"क्या हुआ ?"

"अब चलूंगी। देर हो जाएगी। फादर भी आए हुए हैं।"

"बस दस मिनट और।"

"नही। आपका दस मिनट बराबर है हाफ एन आवर के।"

"घड़ी देखकर केवल दस मिनट।"

"नो ।" वह मुड़ने को हुई ।

राजेश खड़ा हो गया और चारू का हाथ पकडता हुआ बोला, "आप को एक चीज तो दिखा दूं ।" वह उसे कोने की तरफ ले गया ।

"क्या है ?" चारू जानकर अनजान बन गई थी ।

राजेश ने उसे आलिगन मे भर लिया । चारू की भी भुजाएँ, उसके गले में गजरे की भांति लिपट गईं ।

१६

अपनी दी हुई तिथि पर अमरनाथ दिन के दो वाली गाडी से आया । रास्ते मे बीमानगर पड़ता था । उसने रिक्शे को मुड़वा लिया । प्रतिभा का फाटक आया, "रोको ।" अमरनाथ बोला और शीघ्रता से उतरता हुआ फाटक के अन्दर हो गया । बरामदे मे नौकर मिला, "प्रतिभा जी हैं ?"

"हैं ।"

"बुलाओ । रिक्शा खड़ा है । कानपुर से सीधे आ रहा हूं ।"

वह बुलाने चला गया ।

प्रतिभा दौड़ती हुई बाहर आई । अमरनाथ ने हाथ जोड़े, "नमस्ते ।"

प्रतिभा की हथेलीयां जुड गई पर मुंह से कुछ भी न निकल सका ।

"मैंने हाजिरी नोट करा दी है, अब जा रहा हूँ । रिक्शा खड़ा है । कल शाम को आऊंगा ।" वह मुडने को हुआ ।

"पानी पी लीजिए । प्यास लगी होगी ।" वह अन्दर चली गई । उसकी आंखें भर आई थी ।

पानी पीने के उपरान्त जब अमरनाथ सीढ़ियों से उतरने को हुआ

तो उसने पूछा, "कल शाम को आयेंगे या आज ?"

अमरनाथ ने गर्दन मोड़ी, "आज भी आजाऊँगा। नमस्ते।" वह चला गया।

शाम को अमरनाथ आया। कुछ समय तक ओंकार प्रसाद से बातें होती रही। तत्पश्चात् वह उठकर अन्दर चला गया। वकील के मुवक्कल आने लगे थे। अन्दर प्रतिभा उसकी प्रतीक्षा मे थी। दोनों ऊपर छत पर आ बैठे और एक-दूसरे के वियोग मे तड़पन से उठी पीड़ा की, एक-एक कसक बताने लगे। बड़ी देर तक यह कहानी चलती रही। प्रेमियों के बीच इस प्रकार की बातो का भी एक विशेष आनन्द है। कहानी की समाप्ति पर अमरनाथ ने नई भूमिका का श्रीगणेश किया और अपनी इधर-उधर वाली हरकत शुरू कर दी। प्रतिभा दूर हट गई, "मैं नीचे चली जाऊँगी।"

"बड़ी मुश्किल है भगवान है; न इधर का हुआ और न उधर का। मालूम पड़ता है इन्तजार मे ही सारी उम्र कट जाएगी।"

"आप से इन्तजार के लिए कहा किसने। बिना इन्तजार वाली कोई ढूंढ़ लीजिए न। आप लोगो को क्या कमी है ?"

"अब ऐसा ही करना पड़ेगा। मुसलमानो में एक शादी होती है—महीने दो महिने के लिए। ऐसी ही करूंगा। दोनों आवश्यकताएँ पूरी··।"

"चुप रहिये। जो मुंह में आता है वही बकते चले जाते हैं।" उसकी आँखें दिखावटी क्रोध प्रदर्शित करने लगी।

अमरनाथ हँस उठा। विषयान्तर हुआ। साहित्यिक वार्ता होने लगी। रात में अमरनाथ ने भोजन भी नही किया था।

दूसरे दिन कालेज मे अमरनाथ की सबसे भेंट हुई। राजेश से बड़ी देर तक बातें करता रहा। इसी बीच चपरासी ने अमरनाथ को गुप्ता जी के बुलाने की सूचना दी। प्रोफेसर गुप्ता अंग्रेजी विभाग के अध्यक्ष है। राजेश को वहीं रुकने को कहता हुआ अमरनाथ चला गया। प्रोफेसर

सिंह की अनुपस्थिति के कारण उनके दोनों घंटे खाली थे।

प्रोफेसर गुप्ता अमरनाथ से कह रहे थे, "मैं इस साल कुछ नये ढंग से इंग्लिश एसोशिएशन का फंक्शन करना चाहता हूँ मिस्टर अमरनाथ। चूंकि आप एक आर्टिस्ट हैं, इसलिए मेरा इरादा है कि फंक्शन की सारी रिस्पांसिबिलिटी आप को दे दूं। आप उसे जिस तरह चाहें आरगेनाइज करें।"

"वैसे आपने तारीख कौन-सी रखी है?"

"इस महीने के लास्ट वीक मे किसी भी दिन कर सकते हैं।"

"अच्छी बात है कल सुझाव दूंगा।"

प्रोफेसर गुप्ता ने उसे जाने की अनुमति दे दी।

अमरनाथ चिक उठाता हुआ बाहर निकला ही था कि सामने पेड़ के समीप, आकर एक कार रुकी और उसमे से एक युवती उतरी जिसकी वेश-भूषा और धुली चाँदनी जैसे रूप को देखने के लिए उसकी आँखें अटक गईं। काफी लम्बा कद और उसके अनुपात में शरीर का भराव, दुपट्टा और उसका कसाव, लम्बे-लम्बे नेत्र और उनमे कमान की भाँति बारीक काजल, केश-विन्यास की अद्वितीयता और कानो मे विशेष प्रकार के चाँदी के कुण्डल, नीचे पैरों मे चूड़ीदार पायजामा और फिर बहुत पतली और हल्की पायल। कयामत बरपा करने वाला हुस्न था। सभी देखने वाले टकटकी लगाकर देखने लगे थे। युवती निर्भीकतापूर्वक कालेज के दफ्तर की तरफ बढ़ी किन्तु अचानक रुक गई और पास खड़े एक लड़के से पूछा। उसने प्रोफेसर गुप्ता के आफिस की ओर संकेत किया। अमरनाथ का मस्तिष्क सचेत हुआ। वह शीघ्रता से मुँह घुमाता कक्षा की ओर बढ़ गया।

प्रोफेसर गुप्ता को क्लास में आने में दस मिनट का विलम्ब हुआ परन्तु इस विलम्ब का कारण सभी को ज्ञात हो गया, जब उस युवती ने गुप्ताजी के पीछे दरजे में प्रवेश किया। वह बैठ गई। सभी लड़के लड़कियाँ उसे देखने लग गये एक-दूसरे की आँखें बचा-बचा कर।

१७

वह युवती नियमित रूप से पढने आने लगी थी । दरजे मे ही नही वरन् एक प्रकार से सारे कालेज मे, उसकी वेश-भूषा, हाव-भाव, रूप-रग और स्वयं कार-ड्राइव करके आने-जाने के नक्शे ने, हंगामा उठा दिया था । तेवर इतने थे कि कक्षा की लडकियो से भी बातचीत करने मे वह अपनी हेठी समझती थी । घटा बजने पर चुपचाप दरजे मे आकर बैठ जाना और समाप्त होने पर चुपचाप चले जाना । बस । इससे अधिक नही । अगर कभी कुछ पूछना भी हुआ तो किसी लड़की से नही लड़के से पूछती और बहुत नपे-तुले शब्दो मे पूछती । उसके पूछने का ढंग भी ऐसा होता कि जवाब देने वाला जवाब देकर भी अपनी तरफ से कुछ पूछने का साहस नही कर सकता था । उसका नाम अभी अज्ञात था । कारण, उसकी हाजिरी नही होती थी । उसने लड़को के अनुमान के अनुसार, सम्भवत. केवल क्लास अटेंड करने की अनुमति ले रखी थी ।

अभी तक अमरनाथ ही कक्षा मे अपने रूप-गुण के कारण सर्वश्रेष्ठ और प्रत्येक लड़के-लडकी के आकर्षण का केन्द्र था किन्तु उस नव-यौवना के आगमन से अब अन्तर पड गया था । इसके अतिरिक्त एक बात और थी । उस युवती ने भूलकर भी अमरनाथ के व्यक्तित्व को पहचानने का प्रयत्न नही किया था । अमरनाथ को यह चीज बड़ी चुभी थी, और अब भी चुभ रही थी । उसे अपने व्यक्तित्व और कृतित्व पर गर्व था और मनुष्य होने के नाते उसमे अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने की कमजोरी भी थी ।

अमरनाथ का अहं सचेत होता गया। होड़ वाली स्थिति बढ़ती गई। वह उसे नीचा दिखाने का विचार करने लगा और इस दिशा में उसका पहला कदम था भूलकर भी उसकी तरफ मुखातिब न होना। फिलहाल के लिये यही उपाय उपयुक्त था। दरजे मे या दरजे के बाहर, जहाँ कही भी सयोगवश आमना-सामना होता, अमरनाथ फौरन मुँह घुमा लेता और इस प्रकार घुमाता जैसे उसे उसके प्रति घृणा हो। वह लोहे को लोहे से काटना चाहता था। अहंकारमिश्रित सुन्दरता की सबसे बड़ी दुर्बलता है उसकी उपेक्षा। यही वह घुटने टेक देती है।

अमरनाथ का प्रयास चलता रहा। साथ ही साथ दूसरे उपायो पर भी मनन होता रहा। इस बीच एक दिन राजेश से उसी युवती ने कुछ पूछा और जानकारी हेतु, पिछले वर्ष सबसे अधिक नम्बर पाने वाले का नाम भी जानना चाहा। राजेश ने अमरनाथ का नाम बता दिया। वह अमरनाथ की अन्य विशेषताओ को भी बता देना चाहता था किन्तु युवती ने बात पहले ही समाप्त कर दी। दूसरे दिन राजेश ने अमरनाथ से इसकी चर्चा की और यह भी कहा कि उसने अवसर नही दिया, अन्यथा वह उसके व्यक्तित्व को बताकर, उसके होश ठंडे कर देता। अमरनाथ मौन रहा। उसे कुछ संतोष मिला था।

इंग्लिश एशोसियेशन के उदघाटन समारोह की तिथि बढ जाने के कारण, बीच मे अमरनाथ ढीला पड़ गया था परन्तु अब वह पुनः समय समीप आने पर, उसकी तैयारी आरम्भ हो गई थी। अमरनाथ ने जो कार्यक्रम बनाया था उसके अनुसार प्रथम सरस्वती वन्दना तत्पश्चात एक अंगरेजी कविता का पाठ, फिर एक हिन्दी और उर्दू कविता का पाठ, एक-दो ऊँचे स्तर के गाने और अन्त में उदघाटनकरता का भाषण। प्रोफेसर गुप्ता ने इस कार्यक्रम को पसन्द किया था और स्वीकृति भी दे दी थी। अंगरेजी कविता पढ़ने के लिये एक क्रिश्चियन लड़की तैयार थी और उसने प्रसिद्ध कवि कीटस् की एक कविता का रिहर्सल भी दे दिया था। हिन्दी की कविता के लिये राजेश था। जहाँ

तक उर्दू की नज्म की बात थी, उसके लिये भी अमरनाथ निश्चित था। अब प्रश्न था सरस्वती वन्दना और गानों का। वैसे कक्षा की चारु नामक लड़की गाती नही थी किन्तु उसका कंठ मधुर था और वह सरस्वती वन्दना के लिये तैयार भी थी, पर जब तक एक और लड़की साथ न हो, वह मंच पर नही खड़ी हो सकती थी।

अचानक अमरनाथ की बुद्धि ने एक सूझ दी। इससे वह दो शिकार कर सकता था। उसने घंटा समाप्त होते ही उसी युवती से कहा, "मैं आपसे कुछ कहना चाहता था।"

वह ठिठकी, गर्दन घुमाकर देखा, "कहिए।"

"इसी १५ तारीख को अपने इंग्लिश एशोसियेशन का उदघाटन करने प्रोफेसर सूद इलाहाबाद से आ रहे है। इस फंक्सन का प्रारम्भ सरस्वती वादना से होने का प्रोफेसर गुप्ता ने निश्चय किया है। वन्दना के लिये मिस चारू तैयार हो गई है लेकिन अकेले गाने मे उन्हे कुछ झिझक है। अगर आप उनके साथ खडी हो जाएँ तो बहुत उत्तम हो।"

"मैं म्यूजिक बिल्कुल नही जानती मिस्टर अमरनाथ। आई एम वैरी सॉरी।" वह चल दी।

अमरनाथ के पैर से सिर तक आग लग गई। उसे बड़ा पश्चाताप हुआ। उसने बात करके बड़ी भूल की। उसका मूड दिन भर खराब बना रहा।

दूसरे दिन अन्तिम घटे के समाप्त होने पर जब दरजे से सब लोग बाहर निकले, तो अनायास उसी युवती ने अमरनाथ को रोकते हुए पूछा, "काई दूसरी लड़की तैयार हुई मिस्टर अमरनाथ ?"

"अभी नही।

"तब।"

"कोई और सूरत निकाली जायेगी।" अमरनाथ ने रूखे शब्दो में उत्तर दिया।

"और अगर न निकली तो ?"

"निकलेगी क्यों नही ? किराये पर भी तो लड़कियाँ मिल जाती है।" अमरनाथ ने चोट कर दिया।

"वट इट इज डिसग्रेस टू ग्रावर क्लास।"

"मजबूरी है। गुप्ताजी की ग्रभिलाषा की पूर्ति तो करनी ही होगी। फंक्सन को ग्रच्छे-से-ग्रच्छा बनाना है।" ग्रमरनाथ की इच्छा हुई कि वह भी कल की भाँति मुड़कर चल दे परन्तु ऐसा वह न कर सका।

"ग्रगर ऐसी सिचुएशन है तो मैं मिस चारू के साथ खडी हो जाऊँगी बशर्ते मेरी ग्रावाज ग्रापको पसन्द ग्रा जाये। बेटर होगा किसी दिन ग्राप इसका रिहर्सल कर ले।"

ग्रमरनाथ ग्रन्दर ही ग्रन्दर गलगल हो उठा, "मै ग्रभी गुप्ताजी से पूछे लेता हूँ। कल या परसो किसी पीरियड मे यही कर लेगे। थैंक्स फॉर योर हार्टी कोग्रापरेशन।"

"दैटस् ग्राल राइट।" वह ग्रपनी मनमानी चाल से मोटर की ग्रोर बढ़ गई।

ग्रमरनथ की कल वाली खिन्नता ग्राज प्रसन्नता मे परिवर्तित हो गई थी। गर्व से छाती फूल ग्राई थी ग्रौर मन को ग्रधिक सतोप मिला था। उसकी श्रेष्ठता सिद्ध हो गई थी। वह ग्राह्लादित मन प्रोफेसर गुप्ता के पास पहुँचा, उनसे बातचीत की ग्रौर फिर नाना प्रकार की बातें सोचता घर को चल पड़ा। उँगुली पकड़ मे ग्रा जाने के बाद, कलाई पकड़ने की योजना बनने लगी थी। जब तक वह स्वय ग्रपने मुँह से उसकी श्रेष्ठता को स्वीकार न करे तब तक क्या मजा ? प्रतिद्वन्दिता मे थोड़ी सफलता मिलते ही इच्छाये पूर्णता के लिए ग्रातुर हो उठती हैं।

दूसरे दिन वही कालेज के पास रहने वाले किसी लड़के से ग्रमरनाथ ने हारमोनियम मंगवाई ग्रौर ग्रन्तिम घटे की छुट्टी कराकर रिहर्सल करने लगा। उसने दर्जे के दो-तीन ग्रौर लड़कियों को बुला लिया था। सरस्वती न्दना थी महाकवि निराला की "वीरणा वादनी वरदे···।" हारमोनियम

पर ध्वनि निकालते-निकालते अचानक अमरनाथ रुक गया, "हम लोग आपके नाम से तो अभी तक परिचित···।" उसका संकेत उसी युवती को था।

"नीलिका दरे।" उसने बता दिया।

अमरनाथ पुन. हारमोनियम मे स्वर भरता हुआ गाने लगा, "वीणा वादनी वरदे ···।" स्थाई और एक अन्तरा गा लेने के बाद उसने नीलिका दरे की ओर देखा, "अब आप गाइये।"

नीलिका दरे ने झट से उसी तरह गा दिया। अमरनाथ उसका मुँह देखता रह गया, "आप तो म्यूजिक मे काफी जानकार मालूम पड़ती हैं। लीजिये, हारमोनियम बजाइये।" अमरनाथ आश्चर्य मे था।

नीलिका ने हाथ से रोक दिया, "मैं हारमोनियम नही बजा पाती।"

"यह मैं नही मान सकता।"

"इट इज फैक्ट। मैंने जो कुछ सीखा है शुरु से तानपूरे पर सीखा है।"

अमरनाथ ने पुन. हारमोनियम पर अपनी उँगलियों को नचाते हुए चारु वर्मा को गाने के लिये कहा। चारु, नीलिका के स्वर मे अपना स्वर मिलाने का प्रयत्न करने लगी। अमरनाथ ने दो-एक अन्य लड़कियों के कठ की भी परीक्षा की किन्तु सब की सलाह से नीलिका और चारु की जोडी ही सरस्वती वन्दना के लिए निश्चित हुई। थोड़ी देर तक और अभ्यास के उपरान्त रिहर्सल समाप्त हुआ। बाहर निकलने पर राजेश और चारु की अलग बातचीत होने लगी, अन्य लड़कियाँ दूसरी ओर चली गईं; नीलिका अपनी कार की तरफ बढ़ गई और अमरनाथ चपरासी को ढूंढ़ने लगा, हारमोनियम को उचित स्थान पर रखवाने के लिये। अचानक एक चपरासी उधर से जाता दिखलाई पड़ा। अमरनाथ ने उसे हारमोनियम सौंपी और शीघ्रता से उधर को लपका जिधर नीलिका का कार थी। सम्भवतः उसे कुछ कहना था।

नीलिका ने कार स्टार्ट कर ली थी कि अमरनाथ का हाथ हिलता हुआ दिखलाई पड़ा। वह रुक गयी। अमरनाथ के पास आने पर उसने पूछा, "क्या है ?"

"आपसे कहना भूल गया था। कल एक बार और रिहर्सल कर लेने का विचार है। आपको कोई असुविधा···।"

"बिलकुल नही। दो-चार बार रिहर्सल तो होना ही चाहिये, तभी मिस चारू मेरे साथ चल भी पायेगी।"

"एक बात और भी है। वन्दना वाली समस्या तो आप ने हल कर दी, अब गाने वाली भी हल हो जाये तो क्या कहना ? आप समझिये सोने मे सुगन्ध मिल जायेगी।"

वह मुस्कराई, "हिन्दी आप बड़ी अच्छी बोल लेते है। मिस्टर अमरनाथ मेरा अन्दाज अगर गलत नही है तो शायद आपको कुछ लिखने-पढ़ने का भी शौक है ?"

"नही। दूसरा एकदम नही है।" जैसे को तैसे का जवाब मिलना ही चाहिए था, "तो फिर मैं आपसे आशा रखूं ?"

"आप कहते हैं तो मैं गा भी दूंगी लेकिन तानपूरा लाने की रिस्पासिबिलटी आपकी होगी। मेरा वाला टूट गया है वरना कोई बात नही थी। एनीथिंग मोर ?"

"नही, धन्यवाद।"

नीलिका मोटर लेकर चली गई।

दूसरे दिन कालेज के स्थान पर अमरनाथ के बंगले पर रिहर्सल का कार्यक्रम बना। छुट्टी हो जाने के बाद सब नीलिका की मोटर मे बैठ कर अमरनाथ के यहाँ आये। अमरनाथ ने नौकर को भेजकर, सामने वाले बंगले से तानपूरा, हारमोनियम और तबला मगवाया। फिर वह बहन से कुछ कहने के लिये अन्दर चला गया। नीलिका ने मेज पर रखे हुये उपन्यास को उठा लिया। नाम पढने के उपरान्त जब लेखक के नाम पर दृष्टि गई तो वह कुछ चौकी। उसने खोला। फ्लैप पर अमरनाथ का

चित्र और परिचय था। नीलिका एक सांस मे पढ़ गई। तदुपरान्त पन्नों को उलट-पुलट कर देखने लगी। परन्तु मुंह से कुछ कहा नही।

अमरनाथ आया। कनखियों से नीलिका की ओर देखा और सोफा पर बैठता हुआ बोला, "मेरे खयाल से पहले अंग्रेजी और हिन्दी की कविताओ का रिहर्सल हो जाये। क्यों राजेश?" अमरनाथ ने आज जानबूझकर अपना उपन्यास मेज पर रख छोडा था। उसे नीलिका को अपने सम्बन्ध मे जताना था।

"हां, हो जाये।"

कई बार दोनो कविताओं का रिहर्सल हुआ। अमरनाथ ने खडे होने और पढने की मुद्राओं को भी थोडा समझाया। इसके बाद चाय आई। प्याले से चुस्की लेती हुई नीलिका ने दोनों कविताओ की धुनें और उनके भावों की प्रशंसा थी। चारू ने टोका, "मगर राजेश जी को थोडी और प्रैक्टिस करने की जरूरत है। कही-कही आवाज लखखडा जाती है।" वह मुसकराई।

"लोग पहले अपनी फिकर करें। मेरा नम्बर तो तीसरा है। क्यों अमरनाथ जी, उसी आर्डर में है न?"

पूर्व इसके कि अमरनाथ कुछ कहे नीलिका बोल उठी, "गजल किस को पढना है मिस्टर अमरनाथ?"

"अभी तो कोई तैयार नही हो सका है। सोचता हूँ। कोई आवश्यकता भी नही है।"

नीलिका चाय पीने लगी। उसने अपनी राय व्यक्त नही की।

चाय समाप्त होने पर 'वीणा वादिनी वरदे' का रिहर्सल होने लगा। और लगभग आधे घटे तक होने के उपरान्त नीलिका से गाना सुनाने के लिये कहा गया। नीलिका तानपूरा उठाकर उसके तारों को स्वर में मिलाने लगी, "मगर आप ने," उसने पूछा, "तबला क्यों मँगाया था?"

"बहुत पहले थोड़ा-बहुत सीखा था। देखता हूँ अगर कुछ बजा सका तो आपके साथ सगत कर लूंगा अन्यथा तबलिया ढूंढने की परेशानी बनी

रहेगी ।"

"कमाल है, अमरनाथ जी। बड़े-बड़े गुण छिपा रखे है आपने।" राजेश बोला, "हम लोगों को इसकी जानकारी तो आपने कभी कराई ही नही।"

"इसलिए नही कराई कि आप," ईसाई लडकी का कथन था, "रोज परेशान करते। इन मामलो मे आर्टिस्ट बडा चालाक होता है राजेश साहब। वह अपने आर्ट को चीप बनाना पसन्द नही करता। क्यो अमरनाथ साहब।"

अमरनाथ ने कोई उत्तर नही दिया। वह तबले की चादर खोलता हुआ, उसे इधर-उधर घुमाता हुआ, देखने लगा। नीलिका तारों को मिला रही थी। स्वर मिल जाने पर अमरनाथ ने तबला मिलाया। नीलिका अपने दोनो पैरो को मोडती हुई विशेप प्रकार मे बैठ गई। तान-पूरा बगल से लगाया और उँगलियाँ चलाती हुई बोली, "पहले एक क्लासिकल साँग सुनाती हूँ फिर एक भजन सुनाऊँगी।" उसने गर्दन झुका ली और बड़ी मधुरता से आलाप के स्वरो को उठाया। बहुत मीठी आवाज थी। सब अपलक नीलिका को देखने लगे।

आलाप को अपनी सीमा पर पहुँचा कर नीलिका ने गाया—

'प्रीति न जाने कन्हाई।'

अमरनाथ ने ठेका लगाया। बाग मे बहार आ गई। नीलिका की आवाज छाकर रह गई। सब मत्र-मुग्ध हो गये। नीलिका ने जब गीत समाप्त किया तो प्रत्येक ताली बजाता हुआ 'वाह-वाह, कहकर उछल उठा। अमरनाथ ने बार-बार प्रशसा की और भजन के लिए आग्रह किया। नीलिका ने एक मीरा का भजन सुना दिया। उसकी भी उसी प्रकार से प्रशसा की गई। पुन: चारू ने विशेप रूप से एक सिनेमा का गीत सुनाने को कहा। नीलिका ने प्रसिद्ध गायिका लता के उस गाने को 'ओ सजना बरखा बहार आई, अखियो मे प्यार लाई' सुना दिया। मालूम पडा जैसे स्वय लता गा रही हो। अमरनाथ टकटकी लगाये देखता रहा। उसके

पास प्रशंसा करने के शब्द नही रह गये थे।

कार्यक्रम समाप्त हुआ। सब बाहर निकले। राजेश रुक गया। अन्य दोनो युवतियाँ कार में बैठ गईं। नीलिका ने उन्हे छोड़ते हुये निकल जाने को कहा था। अमरनाथ ने धन्यवाद व्यक्त किया और पुनः उसके गानो की प्रशसा की।

"थैंक्स मिस्टर अमरनाथ।" उसने मोटर स्टार्ट कर दी।

बाद मे राजेश और अमरनाथ के बीच नीलिका के सम्बन्ध मे कुछ समय तक बातचीत होती रही। नीलिका का व्यक्तित्व सराहनीय था। अमरनाथ मन ही मन अपने भीतर कुछ लघुता का अनुभव करने लगा। वह राजेश के जाने के बाद भी काफी देर तक उसी के विषय मे सोचता-विचारता रहा था।

सध्या समय जब प्रतिभा से भेंट हुई तो बैठते ही उसने नीलिका की चर्चा आरम्भ कर दी और अपने भावावेश में बिना प्रतिभा की प्रतिक्रिया को सोच, लगा उसकी प्रशसा के पुल बाँधने। प्रतिभा उसकी हाँ में हाँ मिलाती रही परन्तु उसका चेहरा उतर आया था। 'मोहे न नारि, नारि के रूपा' और भला उस नारी के लिये, जो उसकी प्रेमिका हो। इस तरह के प्रसग तो हृदय को छलनी-छलनी कर डालते हैं न। अमरनाथ अभी कुछ और कहता किन्तु अनायास प्रतिभा के चेहरे को जो ध्यान-पूर्वक देखा तो फौरन अपनी त्रुटि का आभास हो गया। उसने अपने को धिक्कारा और प्रतिभा को स्पष्ट करने के लिये कि उसकी इन प्रशसाओं मे, अन्यथा अर्थ नही है। वह उनकी सफाई देने लगा। प्रतिभा ने मुसकरा कर प्रसग को बदल दिया।

अमरनाथ जब चलने को हुआ तो प्रतिभा ने कहा—"आपके इस फकशन मे हम लोगो को भी निमंत्रण मिलेगा न? आपकी नीलिका जी के भी दर्शन हो जायेंगे।"

अमरनाथ ने उसके गाल पर थपकी दी, "अब तो बाबा माफ करो। सब कुछ साफ हो गया फिर भी छीटाकशी। इस हृदय मे प्रतिभा वाला

स्थान और किसी लड़की को नही मिल सकता। समझ मे आया तुम्हारे ?"

"चलिये।" वह स्वयं आगे बढ़ गई।

१८

उद्घाटन की तिथि आ गई। साइन्स विभाग के एक बड़े कमरे में आयोजन रखा गया था—चार बजे दिन से। हाल में चाय का प्रबन्ध था। अमरनाथ ने कार्यक्रम की सूची बनाकर प्रोफेसर गुप्ता को दे दी थी। निश्चित समय पर सूद साहब आये। फूल मालाओ के उपरान्त प्रोग्राम शुरू हुआ। सरस्वती वन्दना के उपरान्त अंग्रेजी कविता फिर हिन्दी और उसके बाद उर्दू की गजल के लिये, अमरनाथ का नाम पुकारते हुए प्रोफेसर गुप्ता ने कहा, "आप सब को सम्भवत. जानकारी न होगी कि श्री अमरनाथ, हिन्दी के उदीयमान कथाकार हैं और इस छोटी उम्र मे उन्होने जैसी ख्याति अर्जित की है, उससे अनुमान लगता है कि वह भविष्य मे साहित्य को बहुत कुछ दे सकेंगे। आज मुझे यह कहते हुए गर्व हो रहा है कि वह मेरे शिष्य हैं। अब आप उनसे एक गजल सुने।" गुप्ता अंग्रेजी मे बोल रहे थे।

नीलिका विशेष आश्चर्य से देखने लग गई थी।

अमरनाथ मंच पर आकर खड़ा हुआ। पहले उसकी दृष्टि नीलिका पर गई किन्तु तत्क्षण प्रतिभा की ओर मुड़ गई। वह बायी ओर सामने की कुरसी पर, मालती के साथ बैठी थी। अमरनाथ ने गजल शुरू की—

दुनिया-ए-वफा का हंगामा दो दिन मे यह कैसा भूल गये।
जिस दिल मे तमन्ना बनकर रहे उस दिल की तमन्ना भूल गये

"वाह, वाह" और "बहुत खूब" से कक्ष प्रतिध्वनित हुआ। अमरनाथ की आवाज़ सुरीली थी और तरन्नुम भी उछाल देने वाला था। उसकी एक-एक पक्ति पर 'वन्स मोर' 'वन्स मोर', होता रहा। अन्त मे उसने मकतअ सुनाया—

'बिस्मिल' की नजर क़ातिल से मिली कातिल की नज़र बिस्मिल से मिली,
खंजर वह चलाना भूल गये हम अपना तड़पना भूल गये।

मिनट-दो मिनट तक तालियो की तडतडाहट होती रही। अमरनाथ उतर कर नीचे आ गया। फिर नीलिका का नम्बर आया। उसका आलाप भरना था कि सन्नाटा खिच आया। इस समय उसके दो आकर्षण काम कर रहे थे—रूप और कठ। आलाप की समाप्ति पर वह वही ठुमरी गा उठी, 'प्रीति न जाने कन्हाई', और जब तक वह गाती रही, सब मन्त्रमुग्ध उसे निहारते रहे। आज नीलिका उस दिन से भी अधिक खुलकर गा रही थी।

गीत समाप्त हुआ। वह झट से खड़ी हो गई। लडके चिल्ला उठे, 'वन्स मोर', 'वन्स मोर'। और जब तक वह बैठ नही गई वे उसी प्रकार चिल्लाते रहे। पूर्व निश्चयानुसार नीलिका ने भजन सुनाकर सब की इच्छा की पूर्ति कर दी। लडकों के दिलों पर सांप लोटने लगे थे। नीलिका ने जादू डाल दिया था।

प्रोफेसर गुप्ता खड़े हुए। इंग्लिश एसोसियेशन के सम्बन्ध मे दो चार बाते बताई, और दो-चार सूद की प्रशंसा मे, तत्पश्चात सूद से आग्रह करते हुए बैठ गये। अतिथि ने उठकर भाषण देना आरम्भ किया।

प्रोफेसर सूद ने शिक्षा का महत्व और उसका समाज एवं राष्ट्र से सम्बन्ध तथा उसकी उपयोगिता का तुलनात्मक विवेचन किया। साथ ही विद्यार्थियों मे बढ़ती हुई अनुशासनहीनता की कटु भर्त्सना की, और उन्हें अपनी जिम्मेदारियो को अनुभव करने का उपदेश दिया। अन्त मे प्रिन्सिपल, प्रोफेसर गुप्ता तथा लड़के-लड़कियो को धन्यवाद देते हुए

अपनी बात समाप्त की। वहाँ से सब उठकर हाल मे आये।

अमरनाथ ने सब को सम्मानपूर्वक बिठलाया और बेयरो को सकेत करता हुआ उस मेज़ की ओर चला गया जिस पर प्रतिभा और मालती बैठी थी। मालती मज़ाक के स्वर में बोली, "आज तो आपने वास्तव में हंगामा उठा दिया। अब भूलने वाले भी भूलने की कोशिश करने पर नही भूल सकेगे।" उसने प्रतिभा को देखा।

"कोई भूलने वाला भी तो हो मालती जी। कोशिश की नौबत तो बाद मे आयेगी।" मालती का भावार्थ समझते हुए अमरनाथ ने उत्तर दिया था, "भाग्य मे बस यही एक सुख नही बदा है बाकी तो···।"

"अच्छा, अच्छा।" प्रतिभा बीच मे कह उठी, "पहले कही बैठिये। भाग्य पर रोने के लिये सारी उम्र पड़ी है।"

अमरनाथ मुसकराता आगे बढ़ गया। अन्य मेजो पर लगे सामानों को देखता, और बेयरो को फटाफट काम करने का आदेश देता, जब वह नीलिका की मेज़ पर पहुँचा तो वह मुसकराई, "आपने जो गजल सुनाई थी उसमे अगर एक लाइन यह और ऐड कर दी जाय—वह गजल सुनाना भूल गये हम ताली बजाना भूल गये—तो कैसा रहेगा ?"

"बहुत सुन्दर रहेगा। क्या बात है ?" कहकर अमरनाथ चुप हो रहा। जो कुछ नीलिका ने कहा था, वह विचारणीय था।

"आइये बैठिये।" नीलिका पुनः बोली, "फक्शन तो बड़ा ग्रायन्ड रहा।" उसकी मेज़ पर दो कुसियाँ खाली थी।

"वह केवल आपके कारण।" अमरनाथ बगल की कुरसी पर बैठ गया, "अगर आपका कोआपरेशन न मिला होता तो कुछ भी न हो पाता।"

"आई अन्डरस्टैंड यू वेरीवेल मिस्टर अमरनाथ। यू आर टू क्लेवर।" वह मन्द-मन्द मुसकराई, "प्लेट उठाइये।" उसने बड़ी प्लेट से मिठाइयाँ निकालकर उसके प्लेट मे रख दीं।

"आपको अधिकार है जो चाहे कह लें। वैसे मैंने अभी तक कोई

चालाकी करने की गुस्ताखी नही की है।" नीलिका के इतने समीप बैठने का यह पहला अवसर था। वास्तव मे वह अग-अंग से अत्यधिक सुन्दर और सुडौल बनी हुई थी। बार-बार देखने पर भी तबीयत भरती नही थी।

"कल बताऊँगी कि आपने गुस्ताखी की है या नही।" वह चम्मच से मिठाइयाँ काट-काटकर खाने लगी।

अचानक अमरनाथ की नज़र उधर गई। मालती उसकी ओर देख रही थी किन्तु प्रतिभा गर्दन झुकाये खा रही थी। अमरनाथ ने समझ लिया कि प्रतिभा ने जानबूझकर अपनी गर्दन नीचे कर ली है।

तब प्रोफेसर गुप्ता ने अमरनाथ को सकेतो द्वारा बुलाया। वह उठकर चला गया।

पार्टी समाप्त हुई। सब उठ खडे हुए। नीलिका अपने उसी अन्दाज से बल खाती हुई मोटर मे जाकर बैठ गई। कुछ-एक को छोड़कर शेष की निगाहे उसका उस समय तक पीछा करती रही जब तक वह मोटर लेकर चली नही गई।

प्रोफेसर सूद के जाने के बाद प्रतिभा, मालती और अमरनाथ साथ-साथ कालेज से बाहर निकले। मालती के बगले तक फन्शन, सूद साहब का भाषण, नीलिका का गाना और उसके रूप-सिगार पर बाते होती रही किन्तु उसके बाद प्रतिभा ने अमरनाथ पर व्यंग्य किया, "चलिये, अब आपकी सारी इच्छाओ की पूर्ति हो जायेगी। मोटर अपने पास है, जब तबीयत आई चल दिये। न दिन की चिन्ता है न रात की। अब आपके ठाठ ही ठाठ है।"

अमरनाथ हँसा, "तानेबाजी शुरू हो गई न। बड़ी कठिन समस्या है। बातचीत भी करना गुनाह है। क्या बताया जाय, हर तरफ से आफत है।"

"लीजिये, मैं तो एक बात कह रही थी। अगर नीलिका के पास मोटर है तो क्या आपको वह घुमायेगी नही ? और उन्हे हर तरह की

स्वतन्त्रता भी है। दोस्ती मे और होता क्या है ?"

"जी हाँ," अमरनाथ ने धीरे से उसके नितम्बो पर थपकी दी, "मैं आपकी दोस्ती का मतलब भली-भाँति समझ रहा हूँ। देवी जी, दोस्ती समान स्तर वालो मे हुआ करती है। कहाँ एक मोटर पर चलने वाली रूप गर्विता, और कहाँ एक साधारण लेखक ' दोनो का मेल मुश्किल है।"

"लेकिन किसी के लिये, किसी की लाइकिंग भी तो हो सकती है ?"

"जरूर हो सकती है मगर अमरनाथ के लिए नीलिका को किसी तरह की लाइकिंग होगी, मेरी समझ मे कम आ रहा है।"

'और आयेगा नही। इने तो देखने वाले ही समझेंगे। मजनु बेचारे की यही तो हालत हुई थी। जिन्दगी-भर खाक छानकर भी वह कुछ नहीं समझ सका था।' प्रतिभा ने मुँह घुमाकर अपनी मुसकराहट को छिपाने का प्रयत्न किया।

अमरनाथ ने प्रतिभा की कमर मे हाथ डालकर अपनी भुजाओ मे कसना चाहा। प्रतिभा झिडकती हुई उछलकर अलग हो गई, "क्या बदतमीजी करते है ?"

"समझने की कोशिश कर रहा था।"

प्रतिभा को हँसी आ गई। अमरनाथ भी हँसने लगा।

मुड़ने वाली गली आ गई। प्रतिभा ने पूछा, "कल आइयेगा ?"

"नही, परसो। कल शायद बहनोई साहब के साथ सिनेमा जाना पड़े।'

"और दोपहर मे ?"

"सिकन्दरा जाऊँगा। उनकी भाभी और बडे भाई आये हुए हैं।"

प्रतिभा हाथ जोडती मुड गई।

१६

रात मे जब अमरनाथ सोया तो नीलिका की वह पंक्ति, "वह गजल सुनाना भूल गये, हम ताली बजाना भूल गये"—मस्तिष्क मे चक्कर काटने लगी, जिसके परिणामस्वरूप उसे बहुत-सी बातों को सोचने के लिये मजबूर होना पडा। उस पक्ति का अर्थ तो स्पष्ट था किन्तु कहने वाले का अर्थ भी वही था—यह सोचने वाली बात थी। नीलिका को प्रत्येक रूप से समझने पर भी उसके सम्बन्ध में अन्यथा का अनुमान लगाना स्वयं को धोखा देना था। पर यह भी निश्चित था कि उस पक्ति का अन्य कोई अर्थ लगाया भी नही जा सकता था, और यदि किसी प्रकार लगाने का प्रयत्न भी किया जाता तो उसकी बाद की बातें, जो मेज पर खिलखिलाकर की गई थी, उलटी पड़ती थी। खैर, चाहे उलटी पड़ती हो या सीधी, पर अमरनाथ को सोचने में अच्छा लग रहा था। यद्यपि यह अच्छा लगना उचित नही था लेकिन जब कोई चीज अच्छी लगने लगती है तब उचित-अनुचित का ध्यान कहाँ रह जाता है, और विशेषकर ऐसे मामलो मे और भी नहीं रह पाता है। इच्छाओं की अतृप्ति ही, सम्भवतः सृष्टि के अस्तित्व का एक-मात्र कारण है।

दूसरे दिन जब अमरनाथ कालेज पहुँचा तो मन का कोई कोना अन्य दिनों की अपेक्षा अधिक प्रफुल्लित था। कुछ सुनने की उत्सुकता थी। वह क्या कहेगी और किस प्रकार कहेगी, इसका उसने रात में विभिन्न प्रकार से अनुमान लगा लिया था। साथ ही विभिन्न प्रकार से उनके उत्तर भी सोच लिये थे। परन्तु दुर्भाग्य से इन सोचे हुए उत्तरों का सदुपयोग न हो सका : सदुपयोग इसलिये नहीं हो सका कि नीलिका

कालेज न आई हो। वह कालेज आई थी। उसने अंग्रेजी रीति से हाथ हिलाकर, और अमरनाथ ने भारतीय रीति से नमस्ते कहकर, आपस मे अभिवादन भी किया था तथा हर घटे मे पढ़ाई भी की थी, किन्तु नीलिका ने न तो कल के फंक्शन के सम्बन्ध में कोई बात छेड़ी और न ही अमरनाथ को छेड़ने का अवसर दिया, जबकि सभी प्रोफेसर ने अपने घटे मे फक्शन की सराहना की तथा अमरनाथ के संयोजकत्व तथा नीलिका के गायन-कला की बार-बार प्रशंसा की थी। अमरनाथ ने सोचा शायद छुट्टी के बाद बातें हों। किन्तु यह भी अनुमान ग़लत निकला। वह अविलम्ब मोटर लेकर चली गई। अमरनाथ को बहुत बुरा लगा। जैसे उसके किसी स्नेही ने अपने घर पर बुलाकर अकारण ही उसे अपमानित कर दिया हो।

कालेज से लौटते समय रास्ते भर अमरनाथ सोचता रहा। यद्यपि दो-एक बार उसे स्वयं पर झुझलाहट भी आई और अपने मस्तिष्क को दूसरी बातो में लगाने का प्रयास भी किया, किन्तु वे प्रयास केवल प्रयास मात्र ही रह गये। चन्द मिन्टो बाद पुन. वही चीज़ दिमाग मे चक्कर लगाने लगी और उससे मुक्ति उस समय मिली जब वह बंगले पहुँचकर आये हुए मेहमानो से वार्ताओ और झटपट नहा-खाकर तैयार होने मे व्यस्त हो गया। उसे उन लोगो को सम्राट अकबर के मकबरे को दिखलाने के लिये सिकन्दरा जाना था।

तीसरे दिन, चौथे दिन और पाँचवे दिन भी नीलिका ने अमरनाथ से किसी प्रकार की कोई बातचीत नही की। चुपचाप आती और चुपचाप चली जाती—वही पहले वाला रवैया। जैसे न तो वह किसी को जानती हो और न कभी किसी से उसका परिचय रहा हो। अमरनाथ की सारी भावनाये समाप्त हो गईं। वह अपनी भावुकता को कोसने लगा और स्वयं को धिक्कारने लगा। उसने अपने को तुच्छ और प्रतिभा के प्रेम के प्रति विश्वासघात करने का दोषी ठहराया। उसने निश्चय किया कि नीलिका से बोलना तो दूर अब उसकी ओर देखना भी वह

गुनाह समझेगा। जब नीलिका अपने को कुछ समझ सकती है, अपने रूप-गुण पर गर्व कर सकती है तो क्या वह नही कर सकता ? वह किस मआनी मे उससे उन्नीस है। नीलिका को ही सौ बार गरज पडी थी तो इस प्रकार की बाते की थी और सग-सग बैठकर चाय पीने को कहा था। अमरनाथ बडी देर तक खिसियानी बिल्ली की भांति खम्भा नोचता रहा। नीलिका का व्यवहार उसी प्रकार का था जैसे किसी कुत्ते को खाने के लिये पुकारकर मुट्ठी मे छिपाये पत्थर से प्रहार कर देना।

कई दिनो से थमी वर्षा पुनः आरम्भ हो गई थी। समय-असमय का ध्यान किये बिना मेघ गरजकर बिजलियाँ गिराने लगे थे। जल कभी थोडा तो कभी बहुत अधिक गिरने लगा था। निर्धनो की असुविधायें बढ गईं थी और धनिको को ऋतु का वास्तविक आनन्द आने लगा था। मौसम भी चला-चली वाली स्थिति मे था इस कारण आखिरी जलवा दिखला रहा था। अमरनाथ अब रिक्शे पर कालेज आने-जाने लगा था। अपने मन के निर्णयानुसार उसने नीलिका की तरफ देखना बन्द कर दिया था। वह दिखा देना चाहता था कि ऐसे भी व्यक्ति हैं जो गिड़गिड़ाने के स्थान पर उपेक्षा भी कर सकते है।

अमरनाथ का यह दिखावटी प्रदर्शन कई दिनो तक चलता रहा। दिखावटी प्रदर्शन इसलिए कहा जा सकता है कि अमरनाथ जैसे को तैसे का उदाहरण प्रस्तुत करके पुनः सुलह कर लेने के इरादे मे था। यद्यपि उसके कथनानुसार उसे नीलिका से बिल्कुल नफरत हो गई थी और वह भूलकर भी उससे मित्रता या सम्बन्ध स्थापित करना अनुचित समझता था, किन्तु मन का चोर कुछ और ही था। वह अमरनाथ की असलियत को अच्छी तरह जानता था कि हाथी के दाँत खाने के और तथा दिखाने के और होते हैं।

कई दिन और बीत गये। एक दिन सवेरे कालेज आने के समय आसमान साफ था और पानी बरसने के कोई लक्षण दृष्टिगोचर नहीं हो रहे थे। अमरनाथ रिक्शे पर न आकर पैदल आया किन्तु आठ बजने के

लगभग हवा की सुरसुराहट बढ़ी, और देखते-देखते वह झकोरों में परिवर्तित हो गई। ऊपर आकाश में बादलों की दौड़ आरम्भ हुई। पौने नौ बजे दूसरा घंटा समाप्त हुआ और उसी दरजे में तीसरा घंटा भी होने लगा। बुधवार को इस दरजे में दो घंटे साथ हुआ करते थे। अभी दस-पन्द्रह मिनट ही बीते होंगे कि बादलों में गर्जना हुई और हलकी-हलकी बूंदें टिपटिपाने लगीं। पुनः बादल गरजे, बिजली तड़पी और झमाझम पानी बरसने लगा। साढ़े नौ बजे पीरियड खतम हुआ। कुछ विद्यार्थी दरजे में बैठ रहे, कुछ निकलकर बरामदे में खड़े हो गये और कुछ लाइब्रेरी की ओर चले गये। लड़कियाँ अपने रिटायरिंग-रूम में घुस गईं।

नीलिका बरामदे से उतरते-उतरते रुक गई। "आइये मिस्टर अमरनाथ, आपको उधर से ड्राप करती हुई निकल जाऊँगी। आज तो आप रिक्शे से आये नहीं हैं ?"

अमरनाथ ने मुँह घुमाकर तनिक आश्चर्य से देखा। कौआ ने कोयल की बोली बोलना कैसे सीख लिया, "नो थैंक्स।" अमरनाथ ने उत्तर दिया, "मैं किसी दूसरे रिक्शे से चला जाऊँगा।"

"उधर से ड्राप करते हुये निकल जाने में मुझे कोई परेशानी नहीं होगी। रिक्शे में फिर भी कपड़े भीगेंगे। आइये। कभी दूसरों को भी ओब्लाइज किया कीजिये न।" वह मुसकराई।

अमरनाथ की अकड़ समाप्त हो गई। वह अगर हाँ नहीं कह सकता था तो अब ना भी नहीं कह सकता था। मन ने अवसर से लाभ उठाने की राय दी। वह बोला किन्तु, कुछ झिझकता हुआ, "आपको इधर से चक्कर पड़ेगा नीलिका जी। मैं तो थोड़ी देर यहाँ रुक भी सकता हूँ।"

"चक्कर मुझे नहीं मेरी कार को पड़ेगा और कार चक्कर लगाने के लिए बनाई गई है। आइये। वह सीढ़ियाँ उतरती हुई दौड़कर मोटर में जा बैठी।

पीछे-पीछे अमरनाथ भी आकर बैठ गया।

कार जब बाहर निकली तो नीलिका ने पूछा, "कल के 'धर्मयुग' में आपका एक आर्टिकिल बहुत अच्छा आया है। आपका नाम देखकर ही पढा था। आप हिस्ट्री मे भी अच्छा दखल रखते हैं ?"

"कल वाले अंक मे है ?"

"क्या आपने अभी देखा नही ?"

"अभी नही। बहुत दिनो बाद छापा है। मैं तो एक प्रकार से भूल गया था।"

"दाराशिरोह के बारे मे जो कुछ आपने लिखा है वह हिस्टारिकली सही है ?"

"बिलकुल सही है।"

"हारिबिल।" नीलिका कुछ सोचने लगी।

अमरनाथ का बगला आ गया। उसने मोड़ते हुये कार रोक लिया। अमरनाथ ने कहा, "आइये, एक कप चाय तो पी लीजिये।"

"थैंक्यू। और किसी दिन। हाँ पढने के लिये अगर अपना कोई नावेल दे दे तो बेहतर होगा।"

अमरनाथ उतरकर चला गया और अपने नये उपन्यास पर "नीलिका जी को सप्रेम—" लिखकर ले आया।

नीलिका ने देखा, मुसकराई और धन्यवाद देती हुई स्टाटर को दबा दिया।

अन्दर जज साहब ने हसी की, "मालूम पड़ता है साल बदलने के साथ-साथ दोस्त भी बदल गये।" वह कचहरी जाने के लिये कपड़े पहन रहे थे।

"स्वाभाविक है। जब प्रकृति परिवर्तनशील है तो मैं उससे अछूता कैसे रह सकता हूँ। यह भी पूर्व जन्म की कमाई का फल है हुजूरवाला। सब को नसीब नही हो सकता। इसके लिये बड़ी कुरबानियो की जरूरत होती है।"

"इसमे क्या शक ? सब लोग चप्पलों की चटाचट थोड़े बर्दाश्त कर

सकते हैं।" वह हस पड़े।

अमरनाथ भी हंसने लगा। उस समय उसके अन्दर एक नई उमंग आ गई थी। हफ्तो की उदासी समाप्त हो गई थी। उचका हुआ मन पुनः अपने स्थान पर आ गया था। जो खोया था वह बिना उम्मीद के मिल गया था। दिन भर अधिक परिश्रम करने के उपरान्त भर पेट भोजन मिला था और सोने की सुविधा भी मिली थी ठीक ऐसा ही सतोष था। लेकिन यह सब था आन्तरिक। बाह्य रूप से अमरनाथ इसके सर्वथा भिन्न अपने को व्यक्त कर रहा था। या यह कहा जा सकता है कि वह दूसरों के स्थान पर अपने को धोखा दे रहा था।

दूसरे दिन कालेज मे मिलते ही नीलिका ने प्रशसा की, "बहुत अच्छा लिखा है मिस्टर अमरनाथ। बस एक चीज मुझे जरूर खटकी थी।"

"क्या ?"

"यन्ड कॉमिडी मे नही ट्रेजडी मे होना चाहिये था। फिर से हीरो का हीरोइन से आ मिलना कुछ अननेचुरल लगता है। मालूम होता है परपजली कराया गया है।"

"आपका कहना सही है। परपजली ही कराया गया है। मैं पहले दोनो को अलग रखना चहता था। तभी उसमे कसक भी थी लेकिन बाद मे नामालूम क्या सोचकर मैंने ऐसा कर दिया।"

घटा टन-टन-टन करके बोल उठा। दोनो कक्षा की ओर बढ़ गये।

उधर पेड के पास खड़े कुछ लड़के आपस मे कह रहे थे, "दोनो ही कलाकार हैं और जचते भी खूब हैं।" दूसरे ने आपत्ति की, "लेकिन जो हुस्न और अन्दाजा लौंडियां ने पाया है उसका क्या मुकाबिला ?" तीसरे ने समर्थन किया, "गुरु ने लाख रुपये की बात कह दी। क्या उभार है ? लेकिन बाबू ऐसी चीजे अपने मुकद्दर मे नही बदी है। आओ चले।" मंडली हंसती हुई दूसरी ओर मुड़ गई।

प्रिन्सिपल के कमरे के समीप जो तीन-चार लड़के खड़े थे, उनके

बीच भी इस समय नीलिका और अमरनाथ की चर्चा छिड़ी थी। एक कह रहा था, "डीयर, बड़ा उम्दा माल इस बौडम लौंडे ने फांस लिया। सिड़ी है। लड़कियों की भी अजीब समझ होती है। कहाँ जाकर गिर पड़ती है?" उसने मुंह बनाया।

बगल वाले लड़के ने सामने वाले लड़के को कुछ इशारा किया और कहा, "तुम लोग मानो या न मानो, अतुल बात बड़े पते की कहता है। लौंडियों के सचमुच ही दिमाग नहीं होता है। उसे तो अतुल से रोमान्स करना चाहिये था, तब जिन्दगी का कुछ लुत्फ भी मिलता मगर फस गई उस चूतिया बसन्त लेखक के फन्दे में। बाबू अगर कहो तो कोई जाल फेंके।"

"क्यों यार, "सामने वाला लड़का मुसकराया, "अतुल को घिस रहे हो। बाबू की शक्ल पर तो साढ़े बारह बज रहे हैं और ड्रीम देखते हैं उस लड़की का। बुद्धू बक्स। जब सवेरे उठा करो तो शीशे में एक बार मुंह देख लिया करो। वह हंसने लगा।

अतुल खिसिया गया, 'तुम से तो अच्छी हैं। नान्सेंस।" वह वहाँ से चल दिया। अन्य साथी ठट्ठा मारकर हंस उठे।

अन्तिम घंटा समाप्त हुआ। पहले लड़कियाँ दरजे से बाहर निकली तदुपरान्त लड़के। नीलिका, अमरनाथ की प्रतीक्षा में बाहर खड़ी रही। "आप तो," उसने पूछा, "अब घर जायेंगे?"

"क्यों आपका कहीं और चलने का विचार है। हाँ 'चक्कर' लगाने को जरूर सोचा था।" दोनों साथ-साथ चलने लगे।

"धन्यवाद। इसे मौके-बे-मौके के लिये रखिये वरना बिगड़ने की भी तो सम्भावना हो सकती है?" अमरनाथ ने एक तीर से दो निशानों पर वार कर दिया।

नीलिका ने वाक्य के भावार्थ को समझा अथवा समझकर भी ना-समझ बनी रही—कहना कठिन है परन्तु उसने जो उत्तर दिया वह भी उसी तरह का था, "ऐसे छोटे-मोटे चक्करों में भी कुछ बनता-बिगड़ता है?

बिगड़ने की नौबत तो बड़े-बड़े चक्करो मे आती है। आइये, उधर से आपको ड्राप करती हुई निकल जाऊँगी।"

अमरनाथ को लाजवाब होना पड़ा। वह मुसकराता हुआ अपनी झेंप मिटाने का झूठा प्रयास करने लगा।

दोनो कार मे बैठ गये। अमरनाथ ने सामने देखा—सभी लड़को की दृष्टि उसी पर थी, "आपकी गाड़ी मे," वह बोला, "बैठने से एक फायदा तो हुआ ही।"

"क्या ?" नीलिका ने स्टेयरिंग घुमाते हुये उसकी ओर देखा।

"मुझे भी सब लड़के देखने लगे हैं।"

"गुड न्यूज। यह भी लक की बात होती है। आपको अब मिठाईयाँ खिलानी चाहिये।"

"अच्छी बात है। आज रखूँ या कल ?"

"बताऊँगी। पहले किसी दिन मेरे यहाँ भी तो आइये।"

"जरूर आऊँगा। आप···।"

"कैन्टोन्मेन्ट मे अकबर रोड पर नाइन नम्बर बँगलो। वैसे नेम-प्लेट लगी है—मिस्टर आर० एन० दरे।"

"समझ गया। मुझे अकबर रोड का अन्दाज है। शाम को आप रहती ही होगी ?"

"जनरली। किसी खास जरूरत पर ही निकलना होता है। अच्छा तो यह होगा कि जिस दिन आप रहे उस दिन गाड़ी···।"

"नही, मैं किसी दिन भी आ जाऊँगा और अगर संयोगवश आप नही भी मिली तो इसी बहाने एक दिन सदर का टहलना भी हो जायेगा। इधर बहुत दिनो से जाना भी नही हो सका है।"

अमरनाथ का बंगला आ गया। नीलिका ने रफ्तार धीमी कर दी।

२०

नीलिका और अमरनाथ की घनिष्ठता मे उत्तरोत्तर वृद्धि होती गई। बात-चीत के लहजे मे बहुत नही, पर थोड़ा बहुत अन्तर आने लगा। उपयुक्त अवसरो पर अमरनाथ मजाक भी कर बैठता था जिसे नीलिका कभी हँसकर टाल देती और कभी-कभी उसी के अनुसार उत्तर भी दे देती। अमरनाथ की बाछे खिल जाती। उत्साह बढ़ जाता। यद्यपि आँखो मे आँखे डालकर देखने वाला कार्य आरम्भ नही हुआ था, परन्तु अब बहुत जल्द ही होने वाला था। बिना उसके मन की गहराइयों का अनुमान नही लग सकता था और मन की गहराई समझे बिना, आगे किसी प्रकार की प्रगति हो नही सकती थी। कहाँ क्या था और कहाँ क्या होने लगा था ?

आरम्भ मे अमरनाथ की भावनाये कुछ और थी, जैसे वह अपने मन को समझाया करता था, किन्तु अब उनमें अन्तर आ गया था। अमरनाथ अब नीलिका की प्राप्ति का स्वप्न देखने लगा था। हालाँकि उसका वह स्वप्न प्रतिभा के प्रेम के प्रति विश्वासघात था। पर वह अपने दोनो कान पकडकर तोबा नही कर पा रहा था। उसकी दशा चोर की दाढ़ी मे तिनके वाली हो गई थी और इस दशा से मुक्ति पाने के हेतु उसने एक दिन तय कर लिया, कि वह अपनी कमजोरी प्रतिभा को अवश्य बतला देगा, चाहे वह बुरा ही क्यो न मान जाय ? वह उसे धोखा देना नही चाहता था। उसकी अन्तरात्मा अब इसके लिये बिल्कुल तैयार नही थी। गलती को स्वीकार कर लेना पाप नही है, पाप है उसे अस्वीकार करना।

सदैव की भाँति अमरनाथ जब उस दिन प्रतिभा से मिलने आया तो उसके अन्तर में भयंकर द्वन्द्व छिड़ा हुआ था। किन्तु वह दृढ़ था। प्रतिभा से सब कुछ कह देने के लिये कमर कस चुका था। कुछ समय तक इधर-उधर की बातें करने के उपरान्त उसने भूमिका आरम्भ की "मैं यह नही समझ पाता प्रतिभा कि अधिकतर लव-मैरिजेज असफल क्यो हो जाती है? लगभग दो ढ़ाई वर्ष पूर्व मेरी रिश्तेदारी मे एक लड़की का किसी लडके से प्रेम हो गया था। लड़की वाले उस लडके से विवाह नही करना चाहते थे। लड़की पढ़ी-लिखी थी इस कारण उसे किसी प्रकार की धमकी नहीं दी जा सकती थी। बस एक समझाने का रास्ता था और इसके लिए माँ-बाप ने मुझे बुलवा भेजा। मै तुमसे क्या बताऊँ, दो दिनों तक समझाते रहने के उपरान्त भी उस लड़की को उसके इरादे से मै बदल न सका। उसका सिर्फ यही कहना था कि वह उस लडके के अतिरिक्त किसी दूसरे लड़के से चाहे वह जैसा भी हो, किसी हालत मे मैरिज करने को तैयार नही है। वह उसके लिये सारे संसार को त्याग सकती थी। फिर मैं उस लड़के और उसके घरवालो से मिला। वहाँ भी वही स्थिति थी। लड़के के माता-पिता इस परिवार में शादी करने को तैयार नही थे, लेकिन लड़का अपनी बात पर अड़ा हुआ था। अन्त में मैंने लड़की के माँ-बाप को विवाह कर देने की सलाह दी, पर इन लोगों ने ऐसा नही किया। फलस्वरूप लड़की उस लड़के के साथ भाग गई। लगभग एक वर्ष बाद दोनो कानपुर आये। लड़का किसी इगलिश फर्म में लग गया था और उसे कानपुर और लखनऊ का इन्चार्ज बनाकर भेजा गया था। मोटर और बंगला कम्पनी की तरफ से फ्री मिला हुआ था। यह सब होने के बावजूद भी एक दिन लड़की ने लड़के से, डाइवोर्स लेने की कचहरी मे अरजी लगा दी है। कल कानपुर से एक सज्जन आये हुये थे, वही बता रहे थे। मुझे सबसे बड़ा आश्चर्य यह है कि जो साल-डेढ़ साल पूर्व एक-दूसरे के वास्ते जान तक देने को तैयार थे, आज डाइवोर्स पर कैसे उतर आये? कहाँ इतना प्रेम और कहाँ इतनी

घणा।"

"दोनों ने ऐप्लीकेशन लगा दी है ?" प्रतिभा ने पूछा।

"वह तो यही बता रहे थे।"

"कारण क्या दे रखे हैं एप्लीकेशन मे ?"

"इसकी जानकारी उन्हे नही है। मैंने पूछा था। वैसे उनका अनुमान है कि दोनो एक-दूसरे से अब सेटिसफाई नही है। अगर एक आम कहता तो दूसरी इमली बताती है और यह आम-इमली की लडाई, व्यक्तिगत अधिकारो की लड़ाई बनकर, अब इस रूप मे बदल गई है।"

"उनका अनुमान सही है। यही होगा भी। अगर एप्लीकेशन किसी एक पार्टी से पड़ी होती तब तो हो सकता था कि दूसरा पक्ष कुमार्गी बन गया हो लेकिन···।"

"मेरा असली मतलब पूछने का प्रतिभा यही था। मान लिया वहाँ विचारो मे भिन्नता के कारण दोनो अब अलग होना चाहते है लेकिन लव-मैरिजेज मे आम तौर पर, जो दूसरी शिकायते सुनने को मिलती हैं वह क्यो ? क्या केवल सेक्स के लिये··।"

प्रतिभा ने बीच मे टोक दिया, "आम तौर पर तो दोनों ही शिकायते सुनने को मिलती हैं और एक प्रकार से दोनो के लिये आप लोग ही दोषी ठहराये जा सकते है।"

"वाह, यह तुमने अच्छी चिपकाई। क्या आप लोग जन्मजात निर्दोष है ?"

"करीब-करीब। माना आपके केस मे ऐसा नही है पर अधिकतर यही होता है कि जब किसी युवक-युवती मे प्रेम के सम्बन्ध जुड़ने लगते हैं, तो युवक अपनी मुहब्बत की सच्चाई को साबित करने के लिये, या युवती को हासिल करने के लिये, इतना आगे बढ जाता है कि उसे दीन-दुनिया की कोई खबर नही रह जाती। वह युवती की डॉटे भी सुनता है, झिडकियाँ भी बरदाश्त करता है और उसके कहने के अनुसार दिन को रात और रात को दिन भी कहता है मगर शादी होने के बाद ही, वही

प्रेमिका जब पत्नी बनकर उसके साथ रहने लगती है, और पुरुष के सेक्स की भूख समाप्त हो जाती है, तो वह अपना रूप बदलने लगता है प्रकृति से शक्ति सम्पन्न होने के कारण वह अपनी श्रेष्ठता उसपर लादने का प्रयत्न करने लगता है। बस यही से खटपट प्रारम्भ हो जाती है। जिस युवती की उँगलियों के इशारो पर वह पुरुष कभी नाचा करता था, "अब वही अपनी शक्तियो के बल पर, उसे नचाना चाहे तो वह कैसे नाच सकती है ? इतना ही नही, पुरुष मे सेक्स की दुर्बलता अधिक होने के कारण वह मैरिज के बाद अपनी पत्नी मे वह आकर्षण नही पाता जो पहले पाया करता था। नतीजा होता है कि वह इधर-उधर की हरकते शुरू कर देता है। साथ ही अपने ऐबो को छिपाने के लिए पत्नी से झूठ भी बोलने लगता है और जब इन सारी बातो का घडा भर जाता है तो या तो डाइवोर्स होता है या जहर देकर किसी की हत्या होती है. या कोई एक पक्ष दूसरे पक्ष को छोड़कर भाग जाता है।"

अमरनाथ मुसकराया।

"क्यो, इसमे हँसने की क्या बात है ?" प्रतिभा को कुछ बुरा लग।

"इसलिये कि तुमने तो नेताओ की भाँति बड़ा लम्बा भाषण दे डाला।"

"भाषण इसलिए दे डाला है कि लेखक महाशय भी अपने को सदैव समझते रहने का प्रयत्न करते रहे।"

"अच्छा, यह मतलब है ? लेकिन तुमने तो अभी कहा था कि मेरा केस इस प्रकार का नही है। यानी मेरी जगह तुम मेरी उँगलियो के इशारे पर नाचती हो ?"

प्रतिभा फँस गई। उसके पास बात टालने के अतिरिक्त दूसरा उपाय नही रह गया। उसने मुंह बिराया, "आपकी उँगलियो के इशारो पर मैं जरूर नाचूगी। यह मुंह और मसूर की दाल।"

अमरनाथ ठट्ठा मार कर हँसने लगा और अचानक अपनी गर्दन को झुकाता हुआ उसके अधरो को चूम लिया। प्रतिभा उचककर खड़ी हो गई, "मै आपके पास नही बैठूगी। हर समय बदतमीजी करते है।"

अमरनाथ ने हाथ पकड़ लिया।

"छोड़िये। मैं बिल्कुल नही बैठूंगी, बिल्कुल नहीं बैठूगी, बिल्कुल नही बैठूगी।"

"अगर माफी मांग लूं तो?"

"तब भी नही बैठूगी। आप इस तरह की माफियां सैकड़ों बार मांग चुके हैं। आपकी जबान का मुझे जरा भी भरोसा अब नही रहा। आप बड़े स्वार्थी हैं।"

अमरनाथ ने उसका हाथ छोड दिया और अपने दोनों कान पकडते हुये खड़ा हो गया, "दस बार उठूं-बैठूंगा या पन्द्रह बार?" वह फिर बैठता हुआ बोला, "एक।"

प्रतिभा के अधरो पर हँसी बिखर गई, "हटिये, लगते है तमाशा करने। किसी छत से कोई देखता हो तो। हाथ नीचे कीजिये।"

दोस्ती हो गई। अमरनाथ ने उपयुक्त अवसर समझकर कुछ गंभीर मुद्रा मे अपनी असली बात आरम्भ की, "जैसा तुम अभी कह रही थी कि पुरुषो में सेक्स की दुर्बलता बहुत बड़ी दुर्बलता है, और मान लो किसी प्रकार से मैं भी उसका शिकार हो गया। तब तुम मेरे साथ कैसा व्यवहार करोगी?"

"जैसा एक लडकी को कायदे से करना चाहिये। वहां भी कोई दो राये हो सकती हैं?"

"और अगर मान लो मैं अपनी दुर्बलता का शिकार तुम्हारी जानकारी मे होता हूं तो?"

"क्या मतलब? मैं कुछ समझी नही।"

"मतलब यह कि मैं कोई भी गलत काम अगर तुमसे बता कर करता हूं तब तुम्हारा व्यवहार कैसा होगा?"

प्रतिभा के मस्तिष्क मे कोई चीज खटकी। उसने गौर से अमरनाथ को देखा, "पहले जैसा ही होगा?"

"क्यों? यह तो जबरदस्ती वाली बात हुई न। जब मैं गलत या

मही काम तुम्हे बताकर करता हूँ तो यह साफ है कि मेरे हृदय में न तो कोई छल है और न कपट और जब ये दोनों नही है तो मेरे साथ पहले जैसा व्यवहार क्यों होना चाहिये ?"

प्रतिभा को उत्तर देने के लिये कुछ सोचना पड़ा। अमरनाथ पुनः बोल उठा, "बात असल यह है प्रतिभा कि तुम्हारा प्यार जिस रूप मे मुझे प्राप्त हुआ है, उसी रूप मे अन्य किसी लड़की का प्राप्त हो सकेगा असम्भव है। मैं उसे क्या समझता हूँ इसे अभी कहने से कोई लाभ नही। भविष्य उसे स्वय बतलायेगा। मैं इस समय अपनी एक दूसरी बात बताना चाहता हूँ और आशा करता हूँ कि तुम उस पर ठंडे दिमाग से सोचने की कोशिश करोगी। इधर कुछ दिनो से मैं नीलिका की ओर खिचने लगा हूँ लेकिन यह खिचाव एकतरफा नही है। हालांकि अब भी हम एक-दूसरे से बहुत दूर हैं, और सम्भव है यह दूरी अन्त तक बनी रहे, मगर कई दिनो तक सोचने के उपरान्त मैने अपने पाप को तुमसे छिपाना उचित नहीं समझा। मैं तुम्हारी मुहब्बत के साथ विश्वासघात नही कर सकता हूँ।"

प्रतिभा देखती रह गई। अन्तर मे हल-चल उठ पड़ा परन्तु उसने दबाया और साहस बटोर कर अमरनाथ के नेत्रों से नेत्र मिलाये, "तो अब आप मुझसे क्या चाहते हैं ?"

"अन्यथा न लेने का वचन।"

"किस लिये ?"

"मैं तुम्हारे प्यार से वंचित होना नही चाहता।"

"लेकिन किसी एक से तो वंचित होना ही पड़ेगा। दोनों साथ साथ…।"

"दोनों को साथ-साथ रहना कब है ? नीलिका का एट्रैक्शन तो टेम्परेरी है न ?"

"जिसे आप टेम्परेरी समझते हैं वह परमानेन्ट भी बन सकता है। जब नीलिका इतना आगे बढ़ सकती है तो उस प्यार को भी दे सकती है

जिसे आप…।"

"बिल्कुल नहीं दे सकती प्रतिभा। यह उसी तरह निश्चित है जिस तरह सूरज का पूरब में निकलना। और दूसरी बात यह भी है कि अभी मेरे और नीलिका के बीच जैसा तुम समझ रही हो, कोई भी सम्बन्ध नही है। मैंने अपना पाप तुमसे इसलिये बता दिया है कि तुम्हारे प्यार पर मैं कलक न बन सकूं। मैं उसे धरोहर की भाँति रखना चाहता हूँ।"

प्रतिभा मौन रही। अमरनाथ चुप रहा। थोड़ी देर के लिये वातावरण में निस्तब्धता आई। सीढियो पर किसी के आने की आहट मिली। प्रतिभा कुछ खिसक गई। अमरनाथ ने किसी फिल्म की बात छेड़ दी।

प्रतिभा की भाभी ऊपर आई। चौके से अब छुट्टी मिली थी। वह भी अमरनाथ की वार्ता में सम्मिलित हो गई।

२१

नीलिका को निमंत्रण दिये कई दिन बीत चुके थे किन्तु अमरनाथ अभी तक उसके निवासस्थान पर नही जा सका था। और जानबूझ कर नही जा सका था। अभी वह और कसना चाहता था। तभी भविष्य की नीव दृढ़ बन सकती थी और नीलिका जैसी लडकी पर हावी हुआ जा सकता था। हफ्ते-डेढ हफ्ते और बीत गये। एक दिन फिर नीलिका ने अपने निमंत्रण का स्मरण दिलाया और साथ मे मीठा उलाहना भी दिया। अमरनाथ ने क्षमा याचना की और निश्चित रूप से अगले सप्ताह मे आने को कहा। नीलिका की विकलता को उभारने मे ही, उसे अपने कर्त्तव्य मे सफलता मिल सकती थी।

कुआर का महीना आरम्भ हो गया था। धप क्या होने लगी थी

मानो आकाश मे दहकते अंगारो की चादर डाल दी गई हो। किन्तु कुश-लता यह थी कि सूर्य के अस्ताचल को प्रस्थान करते ही, ये अंगारे इतनी जल्दी ठडे पड जाते थे कि अनुमान लगाना कठिन हो जाता था कि जड़-चेतन का यह विहंसता भू-मडल, अभी कुछ पूर्व, भीषण तपन के कारण त्राहि-त्राहि करता रहा होगा। इसी विहस्ते वातावरण मे अमरनाथ अपने विशेप वस्त्रो मे सुसज्जित, रिक्शे पर बैठा अकवर रोड को चला जा रहा था। हृदय मे उल्लास था, मन मे विश्वास था और अंग-अंग मे उत्साह था।

सूर्यनगर से सदर अर्थात् कैन्टोमेंट और उस सदर से आगे सी०ओ० डी० के मार्ग पर, अकवर रोड था। रिक्शे वाला मशीन की भाँति पैरो को पैडिल पर नचाता, सड़क पर दाहिने-वाये हैंडिल घुमाता सदर होता हुआ अकवर रोड आ पहुँचा। किन्तु मन मे सन्देह होने के कारण उसने पूछा, "इसी सड़क पर मुडना होगा न बाबूजी ?"

"हाँ, दाहिनी ओर।"

रिक्शा अकवर रोड पर बढ चला। अमरनाथ नम्बर गिनने लगा, "छे, सात, आठ, और नौ। रोको रिक्शे वाले।"

चालक ने रिक्शे मे ब्रेक लगा दिया। अमरनाथ ने देखा। फाटक के खम्भे पर नाम वाली तख्ती लगी थी जिस पर अंग्रेजी मे लिखा था—'आर. एन. दरे' और उसी के नीचे एक दूसरी तख्ती पर हिन्दी मे लिखा था, "कुत्ते से सावधान।"

अमरनाथ ने रिक्शेवाले को पैसे दिये और उतर पडा। वह फाटक पर आया ही था कि बहुत बडे आकार का अलसेशियन कुत्ता, भयंकर गर्जना के साथ लपका। तब तक किसी के डाँटने की आवाज आई, "टाइगर-टाइगर।" दौडता हुआ नौकर आगे आया, "फ्रेंड। जाओ। अन्दर जाओ।"

कुत्ता दुम हिलाता मुड गया। नौकर ने फाटक खोला। अमरनाथ बोला, "मैं नीलिका जी से मिलना चाहता हूँ।"

"आइये।" नौकर आगे-आगे चलने लगा।

बहुत बड़ा बंगला जिसके आगे बहुत बड़ा लान था। विभिन्न फूलों की शोभा थी। स्थान-स्थान पर कलात्मक ढंग से लाल, पीले, हरे, सफेद रंगों के छोटे-बड़े गमले रखे हुये थे जिन्हें देखकर रहने वालों की कलात्मक रुचि का आसानी से अनुमान लगाया जा सकता था। लान के बाद पोर्टिको और उनसे लगा हुआ दूध-जैसा चमकता बरामदा, जिसमे आधुनिक ढंग के कुछ गोल-गोल और कुछ चिपटे-चिपटे, आकार-प्रकार की कुरसियाँ इधर-उधर पड़ी थीं। पोर्टिको के समीप पहुँचते ही नीलिका का सुरीला कंठ सुनाई पड़ा। वह अन्दर गा रही थी—

पिया की अनोखी रीति,
बिसर गई अपनी नीत अनीत।

अमरनाथ बरामदे में बैठ गया। नौकर एक कागज और पेंसिल ले आया, "इस पर साहब अपना नाम लिख दें।" वह बोला।

अमरनाथ ने नाम लिख दिया, "अभी रुक कर देना। गाना खतम हो जाने के बाद।"

"जी।" वह चला गया।

अमरनाथ कंठ की मादकता में अपने को भूल गया।

गीत समाप्त हुआ। नौकर चिट लेकर अन्दर गया और वह देकर बाहर निकला ही था कि नीलिका मुसकराती आ खड़ी हुई, "आखिर इधर का रास्ता भूलना ही पड़ा। ईश्वर को बार-बार धन्यवाद है। आप आये तो। ढूंढ़ने में कोई परेशानी तो नहीं हुई?"

अमरनाथ ने सरसरी दृष्टि से नीलिका को ऊपर से नीचे तक देखा, "परेशानी अगर होती तब भी उसमें प्रसन्नता का ही अनुभव किया जाता लेकिन ऐसी नौबत आई नहीं।" नीलिका हरी साड़ी और आस्तीन-रहित हरे ब्लाउज में विकसित सफेद गुलदाउदी के समान दिख रही थी।

"आइये, अन्दर आइये।"

अमरनाथ पीछे-पीछे उस कमरे में आया, जहां एक हृष्ट-पुष्ट शरीर

का मनुष्य, मुंह मे पाइप लगाये बैठा था। चेहरा गम्भीर और कुछ रूखापन लिये था। आयु लगभग चालीस के मालूम पड़ रही थी। अमरनाथ को देखते ही वह व्यक्ति खड़ा हो गया। नीलिका ने परिचय कराया, "माई हस्बन्ड मिस्टर आर० एन० दरे और मिस्टर अमरनाथ माई...।"

दरे ने बड़े तपाक से हाथ मिलाया, "तशरीफ रखिये।"

अमरनाथ के पैरो के नीचे से ज़मीन खिसक गई थी। उसे कुछ स्वप्न-सा दिखने लगा था। वह बैठ गया। चेहरा फक पड़ गया था। और किसी लज्जा के कारण मस्तक झुका जा रहा था। नीलिका और उसके पति भी बैठ गये थे। दरे बोला, "आपकी तारीफ नीलिका से सुनता रहा हूँ। आपका नावेल भी देखा था। मैं हिन्दी नावेल्स पढ़ता नही मगर आपके दस-पांच पन्ने उलटे थे। पसन्द आया। खास चीज जो मैं इंग्लिश नावेल्स मे भी देखा करता हूँ, वह है लैंग्वेज का फ्लो। आपकी भी लैंग्वेज मे फ्लो है। आप रहने वाले कानपुर के हैं?"

"जी हां। यहां मैं अपने ब्रदर-इन-ला के साथ रहता हूँ।" अमरनाथ विवशता मे बोला। उसे अब यहां एक क्षण रुकना पहाड हो रहा था।

"इन्हें तो मैने जबरदस्ती इस साल कालेज मे एडमिशन दिला दिया था। घर मे अकेले बोर हुआ करती थी।" उसने नीलिका की ओर अपनी गर्दन घुमाई, "तुम्हे प्रीवियस किये करीब छः साल हो गये होगे?"

"करीब-करीब। तुमसे मेरी मुलाकात थर्ड नवम्बर फिफ्टी फाइव को हुई थी। मार्च मे मेरे एक्जाम्स हुए और उसके बाद ही हम लोगों की शादी हो गई थी। नाउ इट इज सिक्स्टी।" उसने अमरनाथ को देखा किन्तु अमरनाथ की आंखे झुकी हुई थी। नीलिका को देखने का सामर्थ्य उनमें अब नही रह गया था।

दरवाजे का परदा हिला। एक खूबसूरत-सा बच्चा अन्दर आया, पर अमरनाथ को देखकर ठिठका।

"कम ग्रान डार्लिंग, कम ग्रान।" नीलिका ने उँगलियों से संकेत किया।

लड़का दौड़ता हुग्रा माँ की गोद मे चढ गया किन्तु क्षण-भर बाद ही वह पिता की गोद में जाने का प्रयत्न करने लगा।

ग्रमरनाथ की भावनाग्रो पर एक के बाद दूसरे प्रहार होते चले जा रहे थे।

"इत्तफाक से," दरे दोला, "ग्रापकी ग्रौर नीलिका की फ्रेंडशिप भी ग्रच्छी हो गई है। ग्रगर ग्राप थोडा टाइम कम्बाइन्ड स्टडी मे दे देंगे तो कोई वजह नही है कि इनका भी फर्स्ट क्लास न ग्रा जाय। मैं इनसे यह बात कई बार कह चुका हूँ। पता नही ग्रापसे इन्होने जिक्र किया है या नही?"

"इसमे कहने की क्या बात है। कम्बाइन्ड स्टडी तो दोनो के लिये लाभदायक है। ग्रभी तो कुछ जल्दी होगी। दिसम्बर या जनवरी से मैं समझता हूँ...।"

"बिल्कुल, बिल्कुल। पढने का मौसम भी वही...।"

"तुम भी," नीलिका ने टोक दिया, "पढ़ाई की बातो मे कहाँ उलझ गये? ग्रमरनाथ जी से पहले गजले तो सुनो। रेसीटेशन का यूनीक स्टाइल है। यू विल फारगेट योरसेल्फ।"

पूर्व इसके कि दरे कुछ कहे ग्रमरनाथ कह उठा, "नीलिका जी ने बहुत बढ़ा चढाकर ग्रापसे बात कह दी है लेकिन फिर भी मैं जैसा जो कुछ सुना पाता हूँ, किसी दिन सुना दूँगा।"

"यह नही होगा ग्रमरनाथ साहब। गजल तो ग्रापको सुनानी ही पडेगी।" वह मुसकरा रहा था।

"ग्रौर किसी दिन के लिये रखिये। ग्राज।"

"बस, वही कालेज वाली," नीलिका ने दबाव डाला, "दूसरी गजल के लिये मैं नही कहूँगी। दरे साहब के सामने मेरी नाक तो न कटाइये।" ग्रमरनाथ के मनोभाव को समझती हुई भी नीलिका ग्रज्ञान थी।

दरे ने दूसरा रास्ता अपनाया, "पहले कोई चीज़ तुम सुनाओ नीलिका, तब शायद अमरनाथ साहब का मूड बने। राइटर्स के साथ यह भी तो एक परेशानी है।" वह पुनः मुँह मे पाइप लगाता हुआ धुआँ उडाने लगा। उसकी गोद से उसका चार वर्षीय पुत्र, आया के बुलाने पर उतरकर तुलबुल-तुलबुल भागता, दूसरे कमरे मे चला गया।

नीलिका ने नौकर को आवाज देकर तबला लाने को कहा। नौकर तबला रख गया। खिन्न-मन अमरनाथ तख्त पर बैठकर तबला मिलाने लगा।

नीलिका ने स्वर भरे और 'ओ सजना बरखा बहार आई'''।' गाने लगी। अमरनाथ की व्यथा दुगनी हो गई। आज तक की सारी कल्पनायें एक-एक करके मस्तिष्क में घूम गई। नीलिका ने उसकी भावनाओ के साथ बड़ा दगा किया था। उसने उसे घुमाने के बहाने, समुद्र तट पर जाकर पीछे से धक्का दे दिया था। वह विवाहित थी फिर भी उसने अपने को अविवाहिता जैसा उसके सामने क्यो पेश किया था? किस कारणवश उसने हंसी मजाक को बढ़ावा देकर, परोक्षरूप से प्रेम का सकेत दिया था और किस कारणवश आज उसे यहाँ बुलाकर उसने अपनी वास्तविकता बतलाई थी। अमरनाथ इन बातों को सोचता रहा। वह गाना-सुनना भूल गया था और यही कारण था कि जब नीलिका ने गीत समाप्त किया तो मशीन की भाँति चलती हुई उसकी उँगलियाँ सम पर न रुक सकी थी।

नीलिका मुसकराई, "वाह।"

"सॉरी।" अमरनाथ की उँगुलियाँ रुक गई। मैं गजल की पक्तियाँ सोचने लग गया था।" उसने बहाना किया।

अमरनाथ ने जैसे-तैसे गजल सुनाई और चलने की इच्छा व्यक्त की। दरे ने भोजनोपरान्त जाने को कहा। अमरनाथ ने आपत्ति की और पुनः अपनी बात दोहराई। पुनः उसकी बात अस्वीकृत हुई और किसी भी दशा मे भोजन के पहले न जाने देने का ही निर्णय दिया गया।

नीलिका के प्रस्ताव पर सब उटकर बाहर लान मे आ बैठे। दरे ने राज-नीति की चर्चा आरम्भ की। अमरनाथ हाँ-हूँ करता रहा। दूसरा चारा क्या था? थोड़ी देर बाद नीलिका ने विषयान्तर किया और साहित्य सम्बन्धी वार्ता आरम्भ की। देशी एव विदेशी लेखको तथा उनकी कृतियो पर नाना प्रकार की बाते लगभग पौन घटे तक होती रहीं। तत्पश्चात नीलिका ने आवाज़ देकर खाना लगवाने को कहा।

२२

दूसरे दिन अमरनाथ दरजे मे कुछ देर से आया—घंटा बोलने के दस मिनट बाद और बगल के दरवाजे से घुसकर वही पास की कुरसी पर बैठ गया। आहट मिली। नीलिका ने सिर घुमाकर देखा किन्तु अमरनाथ से आँखे न मिल सकी। अमरनाथ सिर झुकाये किताब देख रहा था। नीलिका से आँखे मिलाने की हिम्मत अब उसमें नही रह गई थी। घटा समाप्त हुआ। अमरनाथ ने झट से बाहर आ गया और कैन्टीन की ओर बढ गया। वहाँ एक गिलास पानी पीने के उपरान्त खड़ा रहा। जब समझ लिया कि प्रोफेसर गुप्ता क्लास मे पहुँच गये होगे तब वह आया और बिल्कुल पीछे की कुरसी पर बैठ गया।

दूसरे घंटे के उपरान्त तीसरे घटे मे भी अमरनाथ की वैसी ही हरकत रही। वह नीलिका को बातचीत का अवसर नही देना चाहता था। वह अत्यधिक लज्जित था। अन्तिम घटे की समाप्ति पर वह जल्दी से बाहर निकलकर लम्बे-लम्बे डग रखता कालेज-गेट के बाहर हो गया। नीलिका चुपचाप अपनी मोटर में आ गई। उसने अमरनाथ को तेजी से जाते हुए देख लिया था।

अमरनाथ का यह बरकाव अधिक दिनों तक न चल सका। चौथे दिन नीलिका ने उसे दूसरे घंटे मे ही घेर लिया। जब तक अमरनाथ आया नही वह बाहर खड़ी रही। वह आया। विवशता मे हाथ जोडने पड़े और पूछना भी पड़ा, "बाहर कैसे खड़ी है? गुप्ताजी शायद आ गये है।" उसकी दिखावटी मुसकराहट होठो पर फैल गई थी।

"आपका ही वेट कर रही थी। पीरियड ओवर होने पर रुकियेगा! आप से कुछ बाते करनी हैं।" वह दरजे मे चली गई।

छुट्टी होने पर नीलिका के साथ-साथ अमरनाथ उनकी गाडी मे आकर बैठ गया। कालेज से बाहर निकलने पर नीलिका ने पूछा, "इधर तीन-चार दिनो से आपका मूड कुछ वैसा दिख रहा है, क्या बात है?"

"कोई बात नही। जल्दी की वजह से भेंट नहीं हो सकी है।" अमरनाथ ने अपने चेहरे पर प्रसन्नता के भावो को उभारने का प्रयत्न किया, "आप जैसे लोगो का साथ मिलने पर भी अगर मूड खराब हो जाया करे तो इनसे बढकर और कमबख्ती क्या हो सकती है?"

"खैर, मैंने समझा था कि आप मेरी किसी बात पर नाराज है। असल चीज यह है मिस्टर अमरनाथ कि किसी से फ्रेंडशिप करना मेरे खयाल से गुनाह करना है लेकिन करके छोड देना उससे भी बड़ा गुनाह होता है। अगर आपको मेरी तरफ से कोई मिस अन्डरस्टैन्डिग हो गई हो तो उसे निकाल दे और अगर पूछने वाली बात हो तो पूछ भी सकते है। थोड़े दिनो का और साथ है। फिर आप कहाँ और मैं कहाँ? अब एक गुनाह करके दूसरा गुनाह क्यो किया जाय?"

अमरनाथ ने उसकी हाँ मे हाँ मिलाकर अपने को गलत बताया, "मेरे मन मे न तो आपकी तरफ से कोई मिसअन्डरस्टैन्डिग है और न तो आपकी किसी बात से मैं नाराज हूँ। मैंने आपको अवश्य अप्रसन्न किया है, जिसके लिये क्षमा चाहूँगा।"

"जी नही। यह माफी इतनी जल्दी नही मिलेगी। इसके लिये

आपको मेरे यहाँ आना होगा, दो-चार गजलें मुझे और मेरे हसबन्ड को सुनानी होंगी, खाना खाना होगा, घंटे-दो घंटे बातें करनी होंगी तब आप को माफी देकर आने की इजाजत दी जा सकेगी। उस दिन पता नहीं आपका मूड कुछ वैसा क्यो हो गया था वरना आपको मेरे हसबन्ड बहुत पसन्द आये होते। उन्हें पढने-लिखने से बड़ा शौक है। वह किसी भी टापिक पर घंटों बातें कर सकते है। उनके फ्रेन्डस् तो उन्हें मूविंग इन्साइक्लोपीडिया कहा कहते हैं।"

बार-बार 'हसबन्ड' शब्द का उच्चारण और उसकी प्रशंसा से अमरनाथ कुछ घबरा रहा था किन्तु उसने अपने को दबाये रखा। अब सब कुछ बरदाश्त करने मे ही कुशलता थी। उसने सहज भाव से उत्तर दिया, "माफी तो मुझे लेनी है इसलिये जो भी आदेश होगा उसका पालन किया जायेगा। अगले सप्ताह मे किसी दिन आऊँगा। परसों-नरसों से दशहरे की छुट्टियाँ भी तो हो रही हैं। आप कही बाहर तो नही जायेगी ?"

"नही। क्या आप कही जाने को सोच रहे हैं ?"

"अभी कोई विचार नहीं है।"

"अगर नही गये तब तो," उसने अमरनाथ के बगले के सामने ब्रेक लगाते हुए कहा, "आपके साथ-साथ मैं सारे हिस्टारिकल प्लेसेज देख लूंगी।"

"क्या आपने अभी देखा नही है ?"

"नही।"

"क्यो ?"

"मेरे हसबन्ड की पोस्टिंग इसी मई में तो यहाँ हुई है। इसके पहले हम लोग बाम्बे में थे। मैं आगरे मे जुलाई मे आई हूँ। एक दिन 'ताज' देखने जरूर गई थी लेकिन फतहपुर सीकरी, फोर्ट, एतमादोल, सिकन्दरा अभी ये सब तो देखना ही है। आपसे अच्छा दिखाने वाला कौन मिल सकता है ?"

अमरनाथ नीचे उतरा। नीलिका ने गाड़ी स्टार्ट की और हाथ हिलाती हुई बढ़ गई।

× × ×

दशहरे की छुट्टियाँ हो गईं। कालेज बन्द हो गया। अपने कथानुसार अमरनाथ एक दिन नीलिका के यहाँ जा पहुँचा। वह उसी आवभगत से लिया गया। दरे बोला, 'आपकी बड़ी उम्र है अमरनाथ साहब। क्यों नीलिका, आज सवेरे ही तो मैंने याद किया था?" इस समय वे बरामदे में बैठे थे।

नीलिका ने सिर हिलाकर समर्थन किया और आया को आवाज़ देती हुई कॉफी लाने को कहा। वह कथई रंग का शलवार और बिना आस्तीन के काले रंग का कुरता, पहने हुए थी। कुरते की विशेष सिलाई के कारण सामने के संधि स्थल का कुछ उठा-उठा भाग, और पीछे की आधी पीठ दिखलाई पड़ रही थी। पैरों मे कामदार जूतियाँ थी। अमरनाथ देखने के लिए विवश था पर अबके देखने मे तब वाली बात नहीं थी।

कॉफी पीने के उपरान्त नीलिका के प्रस्ताव पर तीनों अन्दर उसी कमरे मे आकर बैठ गये। अमरनाथ नज्मे और गजले सुनाने लगा। दरे ने बड़ी दाद दी। अमरनाथ के बाद नीलिका की बारी आई। उसने भी एक-एक करके चार-पाँच गाने सुनाये। अमरनाथ तबले पर सगत करता रहा। संगीत के कार्यक्रम के उपरान्त भोजन हुआ तत्पश्चात बाहर बरामदे में घंटे-डेढ़ घंटे की बैठक हुई।

अमरनाथ ने चलने की आज्ञा माँगी। नीलिका ने टोका—"कल कहीं मुझे दिखाने ले चलेंगे ?'

"चलिये। कहाँ चलेंगी, फतहपुर सीकरी या सिकन्दर ?"

"नहीं, पहले फोर्ट। दूर वाले बाद मे।"

"जैसी आपकी इच्छा। आप···।"

"मैं ग्यारह-साढे ग्यारह तक आपके यहाँ आ जाऊंगी। आप तैयार मिले।"

"अच्छी बात है। लेकिन आपको खाना मेरे यहाँ खाना होगा।"

"कल नहीं और किसी दिन। जब हम दोनो साथ-साथ हों। अकेले न तो मैं कहीं खाती हूँ और न दरे साहब। क्या समझे आप?" वह मुसकराई, "इन चीजों का आपको अभी प्रैक्टिकल नालेज नहीं है।"

अमरनाथ सिर हिलाता खड़ा हो गया, "आप सही फरमाती हैं। मैं चुप हुआ जाता हूँ। क्यों दरे साहब, मैं चुप रहूँ न?"

"बिल्कुल। यह आपकी बान्ड्री के बाहर की चीज है। चुप रहना ही बहतर होगा।"

सब हंसने लगे। अमरनाथ हाथ मिलाता कार मे जाकर बैठ गया। चलते-चलते नीलिका ने टोका, 'अपनी तरह दो-चार कुरते दरे साहब को भी किसी दिन सिलवा दीजिये।"

"लेकिन दरे साहब कुरता पहनना पसन्द करेंगे?"

"मजबूरी मे," दरे ने उत्तर दिया, "पहनना ही पड़ेगा मिस्टर अमरनाथ। अगर नाही कर दूंगा तो किसी वक्त यह भी कुछ नाही कर सकती है न। समझा आपने। आल राइट. गुड नाइट।"

"गुड नाइट।"

ड्राइवर ने स्टाटर दबा दिया।

दूसरे दिन नीलिका ग्यारह बजे अमरनाथ के फाटक पर उपस्थित थी। चपरासी ने अन्दर सूचना दी। अमरनाथ भी तैयार था। वह आकर बैठ गया। मोटर उसे लेकर चल दी। आज ड्राइवर चला रहा था। 'हाथी घाट' से मुड़ती हुई कार जब किले के मुख्य द्वार के सामने से गुजरने लगी तो अमरनाथ ने बतलाया, "यह है दिल्ली दरवाजा—फोर्ट कामेन गेट। इधर का हिस्सा गवर्मेन्ट के पजेशन मे है। वैसे इस हिस्से को अकबर ने अपने लड़के सलीम के रहने के लिए बनवाया था, लेकिन अकबर के मरने के बाद सलीम ने इसे छोड़ दिया था।"

"जिस गेट से हम लोग अन्दर चलेंगे उसे 'अमरसिंह गेट' कहते हैं न?" नीलिका ने पूछा।

"ह' । इन दोनो के अलावा जमुना की तरफ दो और दरवाजे हैं, जो अब बन्द हैं। फोर्ट के अन्दर से उन्हें दिखलाऊँगा।"

कार 'अमरसिंह द्वार' पर आ पहुँची। ड्राइवर टिकट खरीदने के लिए आगे बढ़ गया। नीलिका ने पूछा, "ओरिजिनली दिस फोर्ट वाज बिल्ट बाई अकबर ऑर···।"

"इस सम्बन्ध में इतिहास मे कई बातें कही जाती हैं। 'तुजुके जहाँगीरी' मे लिखा है कि सम्राट अकबर ने एक पुराने किले को गिरवा कर, एक नये किले का निर्माण कराया था। मगर वह पुराना किला किसका था, उसका कौन बनवाने वाला था—कोई हवाला नही दिया गया है। पर जहाँ तक किंवदन्तियों की बात है, उनके अनुसार उस पुराने किले का नाम 'बदल गढ़' था जिसे बदलसिंह चौहान ने बनवाया था।"

ड्राइवर ने टिकट दिये। दोनों अन्दर को बढ़े। दरवाजे के समीप बैंचो पर बैठे गाइडों ने आवाज़ दी, "कोई गाइड चाहिए साहब ?"

अमरनाथ ने सिर हिला दिया।

और आगे दस कदम जाने पर एक दाढ़ी वाले ने अंग्रेजी मे पूछा, "वुड यू प्रीफर गाइड मैडम ?"

"नो।" नीलिका ने उत्तर दे दिया।

आगे और एक भव्य द्वार था। इससे होते हुए दोनो ऊपर समतल पर जा पहुँचे। सामने एक बड़ा द्वार था। अमरनाथ ने टोका, "उधर से नहीं।" वह दाहिनी ओर मुड़ गया।

"इधर क्या है ?"

"दीवान आम। इधर से देखते हुए तब हम लोग उधर आयेंगे।"

सामने लाल पत्थरो का सम्राट जहाँगीर द्वारा बनवाया हुआ दो-मंजिल महल था और इसीसे सटा हुआ अकबरी महल का खंडहर। केवल 'बंगाली बुर्ज' और 'अकबरी बावडी' अब इस महल के प्रमाण में अपना अस्तित्व बताये हुए हैं। बंगाली बुर्ज मे सम्राट अकबर की विदेशी रखैलें

रहा करती थीं, जहाँ अकवर बारी-बारी से निश्चिन्त दिनों पर जाया करता था। वगाली वुर्ज को दिखलाने के वाद अकवरी वावड़ी को दिखाते हुए अमरनाथ ने वतलाया, "यह कुंआ जमुना से कनेक्टेड है नीलिका जी और इसी कुंए से लगे हुए, एक के नीचे एक, कई वड़े-वड़े सुन्दर हाल है, जो गरमी के दिनों के लिए वनवाये गये थे।"

नीलिका ने विस्मय से वावडी मे झाँककर देखा, "इसके नीचे ?"

"हाँ। किसी दिन दिखलाऊँगा। इसके लिये परमीशन लेना होगी। जैसे-जैसे गरमी वढती थी, वैसे-वैसे वे लोग नीचे के कमरो में उतरते जाते थे। यह है उस ज़माने का विज्ञान।"

नीलिका आश्चर्यचकित थी।

'अकवरी महल' के वाद अमरनाथ ने 'जहाँगीरी महल' दिखाया और उसकी विशेषताओ को भी वतलाया। जहाँगीर की एक पत्नी जोधा-वाई, जो अपनी सास जोधावाई के समान ही हिन्दू रीति-नीति से रहा करती थी, उसके महल को भी अमरनाथ ने दिखलाया तथा खम्भो, मेह-रावो और कारनिसों पर शिल्प विशेष की व्याख्या भी की। 'जहाँगीरी महल' देखने के उपरान्त वे सीढियाँ चढ़ते हुए उस कमरे मे आ गये जिससे लगा हुआ यमुना की ओर 'दर्शनी दरवाजा' था। पोली दीवारो से वने हुए उस वड़े कक्ष की विशेपताओ को समझाने के उपरान्त अमरनाथ 'दर्शनी दरवाजे' मे आया।

'दर्शनी दरवाजा' बुर्जनुमा एक गोल कमरा है, जिसके चारो ओर पतले-पतले गोल खम्भो पर आधारित वरामदा है, और वरामदे के आगे छज्जा भी है। अमरनाथ ने वताया, "इस झरोखे के सम्वन्ध मे हिस्ट्री मे जो विवरण मिलता है, वह पढ़ने योग्य है नीलिका जी। इसे हीरे और जवाहारात से इस प्रकार सजाया गया था कि सूरज की रोशनी मे लोग अनुमान लगाना भूल जाते थे कि कोई दूसरा सूरज भी आकाश मे विद्यमान है। रोज सवेरे, सामने के नीचे मैदान में एकत्र प्रजा को सम्राट यही से दर्शन दिया करता था, और इतवार को छोड़कर शेष

दिनो मे दोपहर के बाद, किसी दिन हाथियो की लड़ाई, तो किसी दिन शेर और हाथी की लड़ाई या अन्य मनोरम के खेल देखा करता था।"

विस्मय व्यक्त करती हुई नीलिका मुड़ पड़ी।

"यह है," अमरनाथ ने उँगली से सकेत किया, "खास महल—सम्राट शाहजहाँ का हरम। 'शाहजहाँनी महल' यही से आरम्भ होता है। अब सब कुछ आपको संगमरमर का ही मिलेगा।"

"और यह कमरा ?" नीलिका उसके अन्दर जाकर देखने लगी।

"इसके सम्बन्ध मे भी कई प्रकार की बाते कही जाती है, लेकिन विश्वास यही किया जाता है कि शाहजहाँ ने इसे अपनी छोटी लड़की रोशनआरा के लिये बनवाया था। ठीक इसी तरह का एक दूसरा कमरा 'खास महल' के उस तरफ भी है जिसमे शाहजहाँ की बड़ी और लाड़ली पुत्री जहाँनारा रहा करती थी। शाहजहाँ के शासन-काल का इतिहास 'पाद शाहनामा' मे इसका उल्लेख मिलता है।"

"आई सी।" नीलिका बगल के दरवाजे से होती हुई 'खास महल मे आ गई।

"खास महल' जिसे 'आरामगाह मुकद्दस' भी कहा जाता था, पूर्णतः संगमरमर का बना हुआ है। इसके आगे का सहन भी सगमरमर का है, जिसके बीचोबीच एक छोटे जलाशय मे तमाम फव्वारे लगे हुए हैं। सहन के सामने 'अँगूरी बाग' है। इस बाग मे काश्मीर से मिट्टी मँगवाकर डाली गई थी। सबका विस्तृत और विविध विवरण प्रस्तुत करते हुए अमरनाथ ने एक खास चीज यह भी बताई कि महल के अन्दर दीवारो पर, तैमूर से लेकर सारे मुगल सम्राटो के, बड़े-बड़े बहुमूल्य चित्र लगे हुए थे, जो जाटो द्वारा बाद मे लूट लिये गये थे। 'खास महल' के उपरान्त उसने जहाँनारा वाला कमरा दिखलाया और फिर चार-छः सीढ़ियाँ उतर कर 'शीश महल' मे घुस गया। यह बेगमो का स्नान-गृह था। इसकी भित्तियो और छतो पर दर्पण के टुकड़े प्लास्टर के साथ चिपकाये गये है इसी कारण इसे 'शीश महल' पुकारा जाता है। इनमें दो बड़े-बड़े

कमरे हैं, जिनमें ठंडे और गरम पानी के जलाशय, फव्वारो के साथ बने हुए हैं। अमरनाथ ने दरवाजे पर बैठे एक व्यक्ति को बुलाकर रोशनी जलाने के लिये कहा। प्रकाश होते ही कमरों में असख्य तारों का समूह झिलमिला उठा।

"ब्यूटीफुल।" नीलिका के मुंह से निकला। वह आंखे फाड़े चारो ओर देखने लगी थी।

'शीश महल' से निकल कर पुनः ऊपर चढ़ता हुआ अमरनाथ नीलिका-सहित 'मुथमनबुर्ज' मे आ खडा हुआ। जो जहांनारा के कमरे के पार्श्व में है। सामने मीलों कल-कल बहती यमुना की छटा, और विश्व का अद्वितीय 'ताज बीबी' का रोजा दिखलाई पड़ रहा था। "इसे मुथमन-बुर्ज," कहते हैं अमरनाथ बोला, "कहते हैं नीलिका जी। कभी शाहजहां इसी बुर्ज में बैठकर, अपनी बीबी मुमताज महल के साथ प्रेम के आदर्शो को समझा और समझाया करता था। फिर एक ऐसा भी वक्त आया जब वह घटों अकेला बैठा ताज को निहारता हुआ पत्नी के वियोग में आंसू बहाया करता था। उसके दिन और बुरे आये। वह अपने पुत्र औरंगजेब द्वारा बन्दी बनाया गया और इसी बुर्ज मे पुन. बन्दी के रूप मे डाल दिया गया। केवल उसकी लडकी जहांनारा ही, उसकी व्यथाओं और पीडाओं में हाथ बंटाने के लिये रह गई थी। आपको सुनकर ताज्जुब होगा कि जब बन्दी सम्राट जीवन की अन्तिम सांसें गिन रहा था, तो उसने लडकी से साकेतिक भाषा मे कुछ कहा। जहांनारा ने तकिये के सहारे वृद्ध पिता को थोडा उठा दिया। शाहजहां की मुदती आंखो ने ताज को देखने का प्रयत्न किया। क्षण-दो-क्षण देखते रहने के उपरान्त पलको ने उनपर परदा डाल दिया। उसकी डेथ हो गई।" अमरनाथ सामने की सीढ़ियों पर चढ़ता 'मुथमन बुर्ज' के ऊपर जा पहुंचा।

यहां हवा अधिक प्रिय लग रही थी और दृश्यों की छवियो का तो कहना ही क्या? नीलिका गुम्बद के अन्दर चढकर बैठ गई। घड़ी में समय देखा, "माई गॉड, हाफ-पास्ट थ्री।"

"और अभी आपने सिर्फ आधा देखा है।"

"हाफ।"

"बल्कि इससे भी कुछ कम समझिये। पूरे किले को मैंने तो पाँच दिनों मे देखा था।"

"आप भी बैठ जाइये। थोड़ी देर रेस्ट करके चलेंगे।"

अमरनाथ बैठ गया। नीलिका सामने देखती हुई कुछ सोचने लग गई। वातावरण निस्तब्धता मे परिवर्तित हो गया। दर्शक आते थे और देखते हुए चले जाते थे। "क्यो अमरनाथ जी," नीलिका सोचती-सोचती पूछ बैठी, "शाहजहाँ की और भी तो बीवियाँ थी ?"

"बहुत।"

"तब क्या यह मुमकिन है कि वह अपनी एक वाइफ को इस हद तक अपना लव और एफेक्शन दे सके ?"

"यह तो इतिहास प्रमाणित है। मुमताज बेगम के मरने का शोक शाहजहाँ को ऐसा हुआ था कि एकबारगी उसके सारे काले बाल सफेद हो गये थे। असल बात यह है नीलिका जी कि आप लव और लाइकिंग दोनों को एक समझती हैं। लाइकिंग तो किसी के लिए हो सकती है लेकिन सबसे लव नही हो सकता। ऐसा मेरा व्यक्तिगत विचार है।"

नीलिका के चेहरे पर प्रसन्नता बिखरी, "मुझे यही जानना था। आपके और मेरे एक जैसे खयालात हैं। अब किसी दिन मेरे यहाँ आइयेगा तो दरे साहब से बहस करूँगी। इस टॉपिक पर मेरी उनसे अक्सर बातें हुआ करती हैं। उनका कहना है कि लाइकिंग जब अपनी एक्सट्रीम पर पहुँच जाती है, तो लव मे टर्न हो जाती है। लाइकिंग की ही दूसरी स्टेज लव है।"

"लाइकिंग की दूसरी स्टेज लव के सिद्धान्त के मानने का ही तो परिणाम है कि आज भी इस देश की स्त्रियाँ यूरोप की स्त्रियो से सैकड़ो साल पीछे है। पति को परमेश्वर मानने का भुलावा देकर मनुष्यो ने अपने भोगने की वस्तुओ मे, एक वस्तु का रूप उन स्त्रियो को भी दे रखा

है। वैसे दरे साहव इस मनोवृत्ति में नही होंगे। उनके कहने का सेन्स कुछ दूसरा होगा।"

"विल्कुल डिफरेन्ट। वह वहुत खुले विचारों के इन्सान है। ही इज ए मॉडल हसवन्ड एन्ड लव्ज मी लाइक एनीथिंग।"

अमरनाथ क्या कहता। वह चुप रहा।

नीलिका ने पुनः घड़ी मे समय देखा, "अव चलना चाहिये।"

"चलिये।" अमरनाथ खड़ा हो गया।

नीलिका भी खड़ी हुई, "अव आगे न चलियेगा। कल देखेंगे। पहुँचते-पहुँचते दरे साहव के आने का टाइम हो जायेगा। शाम की चाय पर मेरा होना जरूरी होता है वरना वह चाय पीते ही नही।"

अमरनाथ सिर झुकाये मौन उतरने लगा।

२३

राजेश के मामा को दशहरे पर छुट्टी नही मिल सकी थी, इस कारण उसने राजेश को मा-सहित वही आने को लिख भेजा था। राजेश को मनचाहा वरदान मिल गया। उसने पढाई का वहाना वताकर केवल नानी के जाने की तिथि लिख दी। कालेज मे छुट्टी होने के दूसरे दिन उसने नानी को गाड़ी मे विठला दिया। नानी ने सजल नेत्रों सहित उसे ठीक से रहते और खाने-पीने मे लापरवाही न वरतने की ताकीद की। गार्ड की सीटी हुई। गाड़ी रेंगती हुई प्लेटफार्म से चल दी।

पूर्व निश्चित कार्यक्रम के अनुसार, नानी के जाने के तीसरे दिन, दस वजे के लगभग चारू राजेश के घर आ पहुँची। वाहरी दरवाजे के किवाड़ भेड़े गए थे जिसे शीघ्रता से धक्का देती हुई, वह अन्दर चली

आई। बरामदे में राजेश बैठा प्रतीक्षा कर रहा था। चारू को देखते ही खिल उठा। उसे कमरे के अन्दर चलने का संकेत किया और बाहर का दरवाजा बन्द करने चला गया। चारू पसीने-पसीने हो उठी थी। उसे ऐसा अनुभव हो रहा था जैसे आज राजेश के घर आकर उसने कोई बहुत बड़ा पाप किया हो। वह हौल-दिल हो उठी थी। राजेश के आने पर वह बोली, "आज तुम्हारे यहाँ आकर मैंने ग़लत किया है।"

"क्यों ?"

"अगर कोई आ गया तो ?"

"आएगा कौन ? और अगर कोई आ भी जाए तो वह मेरे घर की तलाशी लेगा। तुम भी कभी-कभी बड़ी बेतुकी बातें सोचने लगती हो। ऐसा कभी सम्भव है ? आराम से बैठ जाओ। पानी पीओगी ?"

चारू ने सिर हिला दिया।

पानी के साथ-साथ राजेश कुछ नमकीन और मिठाइयाँ भी ले आया। चारू ने आपत्ति की, "मैं यह सब कुछ नहीं खाऊँगी। बस पानी।" उसने गिलास की तरफ हाथ बढाया।

राजेश ने गिलास हटा लिया, "क्यों ?"

"तबीयत नहीं है।"

"लेकिन मेरी तो है।"

"तुम्हारी होने से क्या हुई। लाओ गिलास दो।"

"तो मैं भी गिलास नहीं दूँगा।"

"न दो।" वह दूसरी तरफ देखने लगी।

राजेश ने पुनः आग्रह किया, "लो, कुछ तो लो।"

"तुम लड़कियों की तरह हर बात की ज़िद क्यों करने लगते हो ?"

"इसलिये कि लड़कियाँ मुझसे ज़िद नहीं करती हैं। भाग्य-भाग्य की बात है।" वह मुसकराया और मिठाई का एक टुकड़ा उसके मुँह की तरफ बढ़ाया, "लो।"

"तो कोई जिद करने वाली लड़की ढूँढना चाहिये थी।"

"कोशिश ऐसी ही की थी लेकिन यह भी भाग्य की बात है। उलटी मिल गई।"

"फिर अब ?"

"अब क्या ? उसी को सीधा बनाऊँगा। जब लोहा सीधा हो सकता है तो मनुष्य मे क्या रखा है ?" वह पुनः हसने लगा, "लो मुंह खोलो।"

"मैं ने कह दिया कि मेरी तबीयत खाने की नही है। जिद करने से कोई फायदा नही होगा।"

राजेश ने उसके मुंह तक हाथ सटा दिया, "तुम्हे मेरी कसम है।"

चारु को विवश हो जाना पड़ा। उसने धीरे से मुंह खोल दिया। राजेश ने मिठाई खिला दी। दोस्ती हो गयी। चारु के कहने पर राजेश भी खाने लगा। दोनो खाते रहे और एक-दूसरे को निहारते रहे। राजेश बोला, "मैं एक बात तुमसे बताना भूल गया था। एक दिन मैंने नानी से पूछा था कि अगर मैं किसी दूसरी जाति की लड़की से मैरिज कर लूं तो क्या वह मुझे अपने घर से निकाल देगी।"

"लेकिन दूसरी जाति की लड़की से विवाह करोगे क्यो ?" उन्होने पूछा था, "क्या तुम्हारी जाति मे लड़कियाँ नही है ?"

"है क्यो नही, लेकिन मान लो किसी वजह से मुझे कोई दूसरी लड़की पसन्द आ गई तो ?" मैंने कहा था। "तब तुम क्या करोगी ?"

"करूँगी क्या ? तुम तो छुटने से रहे। तुम्हारे मामा जरूर छुट जायेंगे। मुनियाँ की तुम धरोहर हो न। उसकी आत्मा को मैं दुखी नही देख सकती।"

"मुनियाँ से मतलब," चारु ने जानना चाहा, "तुम्हारी मदर से है।"

"हाँ। अब सोचता हूँ कि जब नानी आ जायें तो किसी दिन तुम्हारे बारे मे चर्चा चलाऊँ।"

"और अगर मैं उन्हें पसन्द न आई ?"

"इम्पासिबिल। न पसन्द आने वाली बात क्या हो सकती है।" राजेश अपने पैरों से उसके पैरों को हिलाने लगा था।

"यह क्या हो रहा है ? पैर हटाओ।"

"तुम्हे कोई तकलीफ है ?"

चारू ने अपनी कुर्सी पीछे खिसका ली, "तुमसे झक कौन लड़ाये ?"

राजेश भी अपनी कुर्सी खीचकर पुनः उससे सट गया और वही शरारत करने लगा, "कोई झक लड़ाये या न लडाये अपने राम तो सीधी लीक चलने वालो मे है। अवसर मिला नही कि फौरन लाभ उठाया।"

"और अगर मैं यहाँ से चल दूँ तो फिर क्या कुर्सियो से लाभ उठाओगे ?"

"चली कैसे जाओगी ?"

चारु झटके से कुर्सी खिसकाती हुई खडी हो गई, मुंह विराया और दरवाजे पर पहुँचकर बोली, "अब जा रही हूँ। रोक लो तो जानूँ।"

राजेश लपका। चारु भागकर आँगन मे पहुँच गई। राजेश ने ऊपर छतो की ओर उंगुली दिखाकर झुटकाया। चारु का ध्यान वटा। उसने उधर देखा। राजेश के लिए अवसर पर्याप्त था। उसने छलांग मारी और चारु को भुजाओ में कसना ही चाहता था कि वह मछली की भाति फिसलती हुई सट से निकलकर बरामदे में पहुँची, "कैसा रहा बाबू जी ?" वह खिलखिला उठी, "दूसरे भी चकमा देना जानते हैं जनाव।"

"अभी बतला दूं।" राजेश बढ़ा। चारु इस कमरे से उस कमरे में भागती हुई मुहव्वत की दुनिया का मजा लेने लगी। राजेश भी पीछे-पीछे पकड़ने को झूठा प्रयास दिखलाता रहा—जवानी की उमंगो का आनन्द लेता रहा। चारु को एक नई तरकीब सूझी। उसने राजेश के कमरे मे पहुँचकर झट से दरवाजे को वन्द कर लिया, "कहिये मिस्टर," वह अन्दर से बोली, "अब क्या होगा ?"

राजेश ने कोई उत्तर नही दिया और तेज़ी से ज़ीना चढ़ता हुआ छत पर जा पहुंचा। फिर दबे-पाँव एक-दूसरे जीनें से धीरे-धीरे उतरने

लगा। यह जीना उसके कमरे में निकलता था जिसका चारू को बिल्कुल अन्दाज नही था। राजेश ने नीचे आकर परदे से झाँका। चारू का मुँह उस तरफ था। वह चीटी के समान पैर रखता चारू के समीप पहुँचकर उसकी आँखों को मूँद लिया। चारू चिल्ला उठी वह डर गई थी। राजेश ने हथेलियाँ हटा ली और उसे अपनी भुजाओ में बाँध लिया। चारू ने अपने मुलायम बाहो को उसके गले मे डाल दिया। वह शिथिल पड़ गई।

उसी प्रकार भुजाओ में लिपटी हुई चारू कुछ समय बाद बोली, "तुम आये किधर से थे ? मैं तो डर गई थी।"

"अब तुम मानोगी न कि आदमियों के पास दिमाग ज्यादा है ?"

"दिमाग नही ताकत ज्यादा है। अब मैं चाहे जितनी कोशिश करूँ लेकिन क्या तुम्हारे हाथो से निकल सकूँगी ?"

राजेश ने हाथ ढीले कर दिये। चारू कुरसी पर बैठ गई। राजेश ने परदा हटाकर सीढ़ियाँ दिखला दी और वही बगल मे बिछी चारपाई पर बैठ गया, "बड़े दौड़ाये तुमने। तबीयत पस्त पड़ गयी।" वह अंगड़ाई लेता तकियो के सहारे उढग गया, "तुम भी आओ न।"

"नही।"

"ऊहूँ। हर बात के लिये तुम्हारा 'न' निश्चित है। आओ, आओ।" कामान्ध होने पर पुरुष विवेक खो देता है।

"मैंने कह दिया न कि मुझे थकान नही है।"

"अच्छा लो, मैं उठा जाता हूँ। अब तो लेटोगी।" वह उठकर चारू के बगल वाली कुरसी पर आ बैठा।

"तुम सिड़ी हो।" वह बिगड़ने जैसा भाव का प्रदर्शन करती हुई उठकर खाट पर लेट गई।

राजेश हँसने लगा और अपनी कुरसी चारपाई के समीप खीचकर बैठ गया।

"क्यो, अब यह क्या हो रहा है ?" चारू ने आँखे तरेरी।

"पास बैठने की भी परमिशन नही है ?"

चारु ने दूसरी बात चलाई, "अब कालेज में हम लोगो को कायदे से मिलना-जुलना चाहिये । तुम्हें अन्दाज़ नही है, मेरी तरफ के दो-एक लड़के, जो कालेज मे पढ़ने भी आते हैं, हम लोगो पर खास निगाह रखते हैं । उन लोगों को तुम्हारा नाम भी मालूम है । और जब मुझे अकेले में देख लेते हैं तो बोलियाँ भी बोलते हैं ।"

"लेकिन अभी तक तुमने बतलाया क्यो नही था ?" कालेज खुलने दो । दो दिन में हिसाब-किताब फिट कर दूँगा । हाथ-पैर अगर न...।"

"लगे आपे से बाहर होने ? ऐसा करने से नुकसान किसका होगा ? बात फैलेगी और मेरा कालेज आना बन्द हो जायेगा । दूर तक सोचो ।"

दोनो की बातें बड़ी देर तक इसी प्रकार चलती रही ।

२२

उस दिन किले से लौटने पर अमरनाथ सूर्यनगर न जाकर बीमा नगर पर ही उतर पड़ा था । नीलिका के कारण पूछने पर उसने वकील साहब का नाम बता दिया था । ड्राइवर ने गाड़ी बैक की । नीलिका ने पुनः याद दिलाकर दूसरे दिन ठीक समय पर तैयार रहने को कहा । अमरनाथ ने हाथ जोड़ लिए । कार बढ़ गई । अमरनाथ मुड़ा और चौक पर देखता रह गया । प्रतिभा अपनी हथेलियाँ जोड़े मुसकराती आ रही थी, "बस अन्तर, वह समीप आकर बोली, "इतना है कि वहाँ आप हाथ जोड़ते हैं और यहाँ मैं । कहाँ से सवारी आ रही है ? अब तो बीमानगर का रास्ता ही भूल गये । भूलना भी चाहिये । मोटर-वालियो के आगे अपनी क्या बिसात । भगवान करे जोड़ी सदा इसी तरह फलती-फूलती रहें ।"

"सब कह चुकी या अभी कुछ कहना शेष है ?"

"फिलहाल इतना ही कहना था। याद आने पर और कह लूंगी। शायद आप कुछ कहना चाहते है ? कहिये।"

"इस समय जा कहाँ रही हो ?"

"राजा मडी। चाहे तो आप भी चल सकते है, लेकिन पैर दर्द न करने लगे इसे सोच लीजिएगा।" वह चल पड़ी।

"अब बहुत बोलने लगी हो ?"

"और आप भी तो अब मोटर पर बहुत चढने लगे हैं।" वह हंस दी। "मालूम पड़ता है नीलिका जी के साथ आज कही पिकनिक का प्रोग्राम था ?"

"पिकनिक ही समझो। आगरा फोर्ट दिखलाने गया था। कल फिर जाना है।"

"क्यो ?"

"अभी आधा देखा है।"

प्रतिभा ने खखारा, "उहूँ हूँ। भगवान रक्षा करे। इतने थोड़े समय में यह प्रोग्रेस। खूब है भई। लगी हो तो ऐसी। कल पूरा हो जायेगा या एक दिन और लगेगा ?"

"एक दिन लगे या दो दिन, अब तुम्हे घबड़ाने की आवश्यकता नही है। नीलिका एक विवाहिता नारी है और एक बच्चे की माँ भी।"

"क्या ?" प्रतिभा के नेत्र फैल गये।

"ऐसा ही है देवीजी। तुमसे क्या बताऊँ, मैं इन दिनो इतना आगे बढ़ गया था कि उससे उलटे-सीधे मजाक भी करने लगा था। लेकिन तारीफ है कि न तो उसने उसका कभी बुरा माना और न अपनी वास्तविकता को ही प्रगट होने दिया।" अमरनाथ ने नीलिका के पति से परिचय आदि का पूरा वृतान्त सविस्तार कह सुनाया।

प्रतिभा अवाक सुनती रही। उसे अपने कानों पर विश्वास नही हो

रहा था, "आश्चर्य है, "उसके मुँह से निकला, "हेल्थ भी उसे ऐसी मिली है कि कही से सन्देह हो ही नहीं सकता।"

"तुमसे सच बताता हूँ, कई दिनो तक तो मेरा कालेज जाना मुश्किल हो गया था और इसीलिये तुम्हारे यहाँ भी नही आ सका था।"

"फिर दोबारा आपकी बातचीत कैसे शुरू हुई?"

अमरनाथ ने पूरी कहानी कह सुनाई।

"अजीब कैरेक्टर है। पहले आपको बढ़ावा दिया गया फिर घर पर बुलाकर अपनी वास्तविकता की जानकारी कराई गई और लज्जित किया गया, इसके बाद पुनः आप पर डोरे डाले गये और भिन्नता स्थापित की गई। अब यह भिन्नता किस शक्ल मे बदलेगी, मैं अन्दाज नही लगा पा रही हूँ। आप स्वयं सोचिये कि इस तरह कभी उलझा कर तो कभी सुलझा कर कोई स्त्री, किसी पुरुष के सामने अपने को क्यो रखती है?"

प्रतिमा का सन्देह विचारणीय था।

अमरनाथ गडे मुरदे उखाड कर समय का दुरुपयोग नही करना चाहता था, "छोड़ो इन बेतुकी बातों को। और कोई बात करो। जिस चीज मे दिलचस्पी न हो उसके सम्बन्ध मे सोचने से लाभ? कब होइहै गवनवा हमार—अब कुछ इस पर सोचो। अक्तूबर खतम होने वाला है। चार-पाँच महीने मे इम्तहान भी हो जायेगा फिर?"

प्रतिमा ने मजाक किया, "मैं आपको खूब समझती हूँ। अभी तक तो नीलिका के लिये आहें भर-भरकर सारी रातें गुजारी जाती थीं और अब···।"

"दिलचस्पी नही है," अमरनाथ बीच मे बोल उठा, "यही न? लेकिन तुम जो मेरे लिये आहे भर-भरकर रातें गुजार रही हो, उसका क्या होगा?"

"ऐसे तो आप हसीन है ही। बड़े आये आहे भराने वाले।" उसने अपनी हंसी छिपाने के लिए मुंह दूसरी ओर घुमा लिया।

विषय बदल गया।

राजमंडी में सामान खरीदने के उपरान्त दोनों एक रेस्ट्रां मे जा बैठे। चाय पीने के उपरान्त बाहर आये। प्रतिभा ने रिक्शा किया और अमरनाथ बस में जा बैठा।

× × ×

इतनी देर से आने मे बहन ने घबराहट का भाव व्यक्त किया और बहनोई ने चुटकियाँ ली। अमरनाथ मुसकराता हुआ कपड़े बदलने चला गया। अमरनाथ की जिन्दगी पहेली बनती जा रही थी।

रात मे सोते समय आकाश में फटे दूध की भाँति बदली हो जाने के कारण, उमस बढ़ गई थी, इस कारण अमरनाथ ने अपनी चारपाई लान में डलवा ली और वहीं टेबिल लेम्प लगा कर पढ़ने लगा। लगभग बारह-साढ़े बारह के करीब हवा झुरझुाई और थोड़ी ही देर बाद तेज हो गई। अमरनाथ ने सिर उठा कर ऊपर देखा। फटी बदली का रूप बदल गया था। उसमे घन्तव आ गया था। उसने बत्ती बन्द कर दी, बिस्तर लपेट और चारपाई लाकर बरामदे में डाल ली। अभी उसकी आँखों ने झपकी लेना आरम्भ ही किया था कि बादलो से गड़गड़ाहट की आवाज आई और साथ ही टिपटिपाहट का भी आभास मिला। अमरनाथ सो गया। कुछ समय उपरान्त पानी जोर से गिरने लग गया और कब तक गिरता रहे उसे अनुभव नही। सवेरे छे बजे, जब नींद खुली तो उसने अपने को कम्बल में लिपटा पाया। सर्दी बढ़ जाने के कारण बहन ने उठा दिया था।

यद्यपि पानी निकल चुका था और बदली भी हलकी पड़ गई थी पर सरसराती हुई हवा मे बर्फ जैसी गलन आ गई थी। मौसम एकदम बदल गया था। जनवरी वाली सर्दी आ गई थी। अमरनाथ जैसे-तैसे दैनिक क्रियाओं से निवृत हुआ और कम्बल ओढकर पढ़ने वाले कमरे मे जा बैठा। वहीं चाय और नाश्ता किया, तत्पश्चात् थोड़ी देर तक बच्चों के साथ बच्चा बना रहा। खेल-कूद समाप्त होने पर कितावें खोली और अध्ययन में तल्लीन हो गया। नीलिका के आने की उम्मीद तो थी ही

नहीं। जज साहब के कचहरी जाने के बाद करीब ग्यारह बजे नौकर ने पानी गरम होने की सूचना दी और स्नान करने को कहा। अमरनाथ ने कम्बल हटाया और बदन तोड़ता खड़ा हो गया। स्नान-भोजन के उपरान्त पुनः पढाई आरम्भ हो गई। इस वर्ष अधिक मेहनत की आवश्यकता थी। कुछ लिखने के लिये उसने कलम खोला ही था कि बाहर मोटर का हार्न सुनाई पड़ा। उसे नीलिका का सन्देह हुआ परन्तु वह लिखने मे लग गया।

नौकर ने आकर बतलाया, "मोटर वाली मेम साहब आई है ?"

अमरनाथ ने गर्दन ऊपर की, "मोटर वाली ?"

"वही, जो कल आई थी।"

अमरनाथ का सन्देह सत्य निकला। वह शीघ्रता से बाहर आया। उसे देखते ही नीलिका कह उठी, "अरे वाह, अभी आप तैयार भी नहीं हैं। कमाल कर दिया। यह मौसम कही घर में बैठने का है और खास कर एक राइटर के लिये।" वह बाहर निकल कर मोटर के सहारे खड़ी हो गई थी। चुस्त कपडो पर बिल्कुल नये डिजाइन का बहुत ढीला-सा स्वेटर सुन्दरता की वृद्धि मे सहायक तो था ही, विशेष सहायक था कुचों के आकर्षण मे। वे दूसरो की आँखों को बरबस अपनी ओर खीच रहे थे।

अमरनाथ ने उत्तर दिया, "बात तो वाजिब है लेकिन यह मौसम अकेले निकलने का नही है। दो होने चाहिये। तभी इसका आनन्द है।

"अब तो दो हो गये। जाइये, जल्दी से चेंज कर आइये। बहुत देर न लगे।

"और आप...।"

"मैं यही खडी हूँ।"

अमरनाथ मुड़ते-मुड्ते रुक गया, "आइये आपको बहन से मिलवा दूँ। परिचय भी हो जायेगा और मैं इसी बीच कपड़े भी बदल लूंगा। आपको उससे मिलकर खुशी होगी।"

वहन से नीलिका का परिचय कराकर अमरनाथ अन्दर कपडे बदलने चला गया। हलके सलेटी रंग का थ्री पीस वाला सूट वह पहन कर निकला तो एक बार नीलिका की आँखें भी उस पर अटक गई। वह अमरनाथ की वहन से आज्ञा लेती हुई उठ पड़ी।

आज ड्राइवर नही था। नीलिका स्वयं चला रही थी। "टूडे," वह बोली "यू आर लूकिंग वैरी प्रेटी। सूट मे आज मैने आपको पहली बार देखा है। इसमे आपकी परसोनालिटी कई गुनी बढ़ जाती है। मुझे आदमियो मे स्लिम बाडी···।"

"इधर कहाँ," अमरनाथ ने टोका, "आपको बाँये मुड़ना था।"

"सिकन्दरा चल रही हूँ। उधर आज नेचुरल ब्यूटी भी तो देखने को मिलेगी। आज मैं उसी खयाल से आई थी। फोर्ट कल देख लेंगे।"

अमरनाथ कहने लगा, "मेरा अनुभव है कि दुनिया मे इतने बड़े दायरे के अन्दर, ऐसा विशाल मकबरा शायद ही कही बना हो। चौदह वर्ष की लम्बी अवधि मे, १५ लाख से भी अधिक व्यय करके इसे सम्राट जहाँगीर ने तैयार कराया था।"

लेकिन इसे सिकन्दरा क्यो कहा जाने लगा ?"

"सिकन्दरा गाँव का नाम है, जो मकबरा के सामने, सडक के उस तरफ है। बहुत बडा गाँव है। आपने ध्यान से नही देखा है बिल्कुल सडक से लगा हुआ है। सुलतान सिकन्दर लोधी ने सर्वप्रथम अपनी राजधानी का यही निर्माण कराया था और उसी सिकन्दर से यह स्थान सिकन्दरा हो गया। बाद मे मुगलो के हाथ मे सत्ता आने पर, यह गौरव आगरा नगर को प्राप्त हुआ।"

मकबरे के मुख्य द्वार की श्वेत मीनारें सामने आकाश मे चमकने लगी थी और पाँच-सात सेकेन्ड के भीतर ही नीलिका की कार वहाँ आ पहुँची। सिकन्दरा और आगरे के बीच का फासला कोई पाँच-साढे पाँच मील का है। दोनो उतरे। अचानक नीलिका ने अपना हाथ अमरनाथ के हाथ मे डाल दिया और एक विशेष अन्दाज के साथ इधर-उधर गर्दन

घुमाती, उससे सटकर चलने लगी। अमरनाथ के काटो तो खून नही। न पकड़ते बन रहा था और न छोडते। सारे बदन मे सिहरन फैल गई थी। उसकी अजीब हालत हो गई थी किन्तु उसने अपनी मन.स्थिति को संभालने का प्रयत्न किया और मुख्य द्वार पर की गई पच्चीकारी को बिना नीलिका की ओर देखे, समझाने मे जुट पडा।

आशा से अधिक बता चुकने पर भी जब अमरनाथ की बात समाप्त होने पर नही आई तो नीलिका ने टोका, "अभी आपको अन्दर भी बहुत-सी बाते बतानी हैं।"

अमरनाथ के पैर उठ गये। वह अपने मे था कहाँ जो सोच पाता कि अभी बहुत कुछ अन्दर भी देखना है।

नीलिका उसी प्रकार सटी हुई चारों ओर गर्दन घुमाती तथा मक़बरे की भव्यता पर अचम्भा व्यक्त करती, चल रही थी। अमरनाथ कुछ सकुचाता-सा हाँ-ना का स्वर उच्चारण कर रहा था। उसमे अब भी नीलिका से आँखें मिलाने का साहस नही आ पाया था। वह सामने देख रहा था। मकबरे की इमारत मे प्रवेश करने पर अमरनाथ ने पूछा, "पहले आप नीचे वाली कब्र देखेगी या ऊपर चलने का इरादा है?"

"ऊपर। बाद मे इसे देखते हुये निकल चलेगे।" दोनों बायी ओर की सीढियो से ऊपर चढ़ने लगे। नीलिका का हाथ उसी प्रकार फँसा हुआ था। जिसमे अब पहले की अपेक्षा अधिक कसाव आ गया था। हाँ, अमरनाथ की उलझन अवश्य बढ़ गई थी। उसकी कोहनी जब-तब नीलिका के उरोजो का स्पर्श करने लगी थी।

तीसरी मंजिल पर पहुँचकर नीलिका ने बैठने का प्रस्ताव रखा और अमरनाथ का हाथ छोडती हुई, कोने वाली बुर्ज पर जाकर बैठी। अमरनाथ भी बगल में बैठ गया। कोसों दूर तक मैदानो और जंगलो की शोभा साकार हो उठी थी। नीलिका ने उन मनोहारी दृश्यो की, लच्छेदार शब्दों मे, बार-बार प्रशसा की। अमरनाथ ने हाँ मे हाँ मिलाकर उसका समर्थन किया। दस पन्द्रह मिनट तक सुस्ता लेने के बाद, दोनो

उठे और अन्तिम मंजिल पर जा पहुँचे।

यह मजिल पूर्णतः संगमरमर की बनी हुई है। चारों तरफ की दीवारो मे विभिन्न प्रकार की जालियाँ कटी है जो शिल्पकार की सराहना करने मे आज दिन भी गर्व का अनुभव करती है। मध्य मे कब्र है जिसके चारों ओर कुरान की आयते और ईश्वर के विभिन्न नामो को विशेषताओं के साथ लिखा गया है। कब्र से लगा हुआ एक चार फुट ऊँचा संगमरमर का स्तम्भ है। अमरनाथ ने उसकी ओर सकेत किया, "किसी जमाने मे इस स्तम्भ के ऊपर सोने की एक छतरी थी और उस छतरी की छाया मे, कोहनूर हीरा रखा रहता था।"

विस्फारित नेत्रो से नीलिका देखती हुई सीढियो की ओर लौट पड़ी।

नीचे आकर भू-गर्भ स्थित, वास्तविक कब्र को देखने के उपरान्त अमरनाथ ने नीलिका को इमारत की परिक्रमा कराई और उससे सम्बधित अन्य विशेपताओ की मोटी बाते बतलाईं।

बाहर आकर दोनो ने एक-एक गिलास पानी पिया और मोटर में बैठ गये। नीलिका रास्ते-भर अमरनाथ के इतिहास सम्बन्धी अध्ययन और इन स्थानो के इतने सूक्ष्म निरीक्षण की प्रशसा करती रही। अमरनाथ सुनता रहा। गाडी सूर्यनगर मे आकर खडी हुई। अमरनाथ उतर पडा। नीलिका चली गई। अमरनाथ बंगले मे घुसकर बीमानगर की सड़क पर बढ़ चला। खाली दिमाग मे प्रश्नो के समूह उमड़ पड़े थे और नीलिका के व्यक्ति को, उसके विचारों और भावनाओं को तथा उसके वास्तविक एव अवास्तविक रूप को लेकर, सवाल-जवाब होने लगे थे। आज पुन: एक नई समस्या का अंकुर फूट गया था।

× × ×

दूसरे दिन नीलिका नही आई। तीसरे दिन और चौथे दिन भी नही आई। अमरनाथ उसके न आने के कारणो पर चिन्तित हो उठा। और परिणामस्वरूप पाँचवे दिन, वह संध्या समय अकबर रोड जा पहुँचा।

नौकर ने बतलाया, "साहब और मेम साहब, दोनो दिल्ली गये हुये है। छुट्टियो बाद आयेगे।"

२५

छुट्टियों-भर चारू दूसरे-तीसरे दिन राजेश के घर आती-जाती रही। नित्य मिलन पर नई-नई कल्पनाये बनाती-बिगाडती रही। दोनों एक दूसरे पर न्योछावर होकर जवानी का रस लेते रहे और कभी अलग न होने की भी कस्मे खाते रहे। बडी-बडी तमन्नायें थी और बड़े-बड़े मन्सूबे थे। कभी उछल-कूद के और कभी छीना-झपटी मे चारू नाराज़ हो जाती तो राजेश निहोरा करता, बार-बार कान पकड़ कर उठता-बैठता, तो कभी राजेश मुँह फुलाकर चारपाई पर लेट जाता, और चारू उसके गले मे बाहे डालकर मनाती हुई आलिंगन मे बध जाती। किस्सा-कोताह, प्यार के वे सारे अभिनय जहाँ तक सम्भव हो सकते थे, अभिनीत हो रहे थे। जीवन अत्यधिक आकर्षक और मनहरन बन गया था। जगत बिसर गया था और बुद्धि से काम लेने मे शिथिलता आ गई थी। नेत्रों की सतर्कता समाप्त हो गई थी। फूंक-फूंककर पैर रखने वाली बात विस्मरण हो गई थी।

चारू ने जिन लड़कों की कभी चर्चा की थी उनमे एक लड़का जो अधिक उच्छृंखल और चारू पर दिल रखता था, एक दिन उसका पीछा करता हुआ राजेश के घर तक आकर लौट गया था। उसने दोबारा पीछा किया और घटो चारू के निकलते ही प्रतीक्षा मे वहाँ खड़ा रहा। सन्देह की पुष्टि हो जाने पर उसने अपने मित्रों को बतलाया। मित्रों ने भी अपने-अपने सन्देह की पुष्टि की। उनकी ईर्ष्या भड़क उठी। सब

राय से चारू के घर एक गुमनाम-पत्र डाल दिया गया, लेकिन गलती यह हुई कि यह पत्र कालेज खुलने पर डाला गया था। अगर पहले डाला गया होता तो शायद चारू रगे-हाथ पकडी भी जाती।

गुमनाम पत्र चारू की चाची के हाथ मे पड़ा। पढ़कर वह सन्न रह गई। पत्र मे राजेश के नाम का उल्लेख करते हुये, अनुमान को सत्य का रूप देकर जहाँ तक जो कुछ लिखा जा सकता था, लिख दिया गया था। अन्त मे शुभचिन्तक होने के नाते, सलाह दी गई थी कि अगर चारू पर रोक-थाम न की गई तो वह किसी दिन भी राजेश के साथ भागकर परिवार के यश पर कलक लगा सकती थी। चारू की चाची ने पत्र को कई बार पढा। उसके वदन मे कपकपी-सी दौड़ गई। वह वड़ी देर तक सोचती-विचारती रही।

रात मे सोते समय उसकी इच्छा हुई कि पति से पत्र का हाल वता दे, परन्तु रुक गई। उसकी वुद्धि ने उस समय एक-दूसरा रास्ता सुझा दिया—चारू से पूछने के उपरान्त तब पति को वताना उचित होगा। सम्भव है किसी लडके ने उसे वदनाम करने के लिये यह पत्र डाला हो। दूसरे दिन उसने कोई वहाना वताकर, चारू को कालेज जाने से रोक दिया और पति के दुकान चले जाने पर उसे चिट्ठी थमाते हुए पढने को कहा। चारू विस्मय-सहित पत्र पढने लगी। हृदय की धड़कन वढ गई और आँखो के सामने अधेरा छाने लगा। किन्तु तत्क्षण उसने अपने को संभाला और चाची को पत्र थमाती विगड़ उठी। उसने अपनी तरफ से झूठी घटना का उल्लेख किया और वताया कि किस प्रकार एक दिन उसने कुछ वेहूदे लड़को को उनकी वेहूदगी पर सवक दिया था। अपनी सच्चाई की पुष्टि मे उसने यह भी कह दिया कि कल से वह कालेज नही जाया करेगी। सीधी-सादी चाची को विश्वास हो गया। उसने पत्र के टुकड़े-टुकडे कर दिये और आजकल के लडको को खूव कोसा, चारू की सच्चरित्रता पर विश्वास प्रगट किया और प्यार भरे शब्दो मे डाँटकर कल से कालेज जाने को कहा। चारू मुँह लटकाये अपने कमरे मे चली

गई। उसके अन्तर मे ववंडरो का समूह उमड़ पड़ा।

दूसरे दिन चारु ने राजेश को वताया। वह सुनकर हक्का-वक्का रह गया। इस हद तक भी लोग नीचता पर उतारू हो सकते है, वह सोच नहीं सकता था। समस्या पर सब तरह से सोचने-विचारने पर दोनों ने यही निर्णय लिया कि कुछ समय के लिये, कालेज मे मिलना-जुलना पूर्णतः बन्द कर दिया जाये। अपने-अपने रास्ते आना और अपने-अपने रास्ते जाना। किन्तु निर्णय ले लेना जितना सरल होता है, उससे उतना ही कठिन उसे कार्यरूप में परिणत करना और विशेषकर चारु-राजेश जैसे लोगो के लिये।

हफ्ते-डेढ हफ्ते तक समय का पालन हुआ लेकिन वाद मे धीरे-धीरे फिर वही स्थिति आने लगी। यद्यपि रहने के लिये दूर रहने वाला प्रयत्न चलता रहता किन्तु वास्तविकता कुछ और थी। दिन प्रतिदिन उनकी वातचीत मे मिलने-जुलने मे वृद्धि ही होती गई और थोड़े ही दिनो बाद वे पुनः अपनी पुरानी हालत पर आ गये। विरोधी सतर्क हुये। एक दूसरी चिट्ठी लिखी गई और इस वार घर के पते पर न भेजकर दुकान के पते पर डाल दी गई। चिट्ठी चारु के चाचा के हाथ मे पड़ी। वह शोक-सागर मे डूव गया।

पत्र पर सोचने-विचारने में चारु के चाचा को दो-तीन दिन लग गये। फिर अनायास एक दिन वह सवेरे कालेज जा पहुँचा। होने वाली वात, उसे दूर से ही चारु किसी लड़के से वात करती हुई दिखलाई पड़ गई। उसने अपनी गर्दन जानवूझ कर झुका ली। उसके मन ने कहा—यही लडका राजेश है।

चारु की दृष्टि जव चाचा पर पड़ी तो वह घवड़ा-सी गई और 'अंकिल इज कमिंग' कहती हुई रिटायरिंग मे झट से घुस गई। राजेश आगान्तुक की ओर देखने लगा।

आगन्तुक सीधा उसी के पास आकर खड़ा हुआ। उसने पूछा, "आप एम० ए० मे पढ़ते हैं?"

"जी हाँ ।" राजेश ने उत्तर दिया ।

"सबजेक्ट क्या है ?"

"अंग्रेजी ।"

"आपका साम ?"

"राजेश कहते हैं ।"

"अच्छा ।" वह तनिक रुका, "मैं आपसे अलग कुछ बातें करना चाहूँगा ।"

"कहिये ।"

"यहाँ नही, बाहर ।"

राजेश उसके साथ फाटक के बाहर आया । चारू के चाचा ने जेब से वही लिफाफा निकालकर उसे पकडा दिया, "पहले इसे पढ डालिये तब मैं कुछ पूछूं ।"

राजेश ने पत्र पढ़कर लौटा दिया, "पूछिये ।" वह बिल्कुल स्थिर था । उसे किसी प्रकार की घबराहट नही थी ।

"इसमे जो कुछ लिखा है उसके सम्बन्ध मे आप कुछ बता सकेंगे ?"

"केवल उतना ही कि चारू को मैं लव करता हूँ और वह मुझे करती है । शेष बातें झूठी और मनगढ़न्त हैं ।" राजेश ने साफ कह दिया । उसकी समझ से अब छिपाने मे कोई लाभ नही था । एक दिन पहले या बाद मे यह मसला उठना ही था ।

"वह भी आपसे लव करती है ?"

"जी हां ! आप उससे पूछ सकते है ।"

"अब आगे आपका क्या इरादा है ?"

"मैरिज करने का । और क्या हो सकता है ?"

"वह भी तैयार है ?"

"पूर्ण रूप से ।"

"और अगर न हुई तो जानते है ? इसका अंजाम क्या होगा ?"

"जानकर ही बतलाया है वरना कुछ और भी बता सकता था ।"

"अच्छी बात है । जाइये ।" वह वहीं फाटक पर टहलता हुआ चारू की प्रतीक्षा करने लगा । उसके मन की दशा विचित्र हो गई थी ।

राजेश लम्बे-लम्बे पैर रखता, अपने दरजे की ओर पहुँचा । घंटा बज चुका था। पढाई हो रही थी । उसने इशारे से चारू को बाहर बुलाया और सारी घटना बता दी । चारू का चेहरा फक पड़ गया । उसे रुलाई-सी आने लगी थी ।

"इसमे अब," राजेश दृढ स्वर में बोला, "घबड़ाने की क्या बात है ? साफ-साफ तुम भी कह देना । कोई चोरी है ? यह जीवन का प्रश्न है । जैसा हम उचित समझते है, करते है । अब जाओ । सम्भवतः वह बाहर खड़े हैं । तुम्हें साथ लेकर जायें ।"

घंटा समाप्त होने पर जब चारू फाटक पर पहुँची तो उसका चाचा वहाँ खड़ा था । उसने कुछ कहा नही । चुपचाप उसे साथ लेकर घर आ गया । एकान्त मे पत्नी से सारी बातें बताईं और चिट्ठी भी दिखलाई । पत्नी दाँत तले उँगली दबाकर रह गई । लेकिन उसने अपनी चिट्ठी का कोई जिक्र नहीं किया । पति ने पत्नी को राय दी कि वह चारू से हर बात सही-सही पूछ कर उसके व्यक्तिगत विचार जाने, ताकि उसी आधार पर भाई साहब को सूचना दी जा सके । वह दुकान चला गया ।

दोपहर मे चाची ने चारू से बहुत से प्रश्न किये, जिनका निचोड़ यह था कि वह राजेश से प्रेम करती है या नहीं । चारू ने स्वीकार किया और साथ ही साथ यह भी कह दिया कि वह उससे शादी करने के लिये भी इच्छुक है । चाची ने अपनी बुद्धि अनुसार उसे समझाने का प्रयत्न किया । और उसके फैसले को खानदान की इज्जत पर धब्बा लगाने वाला बताया । चारू तर्क करने पर उतर आई । उसने सरल शब्दों में मे चाची की धारणा को रूढ़िवादी बताकर संरक्षक होने के नाते जबर-दस्ती करने का आरोप लगाया, "यह तो मेरी असमर्थता से अनुचित लाभ उठाना हुआ न चाची । मैं अब नादान नही हूँ । मुझे अपने भले-बुरे का अच्छी तरह अनुभव है । मैं अपने मन-पसन्द लड़के से शादी

करूँगी। इसमे किसी को दखल देने का अधिकार नही है।"

चाची चुप हो गई। अब और कुछ कहने-सुनने का कोई मतलब नही था। रात मे पति के आने पर उसने चारू का निर्णय सुना दिया। पति को ऐसी ही आशा थी। वह कुछ देर तक सोचता रहा, तत्पश्चात चारू को बुलवाकर बोला, "तुम्हारी चाची से तुम्हारा फैसला सुन लिया है। जो कुछ तुमने सोचा है, ठीक सोचा है। मुझे इस सम्बन्ध मे कुछ नही कहना है। मैं कल भाई साहब को पत्र लिखे दे रहा हूँ। जब तक वह न आ जायें तुम कोई ऐसा कार्य न कर बैठना, जिससे मुझे दोष का भागी बनना पड़े। मैं समझता हूँ तुम्हें मेरी बात अनुचित नही लगी होगी।"

चारू चुप रही।

"तो मैं आशा रखूँ न कि भाई साहब के आने तक तुम किसी तरह का कोई उल्टा-सीधा काम नही करोगी?"

चारू वैसा ही कहकर अपने कमरे मे चली आई। दूसरे दिन से उसे कालेज जाने से रोक दिया गया।

पाँचवें दिन चारू के पिता-माता वहाँ पहुंचे। माँ, पुत्री से लिपटकर रो उठी और पिता छोटे भाई के पास बैठकर सब-कुछ सविस्तार सुनता रहा। अन्त मे दोनों हाथो से माथा थामकर वह आँसू बहाने लगा। जब क्रोध अपने जैसा करने में अपने को असमर्थ पाता है तो अश्रु बन कर वह निकलता है। भाई ने समझा-बुझा कर धैर्य से काम लेने को कहा, और स्वयं उसके नहाने-खाने का प्रबन्ध करा कर दुकान चला गया।

कहने के लिए चारू का पिता पुनः अपने कमरे मे आकर पड रहा। और गुत्थी सुलझाने के उपायों पर विचार करने लगा। उधर माँ, पुत्री को समझाने मे लगी हुई थी और पुत्री आँखो से आँसुओं की धारा बहाती कह रही थी कि अगर वह विवाह करेगी तो राजेश से अन्यथा करेगी ही नही। माँ की स्थिति अजीब बन गई थी। एक ओर पुत्री की ममता

और स्वयं स्त्री होने के नाते उसकी व्यथा का सही अनुमान का ज्ञान, तो दूसरी ओर पति, उसका कठोर स्वभाव और खानदान की प्रतिष्ठा का प्रश्न था। पलरे दोनों बराबर बन गये थे। उसकी कुछ समझ में नहीं आ रहा था।

पति ने पत्नी को बुलाकर पूछा, "क्या कहा उसने ?"

"रो रही है।"

"रो तो रही है लेकिन उसकी इच्छा क्या है ? कुछ बताया ?" उसके शब्दों में कठोरता थी।

पत्नी को कहना पड़ा, "वह ब्याह उसी से करेगी, नहीं तो करेगी ही नहीं।"

पति उठकर बैठ गया, "उसको मेरे पास बुलाओ।"

पत्नी कॉप उठी। उसने कुछ कहना चाहा।

पिता ने आवाज लगाई, "चारु ! चारु !!"

चारु सहमती हुई कमरे मे आई। पिता ने चिल्लाकर पूछा, "तुमने उसी लडके से शादी करने का फैसला किया है न ?"

चारु चुप रही।

"बोलती क्यों नहीं ?"

चारु फिर भी चुप रही।

वह झटके से उठकर बाहर गया और रसोईघर से चाकू लाकर चारु के हाथ मे थमाता हुआ बोला, "मैं तुझे मार नहीं सकता लेकिन तू मार सकती है। मगर।" वह बिल्कुल सटकर खड़ा हो गया, "मेरी लाश निकलने के बाद ही तू उस लड़के से शादी कर सकेगी, इसके पहले नहीं।"

माँ ने पुत्री को खींच लिया और पति से चिपटी हुई बिलख उठी। चारु अपने कमरे मे चली गई। पिता पुन. सिर थामकर चारपाई पर बैठ गया। उसने बहुत कहने पर भी रात में भोजन नहीं किया और खाट पर करवटें बदल-बदलकर सवेरा कर दिया। उसने अपने जीवन मे यदि किसी वस्तु को महत्त्व दिया था तो वह थी उसकी आबरू, और

आज वही आबरू उसी की सन्तान द्वारा लुट रही थी।

दिन निकल आया था। घर के सब लोग जग गये थे। पिता ने पुत्री को आवाज देकर बुलाया। वह आई। उसे अपने पास खाट पर बैठने को कहा। चारु बैठ गई। वह उसके सिर पर हाथ फेरता हुआ अनायास रोने लगा, "मैं तुम्हारी," उसके मुंह से निकला, 'भावनाओं को समझ रहा हूँ बेटी, लेकिन मेरी हालत में अगर तुम होती तो तुम्हारी भी यही स्थिति बन गई होती। मैं साठ वर्षों से जिस ससार मे पला हूँ, उसे क्या अब किसी तरह बदला जा सकता है? तुम पढ़ी-लिखी हो। सोचो क्या मैं उन विचारों को, तौर-तरीको को और सोचने-विचारने के वसूलों को आज के नये जमाने के वसूलो के साथ ढालने मे समर्थ हो सकूंगा? मैंने अभी तक बडी शान से जिन्दगी बिताई है। अब अन्त समय में ऐसा करो कि मैं मुंह दिखाने के काबिल न रह जाऊँ। मेरी जिन्दगी को कुत्ते की जिन्दगी न बनाओ बेटी! तुम्हारा बूढ़ा बाप तुमसे हाथ जोड़कर भीख मांग रहा है। उसकी खानदान की इज्जत को मिट्टी में न मिलने दो। उसने वास्तव मे चारु के सामने हाथ जोड़ लिये।

चारु बिना कुछ बोले अविलम्ब अपने कमरे में आ गई और दरवाजा बन्द करके बडी देर तक रोती रही। चिन्ता कुछ स्थिर होने पर उसका मस्तिष्क समस्या की जटिलता पर गंभीरतापूर्वक सोचने लगा। उधर उसकी मां देवरानी के पास बैठी अलग रो रही थी। बच्चे किंकर्त्तव्य-विमूढ बने कुछ समझकर भी समझ नही पा रहे थे। पर चेहरे सभी के उदास थे।

दोपहर होने को आई। चारु के कमरे का दरवाजा खुला। उसने मां को बुलाया और राजेश से विवाह न करने का निर्णय सुना दिया। मां स्तब्ध देखती रह गई। उसकी प्रसन्नता का ठिकाना नहीं था। वह पति को सूचना देने चली गई। चारु नहाने के लिए धोती और तौलिया निकालने लगी।

× × ×

लगभग आठ-दस दिन बाद चारु आज कालेज आई थी। राजेश देखते ही प्रसन्नता से उछल पड़ा और बिना उसकी कुछ सुने अपनी सारी परेशानियाँ और उन परेशानियो के निराकरण हेतु किये गये उपायों को एक सांस मे कह गया। उसने कई बार चारु के बगले के चक्कर भी लगाये थे। घंटों इधर-उधर खड़ा भी रहा था किन्तु भेंट नहीं हो सकी थी। चारु सिर झुकाये सब सुनती रही। जब राजेश सब-कुछ कह चुका तो वह बोली. "आज से आपके और मेरे सारे सम्बन्ध खतम हो गये। मैं चाहूँगी कि भविष्य में आप मुझसे बोलने का कष्ट न करे।" वह दरवाजे की ओर बढ़ गई।

राजेश बुत बना खड़ा रहा। तलवे से पृथ्वी खिसक गई थी। असम्भव, सम्भव हो गया था। उसकी इच्छा हुई कि वह चारु को रोके और उसका कारण पूछे, पर पैर आगे बढ कर फिर रुक गये। वह दरजे में न जाकर साइकिल-स्टैंड की ओर मुड़ गया। साइकिल निकाली और घर आकर खाट पर पड़ रहा।

२६

कालेज खुलने पर नीलिका और अमरनाथ की भेंट हुई। नीलिका ने बताया कि उसके पति के पास सरकारी तार आने के फलस्वरूप अकस्मात दिल्ली का कार्यक्रम बनाना पड़ गया। चूंकि उसे अपने पति से एक दिन भी अलग रहना दुसह्य है, इस कारण उसे भी जाना पड़ा था। वह उसकी सूचना न देने के कारण बड़ी लज्जित है और माफी चाहती है। अमरनाथ को निरुत्तर हो जाना पड़ा। पुनः समानुसार कालेज लगने से पहले, तथा छुट्टी होने के बाद थोड़ी देर दोनों में वार्ता होने लगी,

जो दोनो के लिए आनन्ददायिनी थी। नीलिका तो अब-जब-तब कुछ मजाक भी कर देती पर अमरनाथ सोच कर भी कहने मे हिचकिचाता रहता। नीलिका नित्य छुट्टी के बाद, अमरनाथ को उसके बंगले छोड़ती हुई जाती थी।

एक दिन नीलिका ने कहा, "और न सही लेकिन फोर्ट तो पूरा दिखा ही दीजिये। यह क्यो अधूरा रह जाए? फतहपुर सीकरी, एक्जामिनेशन बाद देख लेगे।"

"जिस दिन आपकी इच्छा हो सेवक नित्य तैयार है।"

नीलिका मुसकराई, "बातो का आर्ट आपको खूब मालूम है। सामने जान निकाल कर रख देते हैं और पीछे क्या कहते होगे गाड नोज। खैर, कल का प्रोग्राम रखिये। कालेज से चले चलेंगे। लौटते समय लंच मेरे यहाँ ही करना होगा, इसे भी समझ लीजिये।"

"बस, इसे नही समझूंगा। और सब तय है।"

नीलिका ने उसकी ओर मुंह घुमाया, "अभी कुछ दिन इस तरह के खानो का जायका ले लीजिये मिस्टर वरना बीवी आने पर कोई नही पूछेगी।"

"आप भी नही पूछेगी?"

उसने हंस कर नाहीं कह दिया।

दूसरे दिन दोनो कालेज से सीधे किले जा पहुँचे। ड्राइवर गाड़ी लेकर लौट आया। उसे साहब को आफिस पहुँचाना था। अमरनाथ, नीलिका को लिये 'मुथमन बुर्ज' से दीवान खास मे आया। शाहजहाँ द्वारा निर्मित सगमरमर का दीवान खास, साम्राज्य के अमीर-उमरावों और राजपूत सरदारो से विशेष अवसरो पर, विचार-विमर्श हेतु था। दीवान-खास के सामने लगभग ४० गज लम्बी और २२ गज चौड़ी छत के सम्बन्ध मे बताते हुए अमरनाथ ने कहा, "यह पूरी छत कभी सग-मरमर की थी और इसके किनारे-किनारे लगे हुए इन कड़ों के सहारे, मखमली शामियाना लगाकर, शाही जलसे और नाच-रग हुआ करते

थे। यह जो आप काले पत्थर का सिंहासन देख रही हैं, बादशाह के बैठने के लिये था। इस सिंहासन को 'संगे-महक' के नाम से पुकारा जाता है, और सम्राट जहाँगीर का है। सम्राट बनने से पूर्व अपने विद्रोह काल मे, वह इसी पत्थर पर बैठकर, इलाहाबाद मे दरबार किया करता था।"

नीलिका ने इस काले पत्थर पर, जो लगभग डेढ बालिश्त मोटा, तीन हाथ लम्बा और ढाई हाथ चौडा था—हाथ फेरते हुए पूछा—'संगे-महक' से क्या मतलब ?"

'टच स्टोन—कसौटी वाला पत्थर। इसी पत्थर पर रगड़ कर सोना परखा जाता है।"

"आई सी। इट इज यूनीक वन।" वह मुड़ी।

इसी सिंहासन के सामने छत के उस सिरे पर एक संगमरमर का दूसरा सिंहासन बना हुआ था। अमरनाथ ने उसे सम्राट शाहजहाँ का सिंहासन बताया और फिर 'हम्मामे शाही' मे आ गया, जो छत के अन्तिम छोर पर बना था। हम्मामे-शाही अर्थात 'सम्राट स्नानागार' अब खंडहर के रूप मे है। 'पाद-शाहनामा' के अनुसार, इस हम्माम की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि इनकी दीवारो और छतो को बहुत बड़े-बड़े दर्पणो से ढक दिया गया था। फलस्वरूप हम्माम में भी एक दूसरी यमुना झाड़ियो और पेड़ो सहित बह निकली थी। अमरनाथ एक कमरे से दूसरे और दूसरे से तीसरे कमरे की विशेषताओं को बताता रहा। नीलिका सँभल-सँभल कर पैर रखती चलती रही। कारण फर्श बिल्कुल खुदी हुई थी और कहीं-कहीं तो ऐसी खुदी थी कि उसमे गिरने पर निकलने की आशा नही की जा सकती थी।

नीलिका ने कुछ आश्चर्य-सहित पूछा, "यह समझ मे नही आ रहा है कि यह हिस्सा इतनी बुरी तरह डैमेज क्यो हो गया है ?"

"यह लार्ड बैंटिंग साहब की मेहरबानी है। जाटों ने जो कुछ लूटा सो तो लूटा ही, बैंटिक महोदय उनसे भी दो कदम आगे बढ गये थे।

उन्होंने पूरे हम्माम को खुदवाकर सारी चीजें नीलाम करवा दी थी। आप सुनकर ताज्जुब करेंगी कि ताजमहल भी एक विदेशी कंपनी के हाथ बेच दिया गया था, लेकिन ईश्वर की कृपा थी कि वह टूटने से बच गया, अन्यथा आज हम उससे भी वंचित रहते।"

नीलिका अचम्भा व्यक्त करती हुई कुछ कहने ही वाली थी कि अकस्मात उसका दाहिना पैर एक नाली में घुस गया और अगर अमरनाथ ने अविलम्ब पकड़ न लिया होता तो वह मुँह के बल इस तरह गिरती कि नाक-दाँत टूटकर बराबर हो जाते। नीलिका, अमरनाथ से चिपट गई। उसका पैर घुटनों तक नीचे चला गया था। अमरनाथ ने अपने दोनो हाथो को उसकी कमर में लपेटते हुए उठा लिया। नीलिका वहीं बैठ गई। अमरनाथ भी जल्दी से उसकी सलवार को उठाकर, दूब जैसे पैर को सहलाने लगा। उसे बिल्कुल ध्यान नही रह गया था कि वह क्या कर रहा है। नीलिका मौन थी। अमरनाथ का ध्यान बटा। वह शीघ्रता से पैर छोड़ता खड़ा हो गया। वह लजा-सा गया था। उसने दूसरी ओर देखते हुए कहा, "खड़ी हो जाइये। मैंने आपको इधर लाकर बड़ी गलती की। लोग इसी वजह से इसके अन्दर देखने नहीं आते।"

नीलिका ने सहारे के लिये अपना हाथ उठाया। अमरनाथ को पकडना पड़ा। नीलिका खडी हुई और अचानक अपने हाथो को उसके कधों पर रखते हुए, उसके कपोलों को चूम लिया, "टू-डे यू हैव सेव्ड माई लाइफ। आइ विल नेवर फॉरगेट इट।" वह कपड़ों को झाड़ती बाहर को चल पड़ी।

अमरनाथ की सारी देह पसीने-पसीने हो उठी थी।

शाहजहाँ के पत्थर वाले सिंहासन के नीचे वाला भवन 'मच्छी भवन' के नाम से जाना जाता है। यह भवन किसी समय संगमरमर के वर्गाकार टुकड़ो से सजाया गया था। इस भवन के आँगन में बड़े-बड़े जलाशय थे जिनमे पाली हुई रंग-बिरंगी मछलियो के साथ, बादशाह सलामत मनोरंजन किया करते थे। परन्तु जाटों की लूट में यह सब तहस-नहस हो

गया था। इसी भवन के पीछे, यमुना की ओर एक तहखाना है, जहाँ शाही खजाना रहा करता था। जैसे-तैसे इस भवन को दिखाने के बाद, अमरनाथ 'महल-छेहल-सुतून' अर्थात दीवान-आम मे आया। लाल पत्थरों से बना हुआ ४० स्तम्भो वाला दीवान-आम, लगभग ६७ गज लम्बा और २२।। गज चौड़ा है। इसका सफेद प्लास्टर, जिसे शाहजहाँ ने कराया था, आज दिन भी इतना चमकदार है कि देखने वाले को संगमरमर का भ्रम हो जाया करता है। दीवान-आम की सबसे बडी विशेषता यह है कि इसके सामने वाले भू-भाग के किसी हिस्से से खड़े होकर, सम्राट के सिंहासन को देखा जा सकता है।

जैसे-तैसे दीवान-आम को दिखाने के उपरान्त अमरनाथ ने 'मोती मस्जिद' दिखलाई, तदुपरान्त बाहर को चल पड़ा। अभी वह अपने स्वाभाविक मूड में नही आ पाया था। बाहर मोटर खडी थी।

नीलिका के कहने को अमरनाथ टाल न सका। उसे भोजन करने के लिये उसके बँगले जाना पड़ा, किन्तु भोजनोपरान्त वह शीघ्र ही चलने के लिये उठ पड़ा। नीलिका ने चार बजे चाय पीकर जाने के लिये पुनः आग्रह किया। अमरनाथ ने क्षमा माँग ली और कार मे आकर बैठ गया।

रास्ते-भर अमरनाथ, नीलिका के सम्बन्ध मे, उसके व्यवहारो और हरकतो के सम्बन्ध मे, तथा सग-संग अपने सम्बन्ध मे भी सोचता रहा। आज वह स्वयं भी अपने लिये अनोखा और अनबूझा बन बैठा था। नीलिका तो अनबूझी थी ही।

दूसरे दिन कालेज से लौटने के बाद जब अमरनाथ नहा-खाकर पढने के लिये बैठा तो तबियत दोबारा नीलिका से मिलने के लिये मचल उठी। बुद्धि ने आपत्ति उत्पन्न की—दोपहर मे जाना उचित नही है। वह क्या सोचेगी? मन ने काटा—वह उसे देखकर प्रसन्न होगी। क्या उसके अन्दर मिलने की व्यग्रता नही है? उसे अवश्य चलना चाहिये।

अमरनाथ उठ पड़ा, कपडे बदले और बहन से एक लड़के का बहाना बताकर, बाहर निकला। कचहरी के पास रिक्शा किया और मकबरा

रोड को उड़ चला। मन उल्लास से भरा हुआ था। जल्द से जल्द पहुँच जाने की उत्कंठा थी।

नौकर ने अन्दर जाकर नीलिका को सूचना दी। वह सुनते ही बाहर आई. "इसमे कहलाने की क्या जरूरत थी ? आपसे कुछ परदा है क्या ? आइये।" वह ड्राइंग-रूम में न बैठकर अन्दर वाले कमरे मे चली गई।

सोफे पर बैठता हुआ अमरनाथ बोला, "आपको मेरा आना सुनकर कुछ अचम्भा हुआ होगा ?"

"बिल्कुल नही।" वह भी उसी के सोफे पर बगल मे बैठ गई, "कभी आपको भी तो आना चाहिए। सच पूछिये तो अभी कुछ देर पहले मैं आपके बारे मे ही सोच रही थी।"

"क्यो ?"

"वैसे ही। कल वाले इन्सीडेंट को सोचकर। आपको कालेज में बताना भूल गई थी। इस खुशी मे एक दिन दरे साहब आपकी पार्टी करने वाले हैं।"

"लेकिन पहले कायदे से आपको करना चाहिये। इसमे खाने वाले और खिलाने वाले, दोनो को मजा आयेगा।"

"नही मिस्टर अमरनाथ। जितना मजा दरे साहब को आवेगा उतना मुझे नही। आई टेल यू, ही इज ज्वेल। अगर कल शाम को आप यहाँ होते तो उसका अन्दाज लग गया होता। यह समझ लीजिये कि जब तक वह सो नहीं गये, इसी टापिक पर घुमा-फिराकर बाते करते रहे। मैं कभी-कभी सोचती हूँ कि अगर किसी वजह से मेरी अरली डेथ हो गई तो बेचारे का क्या हाल होगा ?"

अब न जाने क्यो जब नीलिका अपने पति की प्रशंसा करती थी तो अमरनाथ उसे सुनी-अनसुनी करने का प्रयत्न करने लगता था। उसे ऐसा आभास होता था कि नीलिका अपने पति से, उसे न्यून सिद्ध करने के अभिप्राय से ही यह सब कहा करती थी। पर अमरनाथ फिर भी यह सुनने के लिये विवश था। और कल के चुम्बन वाली घटना से तो

बिल्कुल ही विवश हो गया था। उसने मुसकराते हुए उत्तर दिया, "ईश्वर अन्यायी नही है नीलिका जी। वह ऐसा नही करेगा। दरे साहब के साथ-साथ और लोगों की भी तो जिन्दगी तबाह हो जायेगी।"

होठो पर मुसकान की आभा छिटकाती नीलिका ने अँगड़ाई ली। आधा पेट वाला ब्लाउज और ऊपर खिंच गया। कमर की सुडौलता निखर आई, "आज एक नई," वह बोली, "बात मालूम हुई। दरे साहब तकलीफ में हिस्सा बटाने वाले और लोग भी हैं। अब इतमिनान है कि अगर डेथ हो भी गई तो अफसोस नही होगा। मैं समझती हूँ उन बद-नसीबो मे एक नाम आपका भी होगा ?"

"जी हाँ। बिल्कुल ऊपर समझिये।"

"बिल्कुल ऊपर ?"

"जी।"

"तब तो एक दावत आपको भी खिलानी चाहिए। मेरी वकअत इस हद तक है, मै कभी सोच भी नही पाई थी। बोलिये, किस दिन खिला रहे है ?"

"यह तो खाने वाले पर निर्भर करता है। खिलाने वाला इस समय भी तैयार है। मैटनी-शो का प्रोग्राम बन सकता है।"

नीलिका ने घड़ी में समय देखा, "ओके।" उसने आया को आवाज़ देकर फोन लाने को कहा।

आया फोन ले आई। नीलिका ने दरे को फोन मिलाया—"अमरनाथ जी आये हुए हैं। मैं उनके साथ पिक्चर जा रही हूँ। गाडी भेज दो। और हाँ, कुछ देर तक आफिस में बैठ सको तो मैं लौटती हुई तुम्हे पिकप कर लूँगी।"

"ठीक है।" उत्तर आया, "मैं आफिस मे ही रहूँगा।"

नीलिका ने फोन रख दिया और कपड़े बदलने अन्दर चली गई।

अमरनाथ बेहद खुश था—अंधे के हाथ पड़ी हुई बटेर के समान। शरीर के प्रत्येक अंग में एक नवीन स्फूर्ति की लहर दौड़ गई थी और

बुद्धि कुछ सोचने लगी थी। अवसर मिलता है लाभ उठाने के लिए हाथ मलकर पछताने के लिए नही। वह इस समय कुछ दूसरे प्रकार की बातें सोच रहा था।

नीलिका कपड़े बदल कर आई, "चलिये। गाड़ी आ गई है।"

अमरनाथ ने देखा और प्यासी मछली की भाँति तड़फड़ा कर रह गया। ऐसा रूप। इसीलिए तो देव ऋषि नारद तक को बन्दर बनना पड़ा था। अमरनाथ खड़ा हुआ, "हिन्दी देखने का विचार है या अंग्रेजी ?"

'आप जैसा कहे। वैसे आजकल एक इंग्लिश पिक्चर अच्छी लगी हुई है।"

"तब तो अंग्रेजी ही चलिए।"

दोनो गाडी मे बैठ गये। नीलिका स्वयं मोटर चला रही थी।

सिनेमा के सामने मोटर आकर रुकी। दोनो उतरे। नीलिका ने पर्स से रुपये निकाले, "लीजिये।"

"क्यो ! आप भी कमाल करती है। पिक्चर मुझे दिखाना है आप को नही।"

"पहले नोट पकड़िये। बहस बाद में कीजिएगा।"

"यह नही हो सकता।" अमरनाथ ने कहा।

"तो मैं पिक्चर देखने नही जाऊँगी।" वह खड़ी हो गई।

"यह तो गलत बात हुई न ?"

"कभी गलत बात मे भी सही का मजा लेकर देखिये। एक नया एक्स्पीरियन्स होगा। लीजिए पकड़िये।"

अमरनाथ को लाचार हो जाना पड़ा।

न्यूज-रील के बाद सिनेमा शुरू हो गया। बालकनी पूरी नही लेकिन आधे से अधिक भरी हुई थी। अमरनाथ कुरसी पर इधर-उधर आसन बदलने लगा। कभी हाथ पीछे फैलाता तो कभी कोहनी के सहारे कर लेता। सम्भवत. वह किसी अन्तर्द्वन्द्व मे उलझ उठा था। नीलिका शान्त

बैठी सामने देख रही थी। इन्टरवल भी हुआ और अन्त मे खेल भी समाप्त हो गया। अमरनाथ का अन्तर्द्वन्द्व ज्यो का त्यो बना रहा। वह निबटारा न कर सका। दिल की तमन्ना दिल ही मे रह गई। सारी योजना निष्फल गई। अवसर से लाभ उठाने की हिम्मत न हो सकी।

२७

अमरनाथ से राजेश कह रहा था, "· यह है उस दिन की अन्तिम बातचीत।"

"मैंने तुम से उन बीचो, जब वह कालेज नही आ रही थी तो क्या कहा था? हुई न वही बात? लेकिन अब भी इसमे कुछ भेद है। तुम चारू से दोबारा मिलो। वह चीप टाइप की लडकियो मे नही है। सम्भव है, उस दिन किसी वजह से उसका मूड खराब हो गया हो।"

राजेश क्षण-दो क्षण सोचता रहा, "पर अमरनाथ जी, अगर मूड भी खराब था तो मुझसे इस तरह की क्यों बातें की? और अगर उसका दोबारा उत्तर भी उसी तरह का रहा तो?"

"तो समझ लेना कि उसने तुम्हे धोखा दिया। इसमे किसी तरह की जबरदस्ती भी तो नही हो सकती है और अगर की गई तो उसमे कोई नतीजा नही निकलने का।"

"नतीजा बिल्कुल निकलेगा। उसे एक सीख तो मिलेगी अगर वह किसी की जिन्दगी के साथ खिलवाड कर सकती है तो दूसरा भी कुछ कर सकता है न?"

"देखो राजेश, तुम करने के लिए बहुत कुछ कर सकते हो। मगर उसे करने मे चारू के परिवार वालों का कितना बड़ा अहित होगा, यह

भी तो सोचो। तुम्हारा प्रेम शुद्ध प्रेम रहा है और शुद्ध प्रेम करने वालों का आदर्श ऐसा नहीं होना चाहिए।"

राजेश चुप रहा। अमरनाथ ने उसे तनिक ध्यान से देखा। वह समझ गया कि राजेश के गले से उसकी बात उतरी नहीं है। उसने फिर समझाया, "अभी कल उससे मिलकर देखो। जब तक वास्तविकता न सामने आये उस पर अटकल लगाने का कोई तुक नहीं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि चारु तुम्हें धोखा नहीं देगी।"

राजेश ने वैसा ही करने को कहा पर वह जिस उम्मीद को लेकर अमरनाथ से सलाह करने आया था, वह उलटी साबित हुई। अमरनाथ के विचारों से वह बिल्कुल सहमत नहीं था। सहमत होता भी कैसे ? उसकी वेदनाओं ने उसकी बुद्धि को हर जो लिया था। उचित-अनुचित सोचने की शक्ति जाती रही थी। क्रोध ने सीमा का उल्लंघन कर दिया था। राजेश कुछ कर डालना चाहता था। यदि चारु उसके जीवन के साथ खिलवाड़ कर सकती थी तो वह भी ईंट का जवाब पत्थर से दे सकता था। दुनिया को सच्चाई का ज्ञान करा सकता था।

यद्यपि राजेश की अन्तरात्मा दोबारा चारु से कुछ पूछने को तैयार नहीं थी और वह पूछता भी नहीं परन्तु दूसरे दिन कालेज में घुसते ही अचानक चारु से आमना-सामना हो गया और उसके मुँह से निकल पड़ा, "मैं तुमसे कुछ बातें करना चाहता हूँ।"

"उसी सम्बन्ध में या··· ।" वह ठिठकी।

"उसी सम्बन्ध में।"

"कोई यूज नहीं। मैं आपसे पहले ही कह चुकी हूँ। मुझे आपसे किसी तरह का कोई रिलेशन नहीं रखना है।"

राजेश के बदन में आग लग गई। फिर भी उसने अपने को संभाला, "क्यों ?"

"क्यों का क्या सवाल है। तबीयत।"

"और पहले तबीयत कैसी थी ?"

"जैसी थी वैसा किया। अब नही है।"

"अब किसी दूसरे के साथ तबीयत हो गई है ?"

"ऐसा ही समझ लीजिये।'

राजेश मनमना उठा। उसने घूरा, "चारू ! मुझे समझाओ नही वरना मैं बहुत बुरा साबित होऊँगा। अगर तुम मेरे जीवन के साथ खिलवाड़ कर सकती हो तो मैं भी तुम्हारे जीवन का अस्तित्व मिटा सकता हूँ।"

"आप खुशी से ऐसा कर सकते है।" वह चलने को हुई।

राजेश ने रोका, "रुको।"

वह रुक गई।

"तुम इतनी दगाबाज लड़की हो सकती हो, मैंने स्वप्न मे भी नही सोचा था। तुमने कितनी बार मेरी और ईश्वर की कसमे खाकर अपने प्रेम की सच्चाई का साबूत दिया था. कुछ खयाल है ? तुम्हें उन पर शर्म नही आती ? और अगर तुम्हारे सामने कोई मजबूरी आ गई है तो तुम्हे चाहिये था कि जहर खाकर सो जाती। प्रेम पर···।"

चारू बिना बोले चल दी। वह दरजे में न जाकर रिटायरिंग-रूम में चली गई और मुँह धोने के बहाने गुसलखाने मे रोती रही।

राजेश घर लौट आया और नानी से सिर मे दर्द का बहाना कर लेट रहा। हृदय मथता जा रहा था और सिर फटा जा रहा था। क्रोध इतना था कि शायद चारू को कच्चे चबा डालने पर भी संतोष न होता। वह चारू को सबक देने की योजनायें बनाने लगा। दोपहर मे उसने खाना नही खाया। उसी प्रकार पड़ा उपायो को सोचता रहा। लगभग तीन बजे अमरनाथ ने आवाज दी। राजेश ने उसे अन्दर बुला लिया और चारू से हुई वार्ता का सारांश सुना दिया। अमरनाथ देर तक सिर झुकाये सोचता रहा। उसे भी आश्चर्य था। अकारण ऐसा होना नही चाहिए था। और अगर कोई कारण था तो चारू को बताना चाहिए था। अमरनाथ ने एक और प्रयास करने की इच्छा व्यक्त करते हुये स्वयं चारू से बात-

चीत करने का प्रयास रखा। राजेश ने 'बिल्कुल बेकार' कह कर प्रस्ताव को जड़ से साफ कर दिया। अब वह अपने सम्बन्ध में चारू से बात करना-कराना पसन्द नही करता था। अमरनाथ को चुप हो जाना पड़ा। फिर भी चलते समय अमरनाथ ने उससे सोच-समझ कर ही कुछ करने की सलाह दी। आवेश मे किया हुआ कार्य दूसरो के साथ-साथ अपने लिये भी दुखदाई सिद्ध होता है। उसके चले जाने के बाद पुन' राजेश अपनी चिन्ताओ मे डूब गया।

सध्या होने को आई। नानी ने कुछ जलपान लाकर दिया। राजेश ने थोड़ा-बहुत खाया और नहाने चला गया। शायद स्नान से दिमाग की गरमी शान्त हो सके। स्नानोपरान्त कपडे बदल कर वह बाहर निकला और चारू के घर को चल पडा। वह चारू के चाचा से स्पष्ट बातें करके अपना मन्तव्य भी जताना चाहता था। वह अब जो कुछ भी करना चाहता था डके की चोट पर करना चाहता था। उसे अपने जीवन की चिन्ता नही थी।

राजामडी स्टेशन के समीप पहुँचने पर अकस्मात उसके विचारो मे परिवर्तन आया। चारू के चाचा से मिलने का कोई मतलब नही था—मन ने कहा। वह लौट पडा।

सारी रात जागरण मे—निर्णय लेने मे बीती। सवेरे उठते ही उसने नानी से कहा,"आज मैं गांव जा रहा हूं।"

"क्यो ?" नानी चौंकी। उसे कल से आज तक में इतना अनुमान हो गया था कि उसका लडका किसी उलझन का शिकार हो गया है।

"कालेज के कुछ लड़के जा रहे हैं। वहाँ पिकनिक है।"

"घूमने जा रहे हो ?"

"हाँ।"

"पर तुम्हारी तबीयत तो कल से कुछ गड़बड चल रही है न ? तुम्हारा जाना ठीक नही। लडकों को जाने दो।" नानी ने तबियत के बहाने उसे रोकने का प्रयत्न किया।

"तबीयत कहाँ खराब है ? कल सिर मे थोड़ा दर्द हो गया था। नही जाऊँगा तो लड़के बुरा मानेंगे। वहाँ इन्तजाम भी मुझे करना है।"

"और किसी दिन चले जाना। आज न जाओ।"

राजेश झुँझला उठा, "तुम समझती तो हो नही। सबसे कह चुका हूँ। कुछ भी मै करता हूँ तुम अंड़गे जरूर लगाती हो।"

नानी को चुप हो जाना पड़ा।

राजेश दैनिक क्रियाओं से निवृत होकर जब कपड़े बदलने लगा तो नानी ने दूध और हलवा लाकर दिया, "शाम तक आ जाओगे ?" माँ, लड़के की बातो का कब बुरा मानती है।

"नही, कल शाम तक। फसल-वसल का इतज़ाम भी तो देखना होगा। तुम इतनी जल्दी घबड़ाया न करो। मैं बच्चा नही हूँ।" वह हलवा खाने लगा।

आगरे से पन्द्रह मील दूर, फीरोजाबाद रोड पर राजेश का गाँव है। इस सड़क पर हर आधे घंटे मे बस आती-जाती रहती है राजेश दस बजते-बजते गाँव आ गया। सीधे सभापति के पास पहूँचा। भेंट हो गई। सभापति ने बड़े प्रेम भाव से कुशल क्षेम पूछा और दालान मे चारा काटते हुये घसीटे को शरबत बना लाने को कहा।

राजेश ने टोका, "कुछ पीने की तबीयत नही है काका मै एक बहुत जरूरी काम से आया हूँ। पहले···।"

"बोलो। सब हो जायेगा। पंडित जी नही हैं तो क्या हुआ ? हम तो है। बताओ।" पडित जी से उसका भावार्थ था। राजेश के पिता से।

"यहाँ नही। घर पर आओ। तब तक मैं चलकर कपड़े उतारता हूँ।" उसने थोड़ी आवाज धीमी कर दी, "बहुत खास बात है।"

"चलो, मैं आधे घंटे में आया।"

आधे घंटे के स्थान पर एक घंटे बाद सभापति आया। राजेश

बैठते ही कहा, "मुझे एक लड़की का कतल करवाना है।"

"एक लड़की का ? " सभापति तनिक चौंका।

"हाँ। और इसके लिये मैं सब कुछ करने को तैयार हूँ। यह होना जरूर है।"

"वह लड़की कहाँ है—आगरे मे ?"

"हाँ।"

"क्या तुम्हारे साथ पढ़ती भी है ?"

राजेश ने सिर हिला कर स्वीकार किया

सभापति सोचने लगा, "काम बड़ा," वह बोला, "टेढ़ा है राजेश। लड़की का मामला है और वह भी बीच शहर का। इधर आस-पास का होता तो एक इशारे मे सब कर देता। पर•••।" वह कहते-कहते चुप हो गया। वह पुनः सोचने लग गया था।

"इसमें मेरे जीने-मरने का सवाल है काका। अगर वह नही मारी गई तो मैं जहर खा लूंगा। मैं इस काम के लिए अपने दस-पांच बीघे खेत बेच सकता हूँ। और अगर तुम कहोगे तो मैं खुद उन लोगों के साथ-साथ भी रह सकता हूँ। मुझे फाँसी से डर नही है।"

दस बीघे पर सौदा बुरा नही था। सभापति मन-ही-मन प्रसन्न हुआ। वह बोला, "देखो, आज इस पर सोचें-विचारेंगे। तुम भी जरा ठंडे मन से सोचो। यह काम अच्छा नहीं है। तुम्हारे गुस्से का कारण मैं समझ रहा हूँ। शायद वह लड़की अब दूसरे से आशनाई करने लगी है। यही है न ?"

राजेश ने स्वीकार किया।

"बेटा, शहर की लडकियाँ ऐसी ही होती है। जहाँ पच्चीस तरह के पत्तल खाने को मिलते हों, वहाँ एक पर क्यों रहा जाय; लेकिन तुम्हारी हिम्मत की मैं तारीफ करता हूँ। तुमने ऐसा सोचा तो। फिर भी मेरी अपनी राय यही है कि जो हो गया उसे भूल जाओ और अपनी पढाई-लिखाई मे मन लगाओ। तुम्हें बहुत लड़कियाँ मिलेंगी ?" सभापति

पुराना खुर्राट था।

"काका। तुम्हें इस काम को तो करना ही होगा। यहाँ लड़की मिलने और न मिलने का प्रश्न नहीं है, प्रश्न है बदले का। उसे विश्वास-घात का फल मिलना ही चाहिए। तभी मुझे चैन मिल सकेगा।"

सभापति माथा खुजलाता खड़ा हो गया—"देखो, जा रहा हूँ। आज तुम्हें रुकना पड़ेगा। कल इसका निर्णय हो सकेगा।"

राजेश उसके साथ-साथ बाहर तक आया।

राजेश के गाँव का सभापति पुराना कतली और बदमाशो का गुर्गा है। चोरी और डकैती डलवाना उसके आये दिन का काम है। आस-पास के सारे गाँव उससे आतंकित हैं और इसी आतंक के बल पर वह सभापति बना बैठा है। उसके लिये कोई काम मुश्किल नहीं है। वह पैसों के लिये कृतघ्न कार्य कर सकता है और करा भी सकता है।

२८

नीलिका के पास बैठने की, उससे कुछ कहने की और सुनने की इच्छा बढ़ गई थी। यद्यपि अमरनाथ भली-भाँति समझता था कि इस प्रकार की इच्छाओं को प्रोत्साहन देना, अनुचित मार्ग का अनुसरण करना था, पर वह करे क्या ? उसे तो उस मार्ग पर जबरदस्ती घसीटा जा रहा था। धक्के दे-देकर आगे चलने को बाध्य किया जा रहा था। शेर को आदमी का खून चखाया जा रहा था। अमरनाथ विवश हो गया था। और वह अपनी इस विवशता को कमज़ोरी न मानकर, दूसरे की ज्यादती बताया हुआ अपने को निर्दोष सिद्ध किये बैठा था, जबकि उसका विवेक इस थोथे और स्वयं को धोखा देने वाली दलील से, पूर्णतः असह-

मत था। उनका कहना था कि या तो कोई गलत काम करो नही और करो तो डके की चोट पर करो, जैसे नीलिका कर रही थी। जो काम दूसरों की दृष्टि मे अनुचित है, जरूरी नही कि तुम भी उसे अनुचित समझो, उसे वैसा ही कहने का साहस भी रखो और अवसर पडने पर विना हिचक के कह भी डालो। अपनी वन्दूक दूसरे के कंधे से चलाने का प्रयत्न न करो। माना चारित्रिक दुर्वलता प्राकृतिक देन है। कोई इससे अछूता नही है, और जो अछूता है, वह अपवादो की श्रेणी मे आता है। अपवादी सांसारिक नहीं समझा जाता। इस कारण उसके सम्वन्ध मे कुछ विचारना असगत होगा। सासारिक को, चाहे स्त्री हो अथवा पुरुष—काम-वासना की प्रवल उत्तेजना है। वह उसकी पूर्ति हेतु अपनी सुविधाओ, अवसरो और परिस्थितियो के अनुसार सदैव प्रयत्नशील रहता है। अतः न तो उसे अप्राकृतिक कहा जा सकता है और न पाप। और जव दोनो नहीं है, तो अमरनाथ को नीलिका के सिर, सारे दोप मढ देने का कोई प्रयोजन नहीं था, जव कि वह स्वयं नीलिका की 'पसन्दगी' और 'मुहव्वत' के अन्तर वाले सिद्धान्त का समर्थक था और प्रतिभा से भी इस विपय पर घटो तक वितर्क कर चुका था। खैर, जो कुछ भी था, उस पर न तो अमरनाथ को सोचने का अवकाश था और न समझने का। वह अव केवल नीलिका को ही सोचना-समझना चाहता था।

आज पुन. नहाने-खाने के उपरान्त नीलिका से मिलने वाली वेचैनी उभर उठी। मस्तिष्क ने वाधा उपस्थित की—किसी के यहाँ जल्दी-जल्दी जाना ठीक नही होता। प्रतिष्ठा मे कमी आती है। साथ ही आकर्षण मे भी अन्तर पडने लगता है।

अमरनाथ को वात जंच गई। उसने पुस्तक खोली और पन्ने उलटने लगा। दोवारा एक दूसरा विचार उठा—आकर्षण मे अन्तर क्यो पड़ेगा? अव तो जल्दी-जल्दी मिलने से ही मिठास मे वृद्धि हो सकती थी। तभी घनिष्टता का वास्तविक आनन्द मिल सकता था।

अमरनाथ पुस्तक वन्द करता कुरसी से खडा हो गया। फिर रुकावट

पड़ी—लेकिन दोपहर मे जाना ठीक नही है। यह सन्देहजनक है। शाम का समय उचित होगा। वह बैठ गया। उसने संध्या को जाना ही निश्चित किया। पुस्तक खुल गई। पढाई होने लगी।

चार बजे जज साहब कचहरी से आये और सिनेमा का प्रोग्राम बनाने लगे। अमरनाथ बे-मौत मरा। कहाँ जाने की तैयारी कर रहा था और कहाँ की होने लगी। उसकी बुद्धि ने बहाना ढूढा और उसे वास्तविक भी सिद्ध कर दिया। बात जम गई। सिनेमा का कार्यक्रम रद्द हुआ। अमरनाथ को मुक्ति मिली। उसने जल्दी-जल्दी कपड़े बदले और बिना चाय पिये निकल पड़ा। चौराहे पर तेज रिक्शे वाले को तय किया और उड चलने को कहा। रिक्शेवाले ने पैर को मशीन का रूप दे दिया। सामने बरामदे मे दोनो बैठे दिखलाई पड़ गये। नीलिका मुसकराती खड़ी हो गई और स्वागत किया, "आइये।"

दरे ने भी उठकर हाथ मिलाया, "बड़े मौके से आये वरना मुलाकात न हुई होती। हम लोग अभी बाहर निकलने को ही सोच रहे थे। और सुनाइये ? स्टडी कैसी चल रही है ?" दोनों बैठ गये थे।

"अभी कोई खास नही लेकिन अब जुटने का विचार है। पढने वाला मौसम भी आ गया है।"

"और हम लोगो की", नीलिका पूछ बैठी, "कम्बाइंड स्टडी का क्या होगा ?"

"आपने सारा दोष मेरे ही सिर रख दिया। आप जब से तैयार हों पढाई शुरू कर दी जाय। बोलिये, कल से मैं आऊँ ?"

"नेकी और पूछ-पूछ। तबीयत हो तो आज से भी शुरू हो सकती है। मै जुटने मे आपसे पीछे न रहूँगी।" वह मुसकराई, "टाइम कौन-सा रखेंगे ?"

दरे ने बताया, "मै समझता हूँ दोपहर में खाना खाने के बाद अमरनाथ जी को सहूलियत रहेगी और तुम्हे भी। बारह-साढे बारह पर रोज ड्राइवर जाकर आपको ले आया करेगा। क्यों अमरनाथ साहब ?"

अमरनाथ ने हामी भरी, "एक से चार या पाँच तक का टाइम पर्याप्त है। आपका क्या ख्याल है ?" उसका सम्बोधन नीलिका को था।

"बिल्कुल ठीक है। मेरी कन्विनियन्स आपकी कन्विनियन्स पर टोटली डिपेन्ड करती है।" उसने आया को आवाज़ देकर कॉफी लाने को कहा। बातचीत का तारतम्य बदला। दूसरी बातें होने लगी।

२६

दूसरे दिन दोपहर मे अमरनाथ को मोटर लेने आ गई। वह भी तैयार था। दो-एक किताबे और कापियाँ उठाई और आकर बैठ गया। मन प्रसन्न था, इच्छायें मचल उठी थी और वासना बढ़ गई थी। नशा, सीमा के बाहर हो गया था। उसे सड़क और नाली का अन्दाज़ नही रह गया था।

बरामदे में नीलिका ने अमरनाथ का स्वागत किया और उसे अन्दर पढ़ने वाले कमरे मे ले आई। इस समय उसने विशेप प्रकार के वस्त्र धारण कर रखे थे—नितम्बो और जांघों से चिपकी हुई पिंडुलियों तक की पैंट, और कमर से ऊपर एक रेशमी ढीला झुल्ला, जो सामने गले तक बन्द था। अन्दर कचुकी नहीं थी, जिसके कारण उन्नत उरोजो की सुडौलता और कठोरता का पूरा-पूरा आभास मिल रहा था। उसने आया को आवाज़ देकर हीटर लगाने को कहा।

आया कोने वाली मेज पर हीटर लगाकर चली गई। कमरे में सामने की ओर एक बड़ी चौकी थी और उसी से सटी हुई एक घूमने वाली एक छोटी अलमारी, जिसमे पुस्तकें रखी थी। बीच मे एक छोटी मेज और दो कुरसियाँ थी। हीटर वाली मेज के निचले खाने में, पत्र-पत्रिकाओ का

ढेर थी। दीवार पर दो-एक तसवीरें भी टँगी थी, जो कलाकार की कला की प्रशंसा मे उन्मुख थीं। मेज़पर दोनों आमने-सामने वैठ गये। नीलिका वोली, "अगर आप कोट निकालकर वैठें तो ज्यादा आराम रहेगा। हलके वदन में सुस्ती कम आती है।"

अमरनाथ ने कोट उतार दिया, "किताबे निकालिये। क्या पढ़ने का विचार है?"

नीलिका ने पीछे हाथ वढ़ाकर अलमारी से दो-तीन पुस्तके खीच ली, "जो आप पढ़ाये। मुझे तो सभी कुछ पढना है।"

अमरनाथ ने एक नाटक की पुस्तक खोली। कुछ पढने को हुआ किन्तु रुककर कहने लगा, "एक्ज़ामिनेशन हो जाने के वाद फिर तो आपका मेरी तरफ आना हो न सकेगा? शायद मेरा नाम भी भूल जाय तो कोई आश्चर्य नही।" उसके मुँह से वात अटपटी तरह से निकली थी।

"मगर आप यहाँ होगे कहाँ? शायद कानपुर जाने को कह रहे थे। अगर रहें तव तो मेरी तरफ से मंसूरी का प्रोग्राम पक्का रहा। दरे साहव को तो मुश्किल से दस-वारह दिनों की छुट्टी मिलती हैं। वह वाद में आजायेंगें। आपका साथ होने से आई विल इन्ज्वाय लाइफ एनी थिंग।"

अमरनाथ खुला, "आपसे सही कहता हूँ, आजकल मेरी यह हालत हो गई है कि आपसे अलग होते ही फिर आपके पास आ जाने की तवीयत होने लगती है। वड़ी मुश्किलों से तो रात काट पाता हूँ।"

वह मुसकराई, "तभी इतने चक्कर इधर लगने लगे थे। यह तो वुरी लत है। मुझे डर लगने लगा है कि कही मेरे गले न पड़ जाये।"

"तव तो मुहव्वत की दुनिया मे चार चाँद लग जायेंगे नीलिका जी। मेरी अभिलाषा पूरी हो जायेगी।" उसने अनायास नीलिका के हाथ पर अपना हाथ रख दिया।

"लेकिन मेरी मुहव्वत तो सिर्फ दरे साहव तक ही सीमित है न। मैं किसी और से मुहव्वत नही कर सकती और यह भी तय है कि उन जैसी किसी से मुहव्वत पा भी नही सकती। यह वात दूसरी है कि मेरी

लाइकिंग और लोगो के लिये हो जाय। जैसे आप ही को मैं बहुत ज्यादा पसन्द करती हूँ और इसे दरे साहब भी अच्छी तरह जानते है।"

"और मेरी मुहब्बत अगर आप तक ही सीमित हो गई तब ?"

"मैं जानती हूँ, वह नही हो सकेगी।"

"क्यो ?"

"यह किसी और दिन के लिये रखिये, जब दरे साहब भी हो। इस पर दो-तीन घटे से कम बहस नही चलेगी।" उसने हाथ हटाया, "आप का हाथ बहुत ठडा है। अंडे-बडे खाया कीजिये। वेजिटेरियन मेरे जैसे लोगो को होना चाहिए। मेरा हाथ कितना गरम है ? इसी तरह की गर्मी पूरी बाडी मे है।"

अमरनाथ ने पुस्तक के पन्ने उलटे और पढ़ना आरम्भ कर दिया।

चार बजे पढाई बन्द हुई। अमरनाथ चलने को हुआ। नीलिका ने अगड़ाई ली और कुरसी से उठकर चौकी पर लेट गई, "उफ, आप तो जान ले लेगे, खूब जुटते है। आइये, थोड़ी देर आप भी आराम कर लीजिये। दरे साहब आते ही होगे। चाय पीकर जाइयेगा।" उसने तकिया खिसका दिया।

मृगतृष्णा बनकर नीलिका, कभी अमरनाथ को आगे दौड़ा रही थी तो कभी पीछे। अमरनाथ उठा और बगल मे लेट गया। वह नाही नहीं कर सका। कैसे कर पाता ? नीलिका की मुद्रा ही ऐसी थी। अकस्मात अमरनाथ ने करवट ली और नीलिका को आलिंगन मे कस लिया। नीलिका का मुंह ऊपर उठा और हाथ अमरनाथ की पीठ से जकड़ गये। अमरनाथ ने गुलाब की पखडियो जैसे नीलिका के अधरो को, अपने अधरो मे दबा लिया। कुछ क्षणों बाद नीलिका ने मुंह हटाने का प्रयत्न किया किन्तु हाथ ज्यो के त्यो जकड़े रहे। अमरनाथ उलट पड़ा और पुनः उसके होंठों का रसपान करने के लिये बल का प्रयोग करने लगा।

नीलिका के हाथ ढीले पड़े और वह अमरनाथ को झटका देती हुई बैठ गई, "नॉटी ब्वाय," वह मुसकराई और खडी हो गई। "बाहर चलो।"

उसने आया को आवाज लगाई।

दोनो बाहर बरामदे मे आकर बैठे ही थे कि दरे अपने आफिस से आ गया।

× ×

दूसरे दिन उसी समय पर मोटर आई और अमरनाथ को ले गई। उसी कमरे मे दोनो मेज पर आमने-सामने बैठ गये और किताबें खुल गई। अमरनाथ ने नीलिका की हथेली को दबाया। नीलिका ने खीच लिया, "पढाई शुरू कीजिये।" वह पुस्तक खोलने लगी।

अमरनाथ मुसंकराकर बोला, "मैं कोई अपराध तो नही कर रहा हूं।"

"क्यो, इस से बडा अपराध और क्या हो भी सकता है? किसी कि बीवी के साथ आपकी ये हरकतें कितनी वैसी है आप जानते नहीं?"

अमरनाथ सन्न रह गया। जैसे किसी ने सैकडों जूते लगा दिये हो। उत्तर देना कठिन पड गया किन्तु आपनी झेंप मिटाने के लिए उसे कुछ न कुछ कहना ही था और साथ ही गलत को सही भी सिद्ध करना था। नीलिका के रूप ने उसे कहीं का नहीं रखा था। वह बोला, "ये हरकतें तो तब वैसी होती जब उनमे वासना होती। लेकिन जहाँ हृदय का सम्बन्ध है वहाँ ऐसी भावना कहाँ? यह तो साफ हे कि आपको मेरे लिये लाइकिंग है और यह भी साफ है कि उस लाइकिंग मे वासना नहीं है। और जब वासना नही है तो मैं चाहकर भी अपनी वासना से क्या लाभ उठा सकूंगा?"

"उठा न सकें मगर हरकतों का प्रदर्शन तो कर सकते हैं, जैसा आप ने कल किया था।" नारि स्वभाव सत्य कवि कहहिं, अवगुण आठ सदा डर रहहिं। दोष अपना और मढ दिया अमरनाथ के सिर पर।

अमरनाथ मुसकराया, "नीलिका जी, मसल मशहूर है कि खरबूजे को देखकर खरबूजा रग बदलता है। आर्टिस्ट के सम्पर्क में आकर आप उसकी कमजोरियों से अपने को कैसे अलग रख सकती है? कुछ न कुछ तो असर आयेगा ही और आ भी गया है।"

"वह तो आपकी जवरदस्ती है। मेरी इन्सानियत का आप ने नाजायज फायदा उठाया है।"

"तो फिर कुछ और उठा लेने दीजिये। कम-से-कम यह तो कह सकूँ कि पूरा नाजायज फायदा उठाया।" उसने पुनः नीलिका का हाथ अपने हाथों मे ले लिया।

नीलिका ने धीरे से हाथ खीच लिया, "प्लीज ! पढ़ाई शुरू कीजिये। आजका टाइम वड़ा वेस्ट गया।"

"नीलिका जी।" अमरनाथ ने जैसे प्रार्थना की हो।

नीलिका ने सिर उठाया, "यू टीज मी टू मच।" उसने अपनी हथेली उसकी हथेली पर रख दी, "वस, इससे आगे नही। किताव खोलो।"

पौन् घटे तक पढ़ाई हुई पर जैसी हुई उसे ईश्वर जानता था या पढ़ने वाले। नीलिका की हथेली को छोड़ते हुए अमरनाथ ने कोई दूसरी हरकत की। नीलिका पीछे हट गई, "इट इज वैड मिस्टर अमरनाथ। अगर आप कायदे से नही वैठेंगे तो ··।"

अमरनाथ को कायदे से वैठना पड़ा।

दरे के आने पर चाय पी गई तदुपरान्त अमरनाथ ने चलने की आज्ञा माँगी। पति-पत्नी ने वैठने का आग्रह किया। अमरनाथ क्षमा-याचना करता हुआ उठ पड़ा।

जव मोटर वीमानगर के पास से मुड़ने को हुई तो अमरनाथ ने ड्राइवर को रोकने के लिए कहा और उतर पड़ा। इधर कई दिनों से वह प्रतिभा से नही मिल सका था। प्रतिभा घर पर ही थी। उसके भाई और भाभी किसी दावत मे गये थे। प्रतिभा ने अमरनाथ को देखते ही कहा, "किधर से सवारी आ रही है ? नीलिका जी के यहाँ से या घर की तरफ से ?"

"तुम्हारा अनुमान कहाँ का है ?"

मेरा तो नीलिका जी का है। आजकल चींटे वहीं लग रहे हैं न।"

"मगर गुड़ तो यहाँ भी है।"

"शक्कर के सामने गुड़ को कौन पूछता है ? शक्कर, शक्कर है और गुड़, गुड़ ।" वह मुसकराई ।

अमरनाथ भी हँसने लगा, "सच पूछो प्रतिभा तो गुड़ ही स्वास्थ्य-वर्द्धक है । शक्कर में यह गुण नही मिल सकेगा ।"

"बाते चिकनी चुपड़ी आपको खूब आती है । प्रशसा हो रही है गुड़ की ओर चक्कर लगाये जाते है शक्कर के लिए जब कि यह मालूम है कि वह दूसरे व्यापारी के साथ बिक चुकी है ।"

अमरनाथ मुसकराया, "आज यही बताने आया हूँ कि उस शक्कर मे अब आधा साझा मेरा भी हो गया है ।" उसने किले वाली घटना और उसके बाद वाली सारी घटनाये सविस्तार बतला दी ।

प्रतिभा अवाक रह गई । बड़ा रहस्यात्मक चरित्र है नीलिका का । उसके मुँह से निकला ।

"बहुत अधिक । मैं स्वय अभी तक उसे पूरा नही समझ सका हूँ । जहाँ पति से इतना प्रगाढ प्रेम है, वही मेरे लिये इस सीमा तक लाइकिंग भी है । जब कि मै अच्छी तरह समझता हूँ कि उसका इस तरह का प्रोत्साहन स्वेच्छा से नही विवशता में है ।"

"क्यो, विवशता मे क्यों है ?"

"इसीलिये कि वह मुझे बहुत पसन्द करती है । ऐसा मैंने अभी तक अनुमान लगाया है । अन्यथा और क्या कारण हो सकता है ?"

"कारण उसके सेक्स की कमजोरी है, लाइकिंग नही । एक मैरिड वमन, जो हर तरह से सुखी और सम्पन्न हो किसी दूसरे व्यक्ति के साथ इस प्रकार के सम्बन्धो को क्यों बढ़ायेगी ? क्या लाइकिंग का सही इजहार बिना ऐसे रिलेशन के नही हो सकता ? नीलिका फ्लर्ट औरत है । वह पति के निश्च्छल हृदय का अनुचित लाभ उठा रही है ।"

"ना । तुम्हारा अनुमान गलत है ।"

तो फिर आपने उसकी भावनाओ से अनुचित लाभ उठाकर उसे गलत रास्ते पर चलने के लिए मजबूर किया है ।"

"ऐसा तुम्हे विश्वास है ?"

"फिर तीसरी बात क्या हो सकती है ?"

"मैं जो पूछ रहा हूँ पहले उसका उत्तर दो। क्या मैंने अभी तक कोई बात तुमसे छिपाई है ?"

"नही।"

"तब मैं इसे क्यो छिपाऊँगा ?"

"अच्छा मान लिया आपने छिपाया नही है और यह भी मान लिया कि नीलिका का चरित्र भी अच्छा है, आप यह बताइये कि क्या आपका ये हरकते निन्दनीय नही हैं ?"

अमरनाथ मुसकराया, "क्या निन्दनीय है और क्या नही है इसकी न तो अभी तक सीमा निर्धारित हो सकी है और न सम्भवत. कभी हो सकेगी। शराब पीना निन्दनीय है, लेकिन ससार मे थोड़े लोग मिलेंगे, जो शराब न पीते हो। मैं जिस स्थिति में जो कुछ कर रहा हूँ उसमे हर इन्सान यही करता अपवादो को छोडकर। रही बात तुम्हारी मनोभावनाओ की, वे भी न्यायसगत और मान्य है। तुम्हारी जगह कोई भी लड़की होती, उसे मेरी ये हरकते बुरी लगती। तुमने अपने प्यार का मेरे साथ जिस तरह सौदा किया है, वह अनोखा और अनुपम है। तुम्हे बुरा लगना चाहिये और साथ ही साथ कहने का अधिकार भी होना चाहिये, पर मैं तुमसे हमेशा कहता आया हूँ कि मेरे हृदय मे जैसा तुमने स्थान बना लिया है वैसा अब कोई दूसरा नही बना सकता। तुम्हारा प्रेम ।"

"किसी को भुलावे में रखने के लिये इससे सुन्दर दूसरा वाक्य भी नही हो सकता। आप तर्क से चाहे जो सिद्ध करले लेकिन यह चीज गलत है।" प्रतिभा का चेहरा कुछ उतर आया था।

अमरनाथ समझ गया। उसने अपनी बात को घुमाकर उसके कथन की पुष्टि की और बड़े साफ शब्दो मे अपनी गलती को स्वीकार किया। उसने उस समय ऐसा ही करना उचित समझा था। भावुकता के आगे तर्क की बातो का न तो कोई असर होता है, और न उससे कोई लाभ

निकल पाता है। कुछ मूड वदलता देखकर अमरनाथ ने विषयान्तर किया और प्रतिमा के जव तक भाई-भाभी नही आ गये, उसे इधर-उधर के चुटकुले सुनाकर हँसाता रहा। उसे विश्वास था कि दूसरे दिन, वह धीरे से उसे समझाकर अपनी वातो को मनवा लेगा।

३०

राजेश का सौदा आठ वीघे पर तय हो गया। राजेश ने एक कागज लिख दिया। एक दिन और रुककर तीसरे दिन वह आगरे आ गया है। साथ मे सभापति का एक आदमी भी था जिसे स्थान-स्थिति और सम्बंधित व्यक्ति को दिखलाना था। राजेश ने सब-कुछ दिखा दिया। चारु को पहचनवा भी दिया। वह व्यक्ति एक सप्ताह वाद आने को कह कर लौट गया। विचित्र है मनुष्य का स्वभाव और उसकी मनोवृत्तियाँ। यदि जन्म देने वाले सच्चिदानन्द को ऐसा अनुमान होता तो सम्भवतः वह अपनी सृष्टि मे, मनुष्य नामक जीव की संरचना न करते। उसकी सृष्टि के लिये इतने घातक सिद्ध होगे, उसने कभी कल्पना भी न की होगी।

राजेश का एक-एक दिन एक-एक वर्ष के समान वीतने लगा। कालेज जाता पर किसी से वोलता नही। चुपचाप दरजे मे वैठता और चुपचाप छुट्टी होंने पर घर चला आता। लड़के कुछ कहते तो हाँ-ना में उत्तर देकर वात को समाप्त कर देता। अमरनाथ से वह अवश्य कतराता रहता था। अमरनाथ भी स्वयं उसे देखकर इधर-उधर हो जाता अथवा न देखने का भाव प्रदर्शित करता हुआ दूसरी ओर देखने लग जाता। कारण, उसने पहले दो-एक वार इस सम्वन्ध मे जो चर्चा की थी और जिस तरह का राजेश से उत्तर मिला था उसके मनोभाव भलीभाँति

विदित हो गये थे। घर पर भी राजेश अपने कमरे में ही रहता। सब जगह आना-जाना बन्द हो गया था। नानी, लडके के इस परिवर्तन से चिन्तित थी—और बार-बार वास्तविकता जानने का प्रयास कर रही थी। राजेश कुछ नही कहकर टाल देता और कभी-कभी खिजला भी उठता। नानी चुप हो जाती थी किन्तु उसका प्रयास बन्द न होता था।

राजेश कमरे मे बैठा सोचा करता—चारू को अब अपने किये का फल मिल जायेगा। किसी के जीवन के साथ खिलवाड़ करने का नतीजा क्या होता है, अच्छी तरह मालूम हो जायेगा। आगरे की लड़कियो को भी एक अच्छी सीख मिल जायेगी—आँखें खुल जायेगी। लडकों को बुद्धू बनाकर अपना उल्लू सीधा करना भूल जायेंगी। उसने यह कार्य उत्तम किया है। अगर चारू की जान उसी समय न निकल कर, दो-चार दिनो बाद अस्पताल मे निकली, तो और भी बढ़िया होगा। खूब हगामा रहेगा। न जानने वाले भी जान जायेगे और उसके ऊपर थूकेंगे। उसकी ··· अचानक विचारों की शृंखला टूटी मगर उसके जीवित रहने पर पुलिस उससे बयान लेगी और निश्चित रूप से उसी का नाम बतायेगी। फिर वह पकड़ा जायेगा। उस पर मुकद्दमा चलेगा और उसे फाँसी हो जायेगी। राजेश के शरीर के रोंएं खड़े हो गये। हृदय दहल उठा। परन्तु उसने तत्काल अपने को धिक्कारा और ऐसी फाँसी को बहादुरो की सजा दी। उसके अतिरिक्त यह भी तो सम्भव था कि मुकद्दमा उसी के मुआफिक बैठे। सच्चाई पर चलने वालों का ईश्वर अवश्य सहायक होता है ···।

दसवे दिन वही व्यक्ति अपने अन्य दो साथियों सहित आ पहुँचा। राजेश से भेंट की और तीसरे दिन काम निबटा देने का निर्णय सुनाया। राजेश को प्रसन्नता हुई। उसने योजना की जानकारी की। बदमाशों ने बताया, "सवेरे कालेज आते समय। उस टैम मे हम लोग को निकल भागने मे भी आसानी होगी। अगर आपकी तबीयत हो तो आप भी वहाँ रह सकते है। पुलिस से सब तय हो गया है।"

"मैं बिल्कुल रहूँगा, लेकिन उस्ताद। निशाना खाली न जाये, वरना

सब खेल बिगड़ जायेगा।

"आप बेफिकर रहे। ऐसा ही होगा।"

"मैंने इसलिये," राजेश ने पुन. जोर दिया, "कहा है कि उसका काम वही तमाम हो जाना चाहिये। ऐसा न हो कि...।"

"बिल्कुल चिन्ता न कीजिये राजेश बाबू। यह कोई पहला काम नहीं है। वह घर नही पहुँच सकेगी। वही फडफड़ा कर टे बोल जायेगी। क्या समझे।"

राजेश को और कुछ नही कहना था। तीनो चले गये।

तीसरे दिन राजेश समय से पौन घटे पूर्व कालेज पहुँच गया। वहाँ उसे आदमी लगे हुये मिले दिखलाई पड़े। वह चुपचाप अन्दर चला गया। थोडी देर बाद फिर बाहर आया और फाटक के पास खडा हो गया। यद्यपि ऊपर से उसकी वैसी ही दृढता दिख रही थी किन्तु अन्तर मे बेचैनी थी। कुछ डर-सा लग रहा था। धीरे-धीरे लड़के कालेज मे आना शुरु हुये। राजेश का हाल-दिल कुछ और बढ गया। फिर दूर चारु आती दिखराई पडी। वह कालेज के अन्दर मुड़ गया किन्तु दस कदम जाकर पुनः लौट पड़ा। उसने देखा उसके आदमी सतर्क हो गये थे। चारु समीप आती गई। वह पैदल थी। उन तीनों मे एक आगे बढा, झटके से पिस्तौल निकाली और दाग दी। लडखड़ाती चारु गिर पड़ी। सड़क पर खून बह चला। राजेश के मुँह से 'आह' निकल पड़ी।

हत्यारे इधर गये, उधर गये और आकाश मे चमकी हुई बिजली की भाँति गायब हो गये। हल्ला मच गया। भीड़ इकट्ठी हो गई। राजेश के बदन मे कंपकंपी होने लगी। शक्ल की रंगत बदल गई। उसने अपने को बहुत संभालने का प्रयत्न किया किन्तु सारी दृढ़ता जाती रही और ऐसा अनुभव होने लगा कि लड़के उसकी ओर कुछ सकेत कर रहे है—सम्भवत: उसी को अपराधी बता रहे हैं। वह घबड़ा उठा और पैर अविलम्ब उसे उड़ा ले चले। आगे उसने एक रिक्शे वाले को रोका और बहुत तेजी से चलने को कहा।

अपने कमरे में राजेश आकर पड़ रहा। नानी ने लौटने का कारण पूछा। उसने पेट के दर्द का बहाना बता दिया और आँखें बन्द कर ली। नानी ने सिर पर हाथ फेरा, "पानी गरम कर लाऊँ ?"

"नही। अभी थोड़ी देर मे ठीक हो जायेगा। तुम जाओ। मुझे सोने दो।" उसने करवट ले ली। नानी चली गई।

पुनः राजेश की आँखो के सामने दृश्य घूमने लगे—गोली का चलाना चारू का चीखना तथा लड़खड़ा कर सडक पर गिरना, खून से सड़क का पटना और उसका तड़पना आदि-आदि। उसका हृदय भर आया और नेत्र-कोर सजल हो आये। पश्चाताप का ठिकाना न रहा। उसने अपने को धिक्कारा, बार-बार धिक्कारा। वह अपने को पातकी, पतित, हत्यारा, नरधम और ना-मालूम क्या-क्या कहता हुआ कोसने लगा।

विचारों मे परिवर्तन आया। परिणाम की ओर ध्यान गया। अपने जीवन-मरण की समस्या आई। मन की व्यथा दूसरी व्यथा में बदल गई। अपनी जान की चिन्ता संसार की समस्त चिन्ताओ से बड़ी होती है। राजेश दोपहर तक इसके विभिन्न पहलुओं पर बड़ी गम्भीरता के साथ सोचता रहा और अन्त मे मामा से मिलने का निश्चय किया। वह उठ बैठा। घड़ी मे समय देखा। दो बज रहा था। अभी तीन बजे वाली गाड़ी मिल सकती थी। उसने जल्दी-जल्दी एटैची मे कपड़े रखे, हाथ मुँह धोया, कपडे बदले और नानी से कहा, "मैं मामा के यहाँ जा रहा हूँ।"

"अभी।" नानी के अचरज का ठिकाना न था।

"हाँ, तीन वाली गाड़ी से।

"क्यों ?"

"ऐसी ही कुछ खास बात है।"

"क्या ? अभी तो तुम्हारे पेट मे दर्द हो रहा था और अब तुम मामा के यहाँ जा रहे हो। मैं कुछ समझ नहीं पा रही हूँ। इधर कुछ दिनो से तुम्हें हो क्या गया है ? असली बात बताते क्यों नही ?"

"असली कोई बात हो तब तो बताऊँ।" वह कमरे में चला गया

और अटैची लेकर बाहर निकला, "हर बात के लिये घबड़ाने क्यों लगती हो ? अब जा रहा हूँ। टाइम बहुत थोड़ा रह गया है।"

"आओगे कब तक ?"

वहाँ पहुँचने पर तुम्हे चिट्‌टी लिखूंगा।" वह लम्बे-लम्बे डग रखता निकल गया। नानी गुमसुम खड़ी देखती रही।

उधर चारू झटपट अस्पताल पहुँचाई गई। घर पर भी सूचना दे दी गई। पूरा परिवार रोता, कलपता अस्पताल पहुँचा। अस्पताल, विद्यार्थियों और नागरिको से भर गया था। एक अजीब घटना थी। जो सुनता वही अस्पताल को दौड़ पडता। अलग-अलग व्यक्ति अलग-अलग अटकल-बाजियाँ लगा रहे थे। कोई कुछ कहता तो कोई कुछ कहता। पूरे नगर मे सनसनी फैल गई।

दूसरे दिन समाचार-पत्रो मे प्रकाशित हुआ, "दिन दहाड़े एम० ए० की छात्रा पर गोली चलाई गई। छात्रा की दशा शोचनीय। वजीरपुरा निवासी हत्यारा राजेश जो स्वय एम०ए० का छात्र था—फरार हो गया। पुलिस खोज मे है।...।" चारू के चाचा ने रिपोर्ट में राजेश का नाम दे दिया था। चारू को अभी तक होश नही आया था। गोली सामने से न लगकर बगल से लगी थी, जिसके कारण अभी वह जीवित थी, किन्तु उसकी जिन्दगी बच सकेगी, इस पर डाक्टरो को सन्देह था। उसकी रीढ मे फँसे हुए छर्रे, आपरेशन से नहीं निकाले जा सकते थे। उन्हें निकालने पर उसकी मृत्यु अवश्यम्भावी थी और न निकालने पर कमर के नीचे का भाग, सुन्न हो जाने का भय था। न वह चल सकती थी और न बैठ सकती थी।

× × ×

लगभग एक सप्ताह बाद एक दिन रात के आठ बजे एक व्यक्ति अमरनाथ से मिलने आया। अगान्तुक ने बैठते ही अपना परिचय दिया, "मैं राजेश का मामा हूँ और सी० आई० डी०...।"

"मैं समझ गया।" वह हाथ जोडता हुआ बीच में बोल पड़ा, "राजेश

अच्छी तरह है ? कैसे आना हुआ ?"

"मैं कल उसे हाजिर करने वाला हूँ। चाहता था कि जमानत कल ही हो जाती। पुलिस से बात हो चुकी है। जहाँ तक मुमकिन हो सकेगा, उधर से पूरी मदद रहेगी, फिर भी अगर जज साहब का थोड़ा इशारा ए०डी०एम० (सीटी मजिस्ट्रेड) को हो जाता तो शक की गुंजाइश कतई न रह जाती।"

"आप का मतलब जमानत की मंजूरी से है न ?"

"जी हाँ।"

"बिल्कुल हो जायेगा। मैं कह दूंगा। आप कल उसे हाजिर कराइये। लेकिन राजेश ने यह सब···।"

"उसने कुछ भी नही किया है अमरनाथ बाबू। करने वाले दूसरे थे। चूंकि नामजद रिपोर्ट है, इसलिये उसे मुलजिम बनना पड़ा है। फिर उसने आरम्भ से अन्त तक सारी कथा कह सुनाई।

'इस वक्त वह घर पर है या नही···।" अमरनाथ ने पूछा।

"बाहर रिक्शे पर बैठा है। आपके सामने आने मे शरमा रहा है।"

'बाहर सड़क पर।" वह खड़ा हो गया, "चलिये।"

वास्तव में राजेश सिर उठाकर अमरनाथ से बातें करने में असमर्थ था। रिक्शेवाले को पैसे दे दिये गये और तीनो पैदल चलते गये। राजेश का मामा जानबूझ कर थोड़ा आगे चलने लगा। अमरनाथ, राजेश को समझा रहा था और गत को विसारकर आगे के लिये सचेत होने की शिक्षा दे रहा था। उससे बहुत बड़ा अपराध हो गया था लेकिन जो हो गया था सो तो हो ही गया था। अब पुनः कोई और बात न हो, उसकी चेतावनी दे रहा था।

राजेश ने चारू के सम्बन्ध में जानकारी की, "सुना है उसकी रीढ़ की हड्डी मे छर्रे फँस गये हैं ?"

"हाँ। बहुत बुरा हो गया है। डाक्टरों का कहना है कि उन छर्रों को निकालने पर उसकी डेथ हो सकती है और न निकालने पर कमर से

नीचे का हिस्सा पूर्णतः सुन्न हो जायेगा। न वह बैठ सकेगी और न चल सकेगी। उसकी जिन्दगी तो मौत से भी बद-तर हो गई है। उसका तो मर जाना ही अच्छा है मगर··।"

"क्या उसके घर वाले आपरेशन करवाना नही चाहते हैं?"

"चाहते है लेकिन डाक्टर अभी कुछ देख रहे हैं। वैसे आपरेशन तो करेंगे ही। कल क्लास की कुछ लड़कियाँ देखने गई थी। उसे बड़ी तकलीफ हैं—बेहद दर्द। वह सीधी नही लेट सकती है।"

राजेश चुप हो रहा। मन की व्यथा उभर आई थी।

अमरनाथ ठिठका और राजेश को पुनः आने को कहता हुआ लौट पड़ा।

उस रात राजेश सो नही सका था।

३१

राजेश की जमानत मंजूर हो गई थी और दो-एक तारीखे भी पड़ चुकी थी किन्तु अभी मुकद्दमा का श्रीगनेश नही हुआ था। राजेश के मामा ने दिन-रात एक कर रखा था। हर तरफ से और हर तरह की सिफारिशे, सम्बन्धित अधिकारियो के पास पहुँचा रहा था और स्वयं भी जहाँ जाना होता था, जा रहा था। नानी का रोना-धोना अलग था। आँखें सूज आई थी और खाना-पीना हराम हो गया था। जहाँ बैठती, जिससे मिलती, बस वही एक बात। रात-दिन वही चिन्ता। घर और बाहर सभी को संदेह होने लगा था कि अगर उसकी यही हालत रही तो उससे भी हाथ धोना पड़ेगा।

उधर राजेश अपनी व्यथाओ में अलग घुल रहा था। समय के

साथ-साथ ग्लानि बढती जा रही थी। उसे अपने से घृणा हो उठी थी। वह अपनी ही दृष्टि मे महा कृतघ्न और नारकीय बन बैठा था। उसका बाहर निकलना कठिन हो गया था। वह अब अपने को समाज मे रहने का तथा सामाजिक प्राणी कहलाने का हकदार नही समझता था। वह एक हत्यारा था—एक लड़की का हत्यारा था। उसने एक साधारण-सी बात के पीछे, किसी की जिन्दगी के साथ ऐसा खिलवाड़ किया था, जिसकी कही भी माफी नही थी। क्या वह अपने इस अपराध के लिए ईश्वर से भी क्षमा-दान पा सकता था? कदापि नही पा सकता था। संसार की कचहरी मे अन्याय हो सकता था, सिफारिशों पर उसे बरी किया जा सकता था, किन्तु मालिक की कचहरी मे, ऐसा नहीं हो सकता था। वहाँ सिफारिश नही चल सकती थी। उसे निश्चित रूप से दंडित होना पडेगा—रौरव नरक की यातनायें सहनी पड़ेगी।

कभी-कभी राजेश को यह सोचकर बड़ा सतोष मिलता कि उसकी फाँसी की सजा हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट से भी बहाल कर दी गई है। कारण, वह भली-भाति जानता था कि उसका मामा, उसकी रिहाई के लिए एडी-चोटी का पसीना एक कर देगा। किन्तु उसकी फाँसी ही उसकी आत्मा को संतोष दे सकेगी। उसे अपने किये का सही दड मिलना ही चाहिए। तभी उसकी आत्मा सुख और सतोष का अनुभव कर सकेगी, साथ ही चारू को, उसके मामा-पिता को, और सम्पूर्ण समाज को भी संतोष हो सकेगा। एक विशेष प्रकार की शान्ति मिल सकेगी। कभी-कभी राजेश के ध्यान मे आता कि अगर फांसी न होकर आजन्म कारा-वास हो गया तब? फिर तो उसे दस-बारह साल के बाद पुनः बाहर आना पड़ेगा और उसी प्रकार नक्कू बनकर जीवन के शेष दिन व्यतीत करने होंगे जो मृत्यु से भी अधिक दुःख-दाई और अपमानजनक साबित होंगे। दीन और दुनियाँ दोनों से हाथ धोना पड़ेगा। लेकिन फासी होगी क्यो नही? वह स्वय अपने मुँह से अपना अपराध स्वीकार कर लेगा और फाँसी की माँग करेगा। जज को विवश होकर फाँसी की सजा देनी

ही होगी।

राजेश को कुछ शान्ति मिली किन्तु अनायास बुद्धि ने एक दूसरी समस्या उठा दी। अगर किसी कारणावश वह अपने इरादे से डगमगा गया और कोर्ट के सामने अपना अधिकार स्वीकार न कर सका और उसकी रिहाई हो गई या कारावास हो गया ? वह चक्कर मे पड़ गया। नानी का ममत्व, मामा का स्नेह और वकीलों की चतुराई में आ जाना सम्भव है। वह उस समय अपने फैसले से डगमगा सकता था। फिर ''। राजेश सोचने लगा—कोई नया रास्ता ढूंढने लगा। एक दम नया जिसमे किसी तरह की कोई गुंजाइश न हो। उसे अब निश्चित रूप से प्रायश्चित करना था, अपने किये का फल भोगना था तथा चारू से क्षमा याचना करना था। एक और विचार आया—क्यो न अस्पताल चलकर चारू से क्षमा माग लिया जाय ? सम्भव है वह मेरी वास्तविकता को समझ कर क्षमा कर दे। मैंने जो कुछ किया है, अपने आवेश के वशीभूत होकर ही तो किया है ? क्या मेरा अन्तर्मन चारू से बदला लेने के पक्ष में था। कभी नही था। मेरी सच्चाई को चारू अवश्य अनुभव करेगी और मुझे माफ कर देगी। परन्तु'''अस्पताल मे वह चारू से मिल कैसे सकेगा ! उसके माता-पिता या घर वाले उसे क्यो मिलने देंगे ? उनकी लड़की के हत्यारे को वे लोग फूटी आँख देखना भी पसन्द नही करेंगे। उसका किसी भी दशा मे चारू से मिलना सम्भव नही हो सकेगा।

पुन: प्रश्न उठा अन्तिम मार्ग का। अचानक उसका मन कह उठा—जहर खाकर सो रहना कैसा रहेगा ? न कोई परेशानी होगी और न वाद के लिए किसी तरह की कोई गुंजाइश रह पायेगी। सारी समस्यायें अपने आप हल हो जायेंगी। उसकी मुराद के साथ-साथ चारू के माता-पिता तथा दूसरे लोगों की भी मुराद पूरी हो जायेगी। न किसी को कुछ कहने का अवसर मिल सकेगा और न सुनने का। समाचारपत्रो में खबर छपेगी ही, इसलिए चारू को भी जानकारी हो जायेगी और तब शायद उसे जीवित रहने या मरने मे, एक विशेष प्रकार के संतोष का अनुभव

होगा। वह मन ही मन उसके अपराध को भूलकर क्षमा कर देगी। राजेश को यह उपाय अत्यधिक पसन्द आया। वह कई दिनों तक इस पर सोचता-विचारता रहा—तरीको पर विचार करता रहा।

कई दिन और बीत गये राजेश को सोचते हुए। तारीख वाला दिन समीप आ गया। राजेश का अन्र्द्वन्द्व बढ गया। उसने एक दिन नहाने-धोने के उपरान्त दो पत्र लिखे। एक अपने तकिये के नीचे रखा और दूसरा डाक-खाने में डाल आया। दोपहर मे खाना खाया, कपड़े बदले और एक बजे के लगभग घर से निकला। कुछ दूर सड़क पर जाकर पुनः लौट आया। नानी बरामदे मे बैठी थी, पूछा, "क्यों लौट आए? कही घूमने जा रहे हो क्या?"

राजेश क्षण-दो क्षण नानी को देखता रहा, तत्पश्चात कोई चीज भूल जाने का बहाना बताता हुआ शीघ्रता से कमरे मे गया और पुनः उलटे पाँव बाहर निकल गया। गिरजा-घर के समीप रिक्शा किया और राजामडी स्टेशन चल पड़ा।

दिल्ली से आने वाले तूफान का समय हो चला था। प्लेटफार्म पर राजेश इधर से उधर और उधर से इधर टहलने लगा था। थोड़ी देर बाद स्टेशन का कोई कर्मचारी घटा बजाता निकल गया। यात्री सतर्क हो गये। कुली अपने-अपने सामान पर आ डटे। राजेश अपनी धुन मे उसी प्रकार टहलता रहा। चन्द मिन्टों बाद गाड़ी आती दिखलाई पडी। राजेश खड़ा हो गया। पुन. पैर उठे। दो एक सज्जनो के मुँह से निकला, "पीछे हो जाइये साहब। गाड़ी आ रही है।"

राजेश ने सुनी-अनसुनी कर दी। गाड़ी प्लेटफार्म पर आई। राजेश ने एक बार दाये-बांये देखा और आते हुये इंजन के सामने झट से कूद पड़ा। देखने वाले चिल्ला उठे। बहुतों ने आंखे बद कर ली। राजेश के धड अलग-अलग हो गये।

दूसरे दिन के समाचारपत्रो ने बहुतों को दातों तले उँगुलियाँ दबाने को विवश कर दिया, तो बहुतो को रुला भी दिया। पूरे शहर में,

सड़को, गलियो मे, दुकानो-बाजारों मे, और मकानो-बगलो मे ही चर्चा होती रही। बुढिया नानी तो कल रात से ही खाट पर गिर पडी थी। उन्हे दो घटे बाद ही सूचना मिल गई थी।

संध्या की डाक मे अमरनाथ को एक पत्र मिला। वह देख कर धक से रह गया। वह राजेश का था। लिफाफे मे दो पत्र थे। एक उसके नाम और दूसरा चारू के नाम। उसके पत्र के अन्त मे लिखा था, "आखिर मैं दोबारा आपसे अपनी सारी त्रुटियो के लिये क्षमा मागता हुआ बिदा लेता हूँ। चारू का पत्र यदि चारू तक पहुँच गया तो आत्मा को सतोष मिलेगा। विश्वास है मेरी यह अभिलाषा आप अवश्य पूरी कर देगे।" आँखो से अमरनाथ के आँसू बह निकले।

दूसरे दिन कालेज से छुट्टी करने पर राजेश का पत्र लेकर नीलिका अस्पताल पहुँची। अमरनाथ बाहर मोटर मे बैठा रहा। पाँच-सात मिनट तक स्वास्थ्य सम्बन्धी चारू से बाते करने के उपरान्त नीलिका ने पूछा, "राजेश जी की स्यूसाइड वाली खबर तो आपको मालूम हुई होगी?"

"राजेश जी की स्यूसाइड?" चारू कराहना भूल गई और विस्फारित नेत्रो से नीलिका को देखने लगी।

"आपको बताया नही गया? कल दोपहर मे राजेश जी ने राजा-मडी स्टेशन पर, ट्रेन के नीचे दबकर स्यूसाइड कर लिया।"

"कल दोपहर मे। क्यो!" चारू की आवाज रुध गई।

नीलिका ने अपने पर्स से पत्र निकाल कर उसके सामने रख दिया, "स्यूसाइड के पहले अमरनाथ जी को लिखे गये लेटर मे यह भी लेटर था।"

चारू पत्र पढने लगी। लिखा था—

प्रिय चारू,

मैं इस लायक नही हूँ कि तुम्हे कुछ लिख सकूँ या तुम्हे अपना मुँह दिखा सकूँ। मैं इस लायक भी नही हूँ कि अपने अपराध के लिये तुमसे

क्षमा याचना रखूं या प्रायश्चित रूप कोई और कार्य करूं, क्योंकि मैंने ऐसा अपराध किया है जो न तो क्षमा किया जा सकता है और न उसके लिये कोई प्रायश्चित ही हो सकता है। फिर भी आज जो कुछ भी करने जा रहा हूं, उसका एक मात्र उद्देश्य प्रायश्चित ही है और इसी उम्मीद पर तुम्हे भी पत्र लिख रहा हूँ कि शायद अन्तिम बार तुम क्षमा कर सको। मरने से पहले तुम से एक बार मिलने की बड़ी अभिलाषा थी लेकिन इस डर से कि सम्भवतः मेरी सूरत देखना तुम्हे पसन्द न हो—मैंने अस्पताल में आना उचित नही समझा। अब और कुछ न लिख कर अन्तिम बार प्रार्थना के रूप मे तुमसे एक बात कहना चाहता हूं। अगर तुम मेरे अपराध को क्षमा कर सको तो निश्चित ही मेरा मरना सार्थक हो जायेगा। मेरी आत्मा को वही संतोष मिलेगा जो कभी जीवन मे तुम्हे पाकर मिलता। विश्वास है मेरी प्रार्थना को ठुकराओगी नही।

राजेश

चारू का मुंह तकिये मे धंस गया। उसकी आंखे भर आई थी। नीलिका चुपचाप उठी और वार्ड के बाहर हो गई। दरवाजे पर चारू की माँ मिली। उसने रोकना चाहा। वह पुनः आने को कहती हुई चली गई।

रात मे चारू का कराहना अधिक बढ़ गया। वह एक प्रकार से चिल्लाने लगी थी। डाक्टर को बुलाया गया। सूईयाँ लगी किन्तु दर्द बढ़ता ही गया। वह बिस्तर पर छटपटाने लगी जैसे प्राण निकलना चाह रहा हो किन्तु निकल न पाता हो। पुनः डाक्टर आया। उसने देखा तथा परिवार वालों को संतोष देकर चला गया। शायद अब और कुछ वह कर भी नही सकता था। उसे वास्तविकता का अनुभव हो गया था। सवेरे होने को आया। चारू की तड़पन में शिथिलता आने लगी, साथ ही शरीर भी ठंडा पड़ने लगा। लोग डाक्टर के लिये दौड़े, पर अब इतना समय कहाँ था? चारू ने शरीर का त्याग कर दिया। बात खतम हो गई।

३२

प्रतिभा इधर कुछ दिनो से उलझी हुई नजर आ रही थी। उसका मस्तिष्क स्थिर नही था। उसमे बेचैनी थी—किसी प्रकार की उधेड़-बुन थी। हृदय का संतोष, असंतोष मे परिवर्तित होता जा रहा था, उमगो में शिथिलता आती जा रही थी और आत्म-विश्वास की नीव डगमगा उठी थी। सोते-जागते, पढ़ते-लिखते, एक समस्या के रूप मे कोई वस्तु खटकने लगी थी और बुद्धि पर भार बनती जा रही थी। मन का अन्तर्द्वन्द्व बढ़ गया था और निष्कर्ष निकालने की उत्सुकता प्रबल हो उठी थी।

कभी-कभी ऐसा भी होता, कि वह स्वय पर खिजला उठती। अपनी भावनाओ को तुच्छ और सारहीन बताती तथा भविष्य मे कुछ न सोचने का निर्णय करती। उसने प्रारम्भ से जिस मार्ग का अनुसरण किया था, वही मार्ग उत्तम और सुखदायी था। उसी पर चलकर उसे अपनी मंजिल की उपलब्धि थी—उस मंजिल की जो विरलों को मिलती है। उसे उसी मंजिल को प्राप्त करना था। यही उसके जीवन का ध्येय रहा था और प्रारम्भ से रहा था। उसे अपने उस रास्ते से विचलित नही होना था। उसे अपने को संतुलित रखना था। अगर उसकी लगन मे सच्चाई और ईमानदारी थी, तो कोई कारण नही था कि वह अपनी वाछित वस्तु को प्राप्त न कर सके। यह सोचना कि दूसरा गलत और अपने कर्त्तव्यो के प्रति वफादार नही है, न्यायसंगत नही। प्रत्येक को अपने उचित-अनुचित और स्वय के कर्तव्यो के प्रति जागरूक और निष्ठा-वान होना चाहिए। दूसरे को दोषी सिद्ध करके, न तो कोई स्वय निर्दोष

वन सका है और न उस शान्ति और सुख की उपलब्धि कर सका है, जो वास्तविक और आदर्श का प्रतीक है। उसने प्रेम के जिस मार्ग को अपनाया था, उसी को अपनाये रखने की आवश्यकता थी। प्रेम में त्याग है—स्वय के मिटने का निर्णय। अपने को मिटाकर ही—खाक में मिलाकर ही, उसे हासिल किया जा सकता था।

प्रतिभा को सन्तोष मिला। इतने दिनो की खिन्नता दूर हुई। मन की प्रसन्नता चेहरे पर भी दृष्टिगोचर होने लगी।

किन्तु उसकी इस प्रसन्नता को पुनः खिन्नता मे परिवर्तित होने मे वहुत दिन नही लगे। लगभग वीस दिनों से अमरनाथ का उसके यहाँ आना नही हुआ था। इसलिए नही कि वह वीमार था अथवा कही वाहर गया हुआ था, वरन् इसलिए कि वह नीलिका के सम्मोहन मे अपना और वेगाना भूल गया था। प्रतिभा स्वयं एक दिन दोपहर मे और एक दिन शाम को उसके यहाँ हो आई थी, और दोनो ही दिन उसे निराश होकर लौटना पड़ा था। उसकी वहन से मालूम हुआ था कि वह नीलिका के वंगले पर, कम्वाइंड स्टडी के लिये दोपहर में चला जाता है, और अधिकतर सात-आठ तक आता है। प्रतिभा ने आगे इस सम्वन्ध में कोई जानकारी नही की थी।

पॉच-सात दिन और वीत गये। अमरनाथ नही आया। प्रतिभा ने पुनः एक दिन उसके वंगले जाने को सोचा किन्तु जाते-जाते रुक गई। मस्तिष्क में तर्कों के ववंडर उठ खड़े हुए। वह पुन पहले वाली स्थिति में आ गई। वही उलझन, वही अन्तर्द्वन्द्व और वही व्यथा। फिर पढ़ना-लिखना और सोना-जागना हराम होने लगा। मन कहता—अमरनाथ को समझने मे उसने भूल की है। उसने वड़ा धोखा खाया है। अमरनाथ के विचार दूसरे प्रकार के है। वह रूप का पुजारी है, जो सेक्स-प्रधान है। उसे प्रेम से कोई मतलव नहीं और न ही मतलव है उसके उच्च-आदर्श से। उसने अपने स्वार्थ-सिद्धि हेतु प्रेम की मीठी-मीठी वातों का जाल फैलाया था, किन्तु ईश्वर की कृपा थी कि फन्दे में फँसकर भी

उसने अपने चरित्र को कलंकित होने से बचा लिया था। अमरनाथ का दिल बड़ा काला निकला। उसने अपने कार्यों से सम्पूर्ण साहित्यिक वर्ग पर एक दाग लगा दिया, और नजरों से गिरा दिया। उसने उस श्रद्धा की इतिश्री कर दी थी जो केवल नाम सुनकर हो जाया करती है।

फिर बुद्धि ने दूसरा तर्क उपस्थित किया—सेक्स की भूख क्षुधा-जैसी ही भूख है। इसकी पूर्ति के लिये इन्सान अपने सामर्थ्यानुकूल वे सारे प्रयत्न, चाहे भले हो या बुरे, करता है, जैसे एक क्षुधा पीड़ित व्यक्ति, किया करता है। इस सेक्स के पीछे ही बड़ी-बडी लडाइयां और युद्ध हुए हैं, मुल्क के मुल्क रौंद डाले गये हैं, छोटे-बड़े वंशो के नामोनिशां तक मिटा दिये गये हैं, और आज दिन भी इसकी प्राप्ति के लिए, आये दिन समाचारपत्रो मे, नई और विचित्र घटनाये पढ़ने मे आ जाया करती है। स्वयं प्रकृति, सेक्स की प्रधानता को स्वीकार करती है और उसके अस्तित्व को अपने अस्तित्व का एक अग मानती है। इस कारण सेक्स के मापदण्ड से किसी व्यक्ति का मूल्यांकन करना उचित नही कहा जा सकता। अन्य दुर्बलताओ के साथ यह भी उसकी एक दुर्बलता है। दुर्बलताओं से कोई अछूता नही है। कोई शराब पीता है तो कोई जुआ खेलता है; कोई नाच देखता है तो कोई चोरी और डकैती डालता है, कोई सिगरेट बहुत पीता है तो कोई झूठ बहुत बोलता है; कोई सड़कों और बाजारों में लड़कियो और औरतों को निहारता चलता है तो कोई दूसरों की असमर्थताओ से लाभ उठाकर अपने मनोरथों की सिद्धि किया करता है आदि-आदि, हजारों दुर्बलताये ऐसी है, जिनमें से किसी-न किसी का कोई जरूर शिकार होता है। लेकिन जब तक इन दुर्बलताओं की जड़ में न जाकर उनकी वास्तविकता को तथा उनकी परिस्थितियों और कारणों को न समझकर, तथ्य निकाला जाय तब तक किसी व्यक्ति विशेष के सम्बन्ध में सम्पूर्ण रूप से कुछ कह देना अथवा उसे दोषी ठहरा देना, उचित नही है। इस तरह के तमाम उदाहरण हैं जहाँ एक जुआरी जूआ खेलता हुआ भी अपने परिवार और समाज के प्रति निष्ठावान

और सतर्क रहता है। एक डकैत यदि धनिकों का घर लूटता है तो गरीबो और अनाथों के लिए सर्वस्व न्यौछावर भी कर देता है। अतएव किसी के सम्बन्ध मे किसी प्रकार का निर्णय लेने के पूर्व उस पर...।

तत्क्षण प्रतिभा के मस्तिष्क ने काटा—किन्तु बुरा तो बुरा ही कहलायेगा न। अगर मान भी लिया जाय कि अमरनाथ व्यभिचारी नहीं है किन्तु क्या उसकी यह हरकतें निन्दनीय नही है? अगर यह भी मान लिया जाय कि इसमे सारा दोष नीलिका का है, तो भी उन्हे अपने विवेक से काम लेना ही था। क्या उन्होने यह नही सोचा होगा कि उनके कार्य से मेरे हृदय की क्या दशा हो सकती है? माना मैंने सब तरह की उन्हे छूट दे रखी थी, फिर भी मेरी भावनाओ और अरमानों का उन्हें भी तो ध्यान रखना चाहिये था। क्या उनका कोई फर्ज नही है? जब मैं उनसे दूर रहकर भी उन्ही के लिये बनी रह सकती हूँ तो क्या वह ऐसा नही कर सकते? उनकी परिस्थिति और कारणों को ध्यान मे रखते हुए उनकी कमज़ोरी को गलत और निन्दनीय ही तो कहा जायेगा। उनकी भावनायें पवित्र नही हैं। उनके कहने और करने में अन्तर है। उन्होने निश्चित रूप से मुझे छला है। उनके विचार भ्रष्ट हैं। वह नीलिका की भाँति मुझे भी गर्त मे गिराना चाहते थे। अब इस पर दो राये नही हो सकती।

पुनः खण्डन हुआ—ऐसा नही है। अगर उनकी भावनायें पवित्र न होती तो ऐसे भी बहुत क्षण आये हैं जब वह कमज़ोरी से लाभ उठाकर अपने स्वार्थ की पूर्ति कर सकते थे, किन्तु उन्होंने ऐसा नही किया। उनकी इस खूबी को स्वीकारना पड़ेगा। साथ ही उन्होने सदैव उसकी मुहब्बत की सराहना की है और उसके लिए अपने को सौभाग्यशाली बताया है। उन्होने अपनी कोई बात उससे छिपाई नही है। नीलिका के संग होने वाली एक-एक घटना का सविस्तार जिक्र किया है और अपनी तरफ से कुछ भी करने के पूर्व उससे अनुमति ली है। ऐसी हालत मे उन्हे धूर्त कहना या उनके विचारों के प्रति किसी प्रकार का सन्देह

करना, क्या न्यायसगत होगा ? नही होगा ।

वह रुकी । मगर एक बात है । अगर यह न्यायसंगत नही है तो उनके इतने दिनो से यहाँ न आने का कारण । क्या इससे यह जाहिर नही होता कि उन्होने अब नीलिका को ही प्राथमिकता देना आरम्भ कर दिया है । यह चीज दूसरी है कि यह प्राथमिकता क्षणिक हो, इच्छाओं की तृप्ति पर समाप्त हो जाये, किन्तु इसकी बुनियाद तो घातक है । विवाहोपरान्त भी तो ऐसे अवसर आ सकते हैं । नीलिका के समान अन्य युवतियो से भेंट हो सकती है और उन्हें हासिल करने के चक्कर में वह पुनः उसकी अवहेलना कर सकते हैं । उस समय तो वह और भी स्वतन्त्र होगे और उसकी आपत्ति पर अपनी शक्ति का भी प्रयोग कर सकेंगे । तब या तो वह उनसे लड़कर अलग हो जायगी या सब्र का घूंट पीकर जीवन-भर अन्दर ही अन्दर दहकती रहेगी । जिसे विभिन्न दुकानों के पत्तल भोन लगते हैं उसे घर की थाली अच्छी नहीं दिखती, चाहे उसमें अमृत ही क्यो न घोल दिया गया हो । ऐसे व्यक्ति प्रयत्न करके भी अपने को सुधार नही पाते । उनकी इच्छाये उन्हे पूर्णतः अपने चगुल में जकड़ लेती हैं । वे स्वयं से ही बेबस हो जाते हैं, जिसके कारण वे गुण-सम्पन्न होने पर भी अवगुणो का खान बन जाते हैं ।

प्रतिभा का निर्णय हो गया । उसने अमरनाथ से सम्बन्ध समाप्त कर लेना ही ठीक समझा । वैसे वह अपनी ओर से इस प्रकार का कोई प्रस्ताव नही रखेगी । वह ऐसा कोई कार्य नही करेगी । जिससे अमरनाथ को किसी किस्म की तकलीफ पहुँचे । हाँ, अगर पुनः विवाह का प्रस्ताव हुआ तो वह नम्र शब्दो मे बहाना बताकर इन्कार कर देगी । वह उनके कलाकार को अपमानित नही करेगी ।

३३

उधर नीलिका के रूप-रंग ने अमरनाथ पर जादू-जैसा कर रखा था। वह नीलिकामय हो उठता था। सोना-जागना उसी की याद मे था। उससे अलग होने की तबीयत होती ही नही थी। और तो और वह अब नीलिका पर अपना कुछ अधिकार समझने लगा था। अब आये दिन घूमने का कार्यक्रम बनता रहता था। सिनेमा हर तीसरे-चौथे दिन देखे जाते। किसी-किसी दिन अमरनाथ के आग्रह पर, वह घंटों अपने मधुर कंठ का उसे रसपान कराती रहती। दोपहर की पढाई तो कहने के लिये होती, अधिकतर इसी तरह के प्रोग्रामो मे समय बीतता था। कभी-कभी अवसर मिलने पर एक-दूसरे के बाहुपाशों में कसकर, कुछ क्षणो के लिये अपने को भूल भी जाते थे किन्तु यह भुलैया क्षणिक होती। अमरनाथ इसकी प्रगति मे तीव्रता लाने के प्रयास में था।

नीलिका की लाइकिंग की सीमाये तथा उसकी नीव की गहराई के सम्बन्ध मे निश्चित रूप से तो कुछ कहा नहीं जा सकता परन्तु अमरनाथ का जो रवैया था, और उस रवैये के अन्दर जिस ढंग का नीलिका के ऊपर उसका प्रभुत्व झलक रहा था, उससे यह आसानी से अनुमान लगाया जा सकता था कि उसका अमरनाथ के प्रति आकर्षण एक विशेष आकर्षण था। उस आकर्षण मे वे सारी बातें मौजूद थीं, जो एक प्रेमी-प्रेमिका के बीच हुआ करती है। उसका अमरनाथ के साथ मिलना-जुलना बोलना-हँसना, उठना-बैठना आदि सब कुछ वैसा ही था। कालेज में भी वह अधिकतर उसी के साथ रहती। घंटा आरम्भ हुआ तो भी और समाप्त हुआ तो भी, साथ-साथ निकलना और साथ-साथ घुसना और

अगर कोई खाली हुआ तो किसी पेड़ के नीचे खड़े होकर, खिलखिलाना तथा दिल वस्तगी की बाते करना। छुट्टी के दिनों मे किसी दिन सैर को फ़तहपुर सीकरी निकल जाना तो किसी दिन सिकन्दरा। और वहाँ घटो प्रकृति की गोद मे बैठकर मीटी-मीठी बातें करना। कभी-कभी अन्य प्रसंगों के बीच प्रेम-प्रसग भी छिड जाता और उस पर तर्क-वितर्क होने लगता। अमरनाथ प्रेम को ईश्वरीय बताता और उसके आदर्शो की लम्बी-चौडी व्याख्या करता। नीलिका इसका खडन करती और उन थोथे आदर्शो को बकवास बताती। उसके कथानुसार, "प्रेम भी स्वार्थमय है वह कभी ईश्वरीय नही हो सकता। हाँ, इतना अवश्य है कि वह लाइकिग वाले स्वार्थ से भिन्न और ज्यादा साफ है। उसमे अधिक लगाव और एक-दूसरे से कभी न अलग होने की एक अद्वितीय भावना है। जैसे उस के और पति के बीच है।"

नीलिका के इस कथन से अमरनाथ जल-भुन जाता। उसे बिलकुल अच्छा नही लगता कि नीलिका उसके प्रेम को गौण बताकर, दरे की, उसी के सामने सराहना करे किन्तु वह चुपचाप रह जाता और इस आशा मे चुप रह जाता कि किसी न किसी दिन वह उसके प्रेम को प्रमुखता देने के लिये वाध्य होवेगी ही। यद्यपि उसकी यह कल्पना सिड़ीपन से भरी हुई थी। उसे सोचना चाहिये था कि यदि नीलिका उसके प्रेम को प्रमुखता दे भी दे तो उससे उसका लाभ ? क्या वह नीलिका से विवाह कर सकता था या नीलिका स्वयं इसके लिये तैयार थी ? और अगर यह नही था तो अन्य क्या लाभ हो सकते थे ? परन्तु अमरनाथ को समझाये कौन ! वह नीलिका के रूप के चक्कर मे था—उसके यौवन के फंदे में, सब कुछ भूल गया था। उसके सोचने का दृष्टिकोण बदल गया था और विवेक जाता रहा था। नारद मुनि वाली दशा हो आई थी।

× × ×

सध्या का समय था। पति और पत्नी अर्थात नीलिका और दरे मौन आमने-सामने कुरसियो पर बैठे थे। अमरनाथ कुछ समय पहले जा

चुका था। दरे का चेहरा गंभीर और उदास दिख रहा था। उसकी दृष्टि सामने लान पर थी। नीलिका बार-बार उसकी ओर देखती और फिर सिर उठाकर ऊपर छत को निहारने लगती। दरे की यह गंभीरता इधर पाँच-सात दिनो से थोड़ी अधिक बढ़ गई थी और नीलिका कारणों का बहुत कुछ अनुमान लगाकर भी कुछ पूछने में असमर्थ थी। यद्यपि उसने इधर-उधर से प्रसंग चलाकर, दरे के मूड को बदलने का प्रयास किया था तथा इसी बहाने उसके मुँह से कारण भी जानना चाहा था परन्तु दरे बुत बना बैठा रहा। न तो उसने किसी कारण का संकेत दिया और न ही अपने मूड को बदला। उसने अमरनाथ से भी उखड़ी-उखड़ी बातें की थी और सम्भवतः इसी कारण अमरनाथ जल्दी उठकर चला भी गया था अन्यथा वह कुछ देर और बैठने के इरादे में था।

अनायास दरे खड़ा हुआ। नीलिका ने टोका, "कहाँ जा रहे हो ?"

"क्लब।" वह मोटर में जाकर बैठ गया।

"कब तक लौटोगे ?"

दरे ने मोटर स्टार्ट कर दिया। कोई उत्तर नही दिया।

नीलिका अन्दर आकर पलंग पर लेट रही।

दरे क्लब न जाकर, निर्जन सड़को पर, रात के ग्यारह बजे तक, मोटर घुमाता हुआ अपने विचारों की गुत्थियो को सुलझाता रहा। उस की समस्या के कई पहलू थे और उन पर अलग-अलग सोचकर तथा उन सबका निचोड़ निकालकर, एक अन्तिम निरर्णय लेना था। उसने बड़ा दिमाग खपाया, हर तरफ से सोचा, कई प्रकार के निष्कर्ष निकाले, उनके भले-बुरे परिणामों का भी अनुमान लगाया और अन्त में एक फैसला लेकर लौट पड़ा।

नीलिका प्रतीक्षा में थी। दोनों ने साथ-साथ खाना खाया और कमरे में जाकर लेट रहे। कुछ देर तक कमरे का वातावरण निस्तब्ध बना रहा। दरे ने करवट ली और पूछा, "नीलिका।"

"क्या है ?" उसने भी अपने पलग पर करवट ली।

"तुम्हारे और अमरनाथ के बीच आजकल कैसे रिलेशन हैं ?"

"इसका तुम्हे अन्दाज है और यह भी अन्दाज है कि वह मेरे कैरेक्टर की सबसे बड़ी वीकनेस है, लेकिन उस वीकनेस की भी एक लिमिट है, इसका भी तुम्हे अच्छी तरह अन्दाज़ है।"

"और अपनी उस वीकनेस के लिये तुम मेरी इन्सानियत का नाजायज़ फायदा उठाती हो, इसका भी मुझे अन्दाज़ है। क्या तुम्हारी ये हरकतें जायज़ हैं या काबिले-बर्दाश्त हैं ? ऐसी भी वीकनेस क्या कि मैला खाया जाय। क्या तुमने कभी यह नही सोचा है कि यह मेरे लिये कितने शर्म की चीज है ? मुझे तो चुल्लू भर पानी मे डूब मरना चाहिये। अगर तुम्हे यही सब करना था तो मैरिज क्यो की ? यह तुम्हारा तीसरा वाक़या है। उफ ! तुमने तो···।" वह कहता-कहता रुक गया और उठकर बैठ गया, "मुझे तो गोली मारकर मर जाना चाहिये।" वह सिर पर हाथ रखकर चिन्ता मे डूब गया।

नीलिका उठी और उसकी बगल मे आकर बैठ गई, "तुमसे, उसके शब्दो मे वास्तविकता थी, "मैं कई बार कह चुकी हूँ कि आइदर यू शुड डाइवोर्स मी आर किल मी। आई ऐम एन अनफेथफुल वाइफ एण्ड मेकिंग ए ब्लाट ऑन योर लव एण्ड अफेक्शन वोथ। यू मस्ट किल मी। आई ऐम एन अनफेथफुल वमन।"

दरे चुप रहा।

वह पुन· कहने लगी, "तुम्हारी इसी छूट की वजह से मुझे इतना बढ़ावा मिल गया है। अगर तुमने मेरे फर्स्ट इन्सीडेन्ट पर ही मुझे चेक कर दिया होता और सजा दी होती तो शायद आज मैं तुम्हारे सिर का दर्द न बनती। लेकिन तुमने ऐसा नही किया। हैवान के साथ इन्सानियत बरती और अब जब वह तुम्हारे ऊपर हावी होने की कोशिश करने लगा है तो तुम उससे बचने का रास्ता ढूँढते हो। खैर, अब भी वक़्त है।

तुम मेरी जिन्दगी को मिटा सकते हो और तबाह भी कर सकते हो। मुझे दोनों मे खुशी है। मैं ऐसा चाहती हूँ।"

दरे ने सिर उठाया, "मिनट-दो मिनट नीलिका को घूरता रहा तदुपरान्त बोला, "जिस ज्ञान का प्रदर्शन तुम इस वक्त मेरे सामने कर रही हो, क्या यह ज्ञान उन समयों पर कहीं और चला जाता है? तुम जिस सच्चाई से अपना दिल मुझे दिखला रही हो, ऐसी ही सच्चाई अपने उन लवर्स को भी तो दिखला सकती हो। तब यह नौबत क्यों आती? वह एक सेकेन्ड रुका, "क्या अमरनाथ ने तुम्हे इम्प्रेस किया है?"

"किया है।"

"तुमने कोई एतराज किया?"

"नहीं।"

"क्या उसने तुम्हे किस भी किया है?"

"हाँ।"

"तुमने उस पर भी कोई एतराज नहीं किया?"

"ना।"

"क्यों?"

"वही तो मेरी वीकनेस है। अगर एतराज किया होता तो आज यह हालत क्यों होती? मैं अपनी इसी कमी की वजह से तो अपना सब कुछ देकर भी तुम्हारी नहीं बन सकी हूँ। मेरी जैसी अनलकी औरत दुनिया में और कौन होगी?" नीलिका की आँखें भर आईं, "मैंने अपने साथ-साथ तुम्हारी भी जिन्दगी बरबाद कर दी है। मैं तुम्हारे पैर पड़ती हूँ। मुझे तुम गोली मार दो। मैं माफ करने के लायक नहीं। मैं हमेशा तुम्हारे साथ दगा करती आई हूँ।" वह उसके पैर पर सचमुच गिर पड़ी। आँसू बह चले।

क्षण-दो-क्षण सोचते रहने के उपरान्त दरे ने उसे उठाया, "जाओ सोओ।" उसने कहा और स्वयं भी लेटता हुआ करवट ले ली।

वह रात-भर सो नहीं सका था।

दूसरे दिन नीलिका कालेज में अमरनाथ से मिली, बोली और नित्य की भाँति उसे कार मे विठलाकर उसके वंगले तक आई। जब अमरनाथ उतरने को हुआ तो उसने टोका, "दो सैकैन्ड के लिए बैठ जाइये। एक वात कहनी है।"

अमरनाथ उसे देखता हुआ बैठ गया।

"कल रात मे मेरे और दरे साहव के वीच वहुत वाते हुई। मैंने उनसे सारी वाते साफ-साफ वतला दी है।"

"क्या?" अमरनाथ की आँखे फैल गई।

"मैंने कोई चीज उनसे छिपाई नही है। उनके जैसा इन्सान मिलना वहुत मुश्किल है मिस्टर अमरनाथ, लेकिन में इतनी मीन और अनफेथफुल निकली कि अपनी जिन्दगी के साथ-साथ उनकी जिन्दगी को भी रियून कर दिया। उनके जैसा लव और अफेक्शन क्या मुझे और किसी से मिल सकता है। मगर···खैर जव तकदीर ही वुरी लेकर आई हूँ तो किसी का क्या दोष? आज से मैंने कम्वाइड स्टडी वन्द कर दी है। अव आप आने की तकलीफ न कीजियेगा।"

अमरनाथ चकित था। नीलिका की वातें सुनकर भी वह उन पर विश्वास नही कर पा रहा था। उसने पूछा, "आखिर वात क्या हुई यह तो वताइये?"

"छोडिये। यह मेरे और दरे साहव के वीच की चीज है। आप सुन-कर क्या करेगे? एक और मौका मुझे मिला है अगर सुधर गई तो सुधर गई वरना कुत्ते की मौत तो मरूँगी ही। दरे साहव के दिल के साथ दगा करके कोई भी खुश रह सकेगा, मुझे उम्मीद नही।"

अमरनाथ की गर्दन झुक गई। उसके हृदय मे मथानी चलने लगी थी। ऐसा भी हो सकता है, उसने स्वप्न मे भी नही सोचा था। नीलिका इतनी वेमरौअत है। कहाँ सर्वस्व समर्पित करने को तैयार थी और कहाँ इस तरह की वाते? उसके मन ने पुनः वेहयाई दिखलाई, "लेकिन मेरी दुनियाँ तो आपने वरवाद ही कर दी नीलिका जी।"

"आपको भ्रम है मिस्टर अमरनाथ । एक मैरिड औरत अपने हसबंड को छोडकर और किसी की दुनिया को न तो आबाद कर सकती है और न बरबाद । आपने मेरी कमजोरी का गलत मतलब लगाया है । आपको ऐसा नही सोचना चाहिये । मैने अपने हसबड के अलावा न तो किसी से लव किया है और न कभी कर सकूंगी । आपको अपनी ग़लतफहमी का शिकार नही होना चाहिये ।"

अमरनाथ ने दरवाजा खोला और बिना कुछ बोले उतर पड़ा, "मैं अपने भ्रम के लिये लज्जित हूँ ।" वह मुड़ पड़ा ।

नीलिका ने रोका, "देखिये, कालेज में अगर आप मुझसे बातचीत करना चाहे तो कर सकते है । इसके लिये कोई रोक नही ।"

"धन्यवाद ।" अमरनाथ तेजी से बढ़ गया ।

नीलिका ने स्टार्टर दबा दिया ।

३४

दो दिन बीत चुके थे किन्तु अमरनाथ का सोचना अभी समाप्त नही हुआ था । जिन्दगी में एक नया तजरबा हुआ था । इस घटना के पूर्व उसे एक प्रकार विश्वास-सा था कि ससार के लोगो को समझने में जितना सुलझा हुआ ज्ञान उसे प्राप्त है दूसरो को नहीं । वह किसी को देखकर उसके सम्बन्ध में बहुत-कुछ बातें बता सकता था । उसके स्वभाव को, उसके विचारो को और उसके चरित्र को भली-भाँति समझ सकता था । उसने बड़ी पैनी दृष्टि से संसार को देखा था और उसकी नाड़ी समझने मे सदैव प्रयत्नशील रहा था; परन्तु नीलिका के अनोखे चरित्र ने उसकी वास्तविकता का परदा-फाश कर दिया था । वह आकाश से

धरातल पर आ गया था। उसकी आँखो पर बँधी पट्टी हट गई थी और वह अपने भ्रम को समझ गया था। फिर भी सोचने वाली शृंखला टूटती नही थी। नीलिका, उसके मस्तिष्क से जाती नही थी। उसे अब भी आश्चर्य था कि नीलिका ने यह सब क्यो और किस प्रयोजनवश किया था? अपने को इस सीमा तक समर्पण करने मे उसका क्या अभिप्राय था और अगर कुछ अभिप्राय था तो दरे से सब बताकर, एकदम ब्रेक लगा देने की क्या आवश्यकता थी? दरे से वह झूठ बोल सकती थी, उसे चकमा दे सकती थी और तिरया चरित्तर के भुलावे मे उसे बरसों रख सकती थी। परन्तु यह सब उसने क्यो नही किया? दरे से सारा कच्चा-चिट्ठा क्यों कह डाला?

अमरनाथ का दिमाग चकरा उठा था वह जितना अधिक सोचता था, नीलिका उतना ही अधिक उसे उलझाती जा रही थी। जिस पक्ष और जिस रूप से वह उसे समझने की कोशिश करता, वही गुत्थियो का गट्ठर बनकर, उसे अन्त में हाथ-मे-हाथ रखकर उसके लिए विवश कर देता था। जहाँ नीलिका एक ओर पढ़ी-लिखी, बड़े परिवार और मन-पसन्द योग्य पुरुष की स्त्री थी, वही वह दूसरी ओर एक अजनबी व्यक्ति को अनुचित बढावा देकर तथा उसकी भुजाओ में आबद्ध होकर भी, उसे दूध की मक्खी के समान निकाल फेंकने मे सिद्धहस्त थी। फलतः अमरनाथ कोई निष्कर्ष निकाले तो क्या निकाले? नीलिका यदि सदाचारिणी नही तो व्यभिचारिणी भी नही थी, वफादार नही तो बिवफा भी नही थी और अच्छी नही तो बुरी भी नही थी।

अकस्मात् अमरनाथ के विचारो मे एक नया प्रश्न उठा—अगर नीलिका को उचित अथवा अनुचित दोनो मे कोई एक मानकर कुछ निर्णय निकाला जाय तो उसकी स्थिति क्या होगी? अगर उसका मार्ग अनुचित रहा है तो क्या वह स्वयं को उचित कह सकता है? कदापि नही कह सकता? क्या इन्सानियत का यही तकाजा था कि अन्धे को गड्ढे से बचाने के बदले उसे धक्का दे दिया जाय? मानवता के नाते कुछ उसके

भी तो कर्तव्य थे ? फिर वह एक साहित्यकार था। उसकी जिम्मेदारियाँ अधिक थी। उसका काम था भूले-भटके को सत्य और उपयोगी मार्गों का दिग्दर्शन कराना। उसे नीलिका को पथभ्रष्ट होने से बचाना चाहिए था और यदि किसी कारणवश वह ऐसा करने मे असमर्थ था तो स्वयं के गिरने का मतलब था जानबूझ कर गिरना—अपने स्वार्थपूर्ति हेतु गिरना। उसने एक विवाहिता स्त्री की किसी कमजोरी से अनुचित लाभ उठाने का प्रयास किया था। उसने समाज में भ्रष्ट वातावरण को प्रोत्साहन दिया था। उसने वह कार्य किया था जिसे भारतीय समाज कभी क्षमा नही करता। और अगर नीलिका को उचित भी मान लिया जाय तो भी उसकी हरकतें असामाजिक और घोर निन्दनीय थी। वह प्रत्येक रूप से दोषी था। उसके पास कोई ऐसा तर्क नही था जिसके बल पर वह अपने को निर्दोष सिद्ध कर सकता। सेक्स की कमजोरी की ओट में भी वह अपने को नही बचा सकता था। वह परिवारो मे बिठलाने योग्य नहीं था। उस पर किसी प्रकार का विश्वास नही किया जा सकता था। वह समाज रूपी जल में जहर था—बहुत जहरीला जहर।

अमरनाथ निष्कर्ष पर पहुँच गया। कई दिनो की उलझन समाप्त हुई किन्तु हृदय ग्लानि से भर उठा था। कोई पीड़ा उभर आई थी और स्वय को स्वय धिक्कारने लगा था। वह इस सीमा तक कामान्ध बन सकता था—कभी सोचा नही था। वह किसी की इज्जत लूटने के लिए इतने प्रकार के चकमे दे सकता था। धिक्कार था उसके जीवन और उसके साहित्यकार को। ऐसा नीच कर्म ! उसे चुल्लूभर पानी मे डूब मरना था। क्या वह इसी चरित्र बल पर स्वस्थ साहित्य की सर्जना कर सकेगा ? स्वस्थ साहित्य के लिए स्वस्थ चरित्र—पवित्र चरित्र की आवश्यकता होती हैं और तभी जीवन की सार्थकता, अमरता तथा समाज और राष्ट्र का कल्याण हो सकता था। अमरनाथ की अन्तरात्मा व्यथा से भर आई और अकस्मात् प्रतिभा का स्मरण हो आया। वह चौंक-सा गया। लगभग डेढ़ महीने बाद प्रतिभा की एक विशेष रूप मे सुध आई थी—

उसके सम्बन्ध मे कुछ सोचने का मन हुआ था। यह वही प्रतिभा थी जिसके प्रेम को वह आदर्श प्रेम कहा करता था और अपने को सौभाग्य-शाली बताया करता था। यह वही प्रतिभा थी जिसकी हॉ-मे-हॉं और ना-मे-ना मिलाकर भी परमानन्द का अनुभव करता था। वह उसके समीप रहकर भी उससे दूर रहता था। प्यार की उज्ज्वलता पर कालिख न लगने देने के विचार से।

अमरनाथ की आँखो के सामने एक नया नक्शा खिंच आया। एक नई चिन्ता उत्पन्न हो उठी। ऐसी चिन्ता जिसकी बेचैनी शरीर के रोम-रोम मे गेहुअन साँप के काटे हुए विष के समान एकदम फैल गई। वह सोचने लगा—उसने प्रतिभा के साथ कितना बड़ा विश्वासघात किया है। उसके समान स्वार्थी और लम्पट शायद ही कोई दूसरा व्यक्ति हो। उसने प्रतिभा के पवित्र प्रेम का जो मजाक उडाया है वह निस्सन्देह शाप बन-कर उसकी जिन्दगी को बरबाद कर देगा। माना, प्रतिभा के मन में किसी प्रकार की ईर्ष्याद्वेष की भावना नही होगी किन्तु उसमे जलन तो होगी ही और उस जलन से बच निकलना किसी भी दशा मे सम्भव नही हो सकेगा। कभी-न-कभी उसका शिकार होना ही पड़ेगा। वह कितना बडा मूर्ख और अभागा था कि मुट्ठी मे आये हुए हीरे को उसने शीशे का टुकडा समझकर फेक दिया था। उसकी कामवासना ने उसे कही का नही रखा। उसका कलंक कभी नही धुल सकेगा।

लज्जित और स्वयं से घृणित अमरनाथ की भावना बदली—क्या ऐसा नही हो सकता कि वह प्रतिभा से अपने किये की माफी माँग ले। वह जितना सोच रहा है, उतना प्रतिभा उससे नाराज नही होगी। वह ऐसी लड़की नही है। उसकी समझ बहुत अच्छी है। वह असन्तुष्ट होकर भी सन्तुष्ट हो सकती है। उसका हृदय कभी उतना कठोर नही बन सकता जितना उसने सोचा है। प्रेम मे उदारता अधिक होती है। वह स्वयं को कष्ट देकर भी दूसरो की प्रसन्नता मे अपनी प्रसन्नता के सुख का अनुभव करता है। प्रतिभा निश्चित रूप से उसके विगत को विसार-

कर उसे अपने हृदय मे पहले वाला स्थान दे देगी। उससे क्षमा माँगने मे उसका बिगड़ा खेल बन सकता है।

और अगर नही बना तो? प्रतिभा उन मूर्ख लडकियों में नही है जो उसके जैसे कामुकों को क्षमादान देकर अपना भविष्य बिगाड़ लेगी। अब वह किसी प्रकार भी उस पर विश्वास नहीं करेगी। उसके विचार आदर्श विचार हैं और उसने उन्हीं विचारो के अनुरूप अपने जीवन का मार्ग बनाया है। वह किसी भी दशा में अब उसे उस रूप में ग्रहण नही कर सकेगी। यह चीज़ दूसरी है कि वह शिष्टता के नाते, व्यवहार में अन्तर न आने दे परन्तु जहाँ तक प्रेम का सम्बन्ध है अब सम्भव नही हो सकेगा। वह अब विवाह नही करेगी। कदापि नही करेगी। आशा, निराशा मे बदल गई। मन बैठ गया। सोचने का क्रम टूट गया। दबी हुई हृदय की व्यथा पुनः उभर आई।

"आरत के चित्त रहे न चेतू फिरि-फिरि देखें आपन हेतु" वाली दशा थी अमरनाथ की। वह पुनः अपने मतलब पर आया। उसने नाना प्रकार के उलटे-सीधे तर्कों से अपने मन को समझाकर उसे प्रतिभा के घर चलने को राज़ी कर लिया। परन्तु दुर्भाग्य को क्या कहा जाय? उसका मनोरथ पूरा न हो सका। उसके पैर चलने को तैयार नही थे। उसने कई दिन प्रयत्न भी किये किन्तु कुछ दूर जाकर उसे लौट आना पड़ा। एक दिन तो वह प्रतिभा के बगले के समीप तक पहुँच गया था लेकिन उसके आगे जैसे उसके पैरों मे किसी ने जंजीर डाल दी हो। वह भरसक कोशिश करके भी पैरों को आगे न बढ़ा सका। उसे लौटना पड़ा। पुनः उसके कई दिन इसी उधेड़-बुन में बीत गये। अन्त में उसने एक दिन विशेष दृढ़ता दिखलाई और मज़बूत पैरों के साथ बीमानगर को चल पड़ा। धीरे-धीरे बीमानगर समीप आता गया। फिर वह मोड़ आया, जहाँ से मुड़ना था। पैर ठिठके। अन्तर्द्वन्द्व प्रबल हुआ। अमरनाथ घबड़ाया किन्तु चलता रहा। प्रतिभा का बँगला आ गया और तब उसका फाटक। वह खड़ा हो गया। हाथों ने फाटक खोलने से जवाब दे

दिया। उसने यहाँ भी जबरदस्ती की। वह फाटक खोलता अन्दर घुस गया।

जाड़े की समाप्ति की दोपहरिया थी। बाहर के दरवाजे बन्द थे। अमरनाथ बरामदे मे आकर खड़ा हो गया। अब किवाड खटखटाने का प्रश्न था। वह क्षण-दो-क्षण सोचता रहा—खटखटाये या लौट चले। परन्तु अब क्या लौटना था? नीलिका की भाँति प्रतिभा का भी फैसला कर लेना ही श्रेयस्कर था। उसने किवाड़ों को थपथपा दिया। अन्दर से आवाज़ आई, "कौन?" यह प्रतिभा की आवाज़ थी।

अमरनाथ ने दोबारा थपथपाया। वह बोल नही सका था।

दरवाज़ा खुला। नौकर तनिक चौंका, "नमस्ते।" उसके मुंह से निकला और उलटे पाँव अन्दर लौट गया।

अमरनाथ दरवाज़े पर खड़ा रहा।

नौकर की सूचना को सुनी-अनसुनी करती हुई प्रतिभा ने ड्राइंग-रूम खोलकर बिठलाने को कह दिया।

नौकर ने वैसा ही किया।

अमरनाथ ने बैठते हुए पूछा, 'प्रतिभाजी हैं?"

"जी हाँ, आ रही हैं।" वह चला गया।

अमरनाथ सोचना चाह कर भी कुछ सोच न सका। यदि उसने प्रतिभा की वेदनाओं को उभारा है तो प्रतिभा अगर उसको उभारती है तो क्या बुरा करती है? मौके-मौके की चीज़ है। इसमें बुरा मानने की क्या बात? वह माथे पर हाथ फेरता सामने टँगी तसवीर को निहारने लगा।

दरवाज़े का परदा हिला और प्रतिभा ने कमरे मे प्रवेश किया, "नमस्ते।" उसने शुष्क स्वर मे कहा।

"नमस्ते।" अमरनाथ ने हाथ जोड़ते हुए उत्तर दिया।

प्रतिभा बैठ गई, "आज बहुत दिनों बाद आपके दर्शन हुए हैं। तबीयत तो ठीक है?"

"हाँ।" कहकर अमरनाथ चुप हो रहा।

प्रतिभा भी चुप रही। वह सामने ऊपर की दीवार पर देखने लगी थी। वह अमरनाथ से बोलना नही चाह रही थी परन्तु मजबूरी मे ऐसा करना पड रहा था।

पाँच-सात मिनट चुप रहने के बाद अमरनाथ बोला—"परसों मैं कानपुर जा रहा। आपसे अपनी त्रुटियो के लिए क्षमा माँगने आया था। आशा है आप क्षमा कर देगी।" अमरनाथ को जो कहना था उसे वह न कह सका प्रतिभा के आने, बैठने और बोलने के ढंग को देखकर।

"क्षमा क्या करूँ? आपने कोई गलती तो की नही है?"

"आपके प्रेम के साथ जो विश्वासघात···।"

"ऊहूँ।" प्रतिभा ने बीच मे टोक दिया, "छोड़िये उन बातो को। जो बीत गया। वह एक प्रकार से मेरी ही गलती थी।"

अमरनाथ पुन चुप हो रहा। सेकेण्ड-दो-सेकेण्ड कुछ सोचता रहा। तदुपरान्त अचानक खड़ा हो गया। उसने हाथ जोड़े, "अब मैं चलूंगा।" उसकी आँखें प्रतिभा की आँखो से मिल गई।

प्रतिभा धक् से रह गई। अमरनाथ के नेत्र सजल थे और चेहरा फक पड़ा हुआ था। उसके मुंह से निकल पडा, "बैठिये। भाभी से भी मिल लीजिये। आपको कई बार पूछ चुकी हैं। बुलवाया है।"

अमरनाथ खड़ा रहा। उसकी गर्दन सीधी हो गई थी। जैसे वह अपने छलछलाये आँसुओं को ढुलकने से रोकने के प्रयास मे था।

"बैठिये न।" वह उठी और "अभी आई" कहती हुई अन्दर चली गई। ऐसा उसने जानबूझ कर किया था जिससे अमरनाथ अपने आँसुओं को पोंछ सके।

अमरनाथ बैठ गया और जल्दी से रूमाल निकाल कर आँखें पोछने लगा।

प्रतिभा आई। अमरनाथ सिर लटकाये चुप बैठा रहा। प्रतिभा ने वार्ता आरम्भ की। अमरनाथ ने सूक्ष्म उत्तर दिया। पुनः उत्तर मिला।

बातचीत बढ़ी, कुछ खुली और क्षण-प्रति-क्षण व्यापक होती गई। अमर-नाथ की निराशा में आशा की किरण झलकी। वह अपनी त्रुटियों का खुलकर वर्णन करने लगा और वर्णन भी ऐसा था जिसके प्रत्येक वाक्य से क्षमा-याचना का भाव झलक रहा था। प्रतिभा सब सुनती और समझती रही। अमरनाथ कहता रहा—बहुत देर तक कहता रहा। नौकर चाय लेकर आया और रख कर चला गया। प्रतिभा ने चाय बनाई और एक प्याली उसकी तरफ खिसका दी। पुनः अमरनाथ अपना दुःख रोने लगा। प्रतिभा ने रोका और आग की भाँति बरस पडी। बडे फटकार बताये और जो नही कहना चाहिये था उसे भी कह डाला। इतने दिनो का संचित जो था। तब तक श्रीमती शरद का आगम हुआ। डाँट रुक गई—अधूरी रह गई…।

लगभग एक सप्ताह तक प्रतिभा की डाँट चलती रही किन्तु अमर-नाथ को अब कोई चिन्ता नही थी। उसे मनाने का अवसर मिल गया था, बस इतना ही पर्याप्त था। प्रतिभा, पुन. उसकी प्रतिभा हो जायेगी इसमे अब उसे लेशमात्र भी सन्देह नही रह गया था।

○ ○ ○